कि मरवा (पहाड़ी) पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ की आपस में मुलाक़ात हुई। ये दोनों कुछ देर आपस में बात करते रहे। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ चले गए और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ वहां रोते हुए ठहर गए। एक आदमी ने उनसे पूछा : अबू अ़ब्दुर्रहमान! आप क्यों रो रहे हैं? हज़रत इब्ने उमर ﷺ ने फ़रमाया : ये साहब, यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ अभी बताकर गए हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा, अल्लाह तआ़ला उसे चेहरे के बल आग में डाल देंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

بسم الله الرحمن الرحيم

ज़िक्र

अल्लाह तआला के अवामिर में अल्लाह तआला के ध्यान के साथ मशगूल होना यानी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेरे सामने हैं और वह मुझे देख रहे हैं।

क़ुरआन करीम के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۔ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۭ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ﴾ [يونس: ٥٧، ٥٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : लोगो! तुम्हारे पास, तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी किताब आई है, जो सरासर नसीहत और दिलों की बीमारी के लिए शिफ़ा है और (अच्छे काम करने वालों के लिए इस क़ुरआन में) रहनुमाई और (अ़मल करने वाले) मोमिनीन के लिए रहमत का ज़रिया है। आप कह दीजिए कि लोगों को अल्लाह तआला के इस फ़ज़्ल व मेहरबानी यानी क़ुरआन के उतरने पर ख़ुश होना चाहिए। यह क़ुरआन इस दुनिया से बदरजहा बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं। (यूनुस : 57-58)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ﴾ [النحل:١٠٢]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि बिलाशुबहा इस क़ुरआन को रूहुल क़ुदुस यानी जिबरील आपके रब की तरफ़ से लाए हैं ताकि यह क़ुरआन, ईमान वालों के ईमान को मज़बूत करे, और यह क़ुरआन, फ़रमांबरदारों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (नह्ल : 1-2)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الاسراء:٨٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : यह क़ुरआन जो हम नाज़िल फ़रमा रहे हैं, यह मुसलमानों के लिए शिफ़ा और रहमत है। (बनी इस्राईल : 82)

وَقَالَ تَعَالٰى ﴿اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ﴾ [العنكبوت:٤٥]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : जो किताब आप पर उतारी गई है, उसकी तिलावत किया कीजिए। (अंकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ﴾ [فاطر:٢٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो लोग क़ुरआन करीम की तिलावत करते रहते हैं और नमाज़ की पाबंदी करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च किया करते हैं, वे यक़ीनन ऐसी तिजारत की उम्मीद लगाए हुए हैं, जिसको कभी नुक़सान पहुंचने वाला नहीं उनको उनके आमाल का अज्र व सवाब पूरा-पूरा दिया जाएगा।(फ़ातिर : 29)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ﴾ [الواقعة:٧٥-٨١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : मैं सितारों के गुरूब होने और छुपने की क़सम

खाता हूं और अगर तुम समझो तो यह क़सम बहुत बड़ी क़सम है। क़सम इसपर खाता हूं कि यह कुरआन बड़ी शान वाला है, जो लौहे महफ़ूज़ में दर्ज है। इस लौहे महफ़ूज़ को पाक फ़रिश्तों के अलावा और कोई हाथ नहीं लगा सकता। यह कुरआन रब्बुल आलमीन की जानिब से भेजा गया है तो क्या तुम इस कलाम को सरसरी बात समझते हो। (वाक़िआ : 75-81)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ﴾ [الحشر:٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (क़ुरआन करीम अपनी अज़्मत की वजह से ऐसी शान रखता है कि) अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते (और पहाड़ में शऊर व समझ होती) तो आप उस पहाड़ को देखते कि वह अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता। (हश्र : 21)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿58﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَقُوْلُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى: مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْآنُ عَنْ ذِكْرِيْ، وَمَسْاَلَتِيْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِي السَّائِلِيْنَ، وَفَضْلُ كَلَامِ اللّٰهِ عَلٰى سَائِرِ الْكَلَامِ كَفَضْلِ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضائل القرآن، رقم: ٢٩٢٦

58. हज़रत अबू सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने यह हदीसे क़ुदसी ब्यान फ़रमाई : अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान है : जिस शख़्स को क़ुरआन शरीफ़ की मशग़ूली की वजह से ज़िक्र करने और दुआएं मांगने की फ़ुरसत नहीं मिलती, मैं उसको दुआएं मांगने वालों से ज़्यादा अ़ता करता हूं और अल्लाह तआ़ला के कलाम को सारे कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत है, जैसे ख़ुद अल्लाह तआ़ला को तमाम मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत है। (तिर्मिज़ी)

﴿59﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ الْغِفَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّكُمْ لَا تَرْجِعُوْنَ

اِلَى اللّٰهِ بِشَيْءٍ اَفْضَلَ مِمَّا خَرَجَ مِنْهُ يَعْنِيْ الْقُرْآنَ۔

رواہ الحاکم وقال: ھٰذا حدیث صحیح الاسناد لم یخرجاہ ووافقہ الذھبی ۱/۵۵۵

59. हज़रत अबूज़र गिफ़ारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अल्लाह तआला का क़ुर्ब उस चीज से बढ़कर किसी और चीज़ से हासिल नहीं कर सकते जो ख़ुद अल्लाह तआला से निकली है, यानी क़ुरआन करीम। (मुस्तदरक हाकि

﴿60﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْقُرْآنُ مُشَفَّعٌ وَمَاحِلٌ مُصَدَّقٌ مَنْ جَعَلَهُ اَمَامَهُ قَادَهُ اِلَى الْجَنَّةِ وَمَنْ جَعَلَهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ سَاقَهُ اِلَى النَّارِ۔

رواہ ابن حبّان، قال المحقق اسنادہ جید ۱/۳۳۱

60. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम ऐसी शफ़ाअ़त करने वाला है जिसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल की गई और ऐसा झगड़ा करने वाला है कि उसका झगड़ा तस्लीम कर लिया गया, जो शख़्स इसको अपने आगे रखे, यानी उसपर अ़मल करे उसको यह जन्नत में पहुंचा देता है और जो उसको पीठ पीछे डाल दे, यानी उस पर अ़मल न करे उसको यह जहन्नम में गिरा देता है। (इब्ने हब्बा

फ़ायदा : क़ुरआन करीम ऐसा झगड़ा करने वाला है कि उसका झगड़ा तस्लीम कर लिया गया, इसका मतलब यह है कि पढ़ने और उसपर अ़मल करने वा के लिए दर्जों के बढ़ाने में अलाह तआ़ला के दरबार में झगड़ता है और उसके हक़ में लापरवाही करने वालों से मुतालबा करता है कि मेरा ह क्यों नहीं अदा किया।

﴿61﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يَقُوْلُ الصِّيَامُ: اَيْ رَبِّ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهْوَةَ فَشَفِّعْنِيْ فِيْهِ، وَيَقُوْلُ الْقُرْآنُ: مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِيْ فِيْهِ، قَالَ: فَيُشَفَّعَانِ لَهُ۔

رواہ احمد والطبرانی فی الکبیر ورجال الطبرانی رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۳/۴۱۹

61. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : रोज़ा और क़ुरआन करीम दोनों क़ियामत के दिन बन्दे के लिए शफ़ाअ़त करेंगे। रोज़ा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैंने इसको खाने और नफ़्सानी

करने से रोके रखा, मेरी शफ़ाअत इसके बारे में क़ुबूल फ़रमाइए। क़ुरआन करीम कहेगा : मैंने इसे रात को सोने से रोका (कि यह रात को नफ़्लों में मेरी तिलावत करता था) मेरी शफ़ाअत उसके बारे में क़ुबूल फ़रमाइए। चुनांचे दोनों इसके लिए सिफ़ारिश करेंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿62﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ اَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ. رواه مسلم، باب فضل من يقوم بالقرآن.....رقم:١٨٩٧

62. हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इस क़ुरआन शरीफ़ की वजह से बहुत-से लोगों के मर्तबे को बुलन्द फ़रमाते हैं और बहुत-सों के मर्तबे को घटाते हैं, यानी जो लोग इस पर अमल करते हैं अल्लाह तआला उनको दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त अता फ़रमाते हैं और जो लोग इस पर अमल नहीं करते, अल्लाह तआला उनको ज़लील करते हैं। (मुस्लिम)

﴿63﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ (لِاَبِيْ ذَرٍّ): عَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ، وَذِكْرِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ فَاِنَّهٗ ذِكْرٌ لَكَ فِي السَّمَاءِ، وَنُوْرٌ لَكَ فِي الْاَرْضِ.

(وهو جزء من الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان ٢٤٢/٤

63. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम की तिलावत और अल्लाह तआला के ज़िक्र का एहतिमाम किया करो, इस अमल से आसमानों में तुम्हारा ज़िक्र होगा और यह अमल ज़मीन में तुम्हारे लिए हिदायत का नूर होगा। (बैहक़ी)

﴿64﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا حَسَدَ اِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ، رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْقُرْآنَ، فَهُوَ يَقُوْمُ بِهٖ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالًا، فَهُوَ يُنْفِقُهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ. رواه مسلم، باب فضل من يقوم بالقرآن.....رقم:١٨٩٤

64. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो ही शख़्सों पर रश्क करना चाहिए। एक वह, जिसको अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ अता किया हो और वह दिन रात उसकी तिलावत में मश्गूल रहता हो। दूसरा वह, जिसको अल्लाह तआला ने माल अता फ़रमाया हो और वह दिन रात उसको ख़र्च करता हो। (मुस्लिम)

﴾65﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ یَقْرَأُ الْقُرْآنَ مَثَلُ الْاُتْرُجَّۃِ، رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَ طَعْمُھَا طَیِّبٌ، وَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ لَا یَقْرَأُ الْقُرْآنَ مَثَلُ التَّمْرَۃِ، لَا رِیْحَ لَھَا وَطَعْمُھَا حُلْوٌ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِی یَقْرَأُ الْقُرْآنَ مَثَلُ الرَّیْحَانَۃِ، رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَطَعْمُھَا مُرٌّ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِی لَایَقْرَأُ الْقُرْآنَ کَمَثَلِ الْحَنْظَلَۃِ، لَیْسَ لَھَا رِیْحٌ وَ طَعْمُھَا مُرٌّ. رواہ مسلم، باب فضیلۃ حافظ القرآن،......رقم: ١٨٦٠

65. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मोमिन क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है, उसकी मिसाल चकोतरे की तरह है, उसकी ख़ुश्बू भी अच्छी होती है और मज़ा भी लज़ीज़ और जो मोमिन क़ुरआन करीम नहीं पढ़ता, उसकी मिसाल खजूर की तरह है जिसकी ख़ुश्बू तो नहीं, लेकिन ज़ायक़ा मीठा है और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है उसकी मिसाल ख़ुश्बूदार फूल की सी है कि ख़ुश्बू अच्छी और मज़ा कड़वा और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ता उसकी मिसाल इंदराइन की तरह है कि ख़ुश्बू कुछ नहीं और मज़ा कड़वा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इंद्राइन ख़रबूज़े की शक्ल का एक फल है, जो देखने में ख़ूबसूरत और ज़ायक़े में बहुत तल्ख़ होता है।

﴾66﴿ عَنْ عَبْدِاللّٰہِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ یَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ کِتَابِ اللّٰہِ فَلَہُ بِہٖ حَسَنَۃٌ، وَالْحَسَنَۃُ بِعَشْرِ اَمْثَالِھَا لَا اَقُوْلُ الٓمّٓ حَرْفٌ وَلٰکِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَ مِیْمٌ حَرْفٌ.

رواہ الترمذی، و قال: ھذا حدیث حسن صحیح غریب، باب ماجاء فی من قرأ حرفا......رقم ٢٩١٠

66. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन करीम का एक हर्फ़ पढ़े, उसके लिए एक हर्फ़ का बदला एक नेकी है और एक नेकी का अज्र दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि सारा अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है, बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़, लाम एक हर्फ़, और मीम एक हर्फ़ है, यानी ये तीन हर्फ़ हुए इस पर तीस नेकियां मिलेंगी। (तिर्मिज़ी)

﴾67﴿ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ، فَاقْرَءُوْہُ فَاِنَّ مَثَلَ الْقُرْآنِ لِمَنْ تَعَلَّمَہُ فَقَرَأَہُ وَقَامَ بِہٖ کَمَثَلِ جِرَابٍ مَحْشُوٍّ مِسْکًا یَفُوْحُ

رِيْحُهُ فِيْ كُلِّ مَكَانٍ، وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهُ فَيَرْقُدُ وَهُوَ فِيْ جَوْفِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ اُوْكِيَ عَلٰى مِسْكٍ.

رواه الترمذی و قال : هذا حديث حسن، باب ماجاء فی سورة البقرة وآية الكرسی، رقم: ٢٨٧٦

67. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन शरीफ़ सीखो, फिर उसको पढ़ो, इसलिए कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ सीखता है और पढ़ता है और तहज्जुद में उसको पढ़ता रहता है, उसकी मिसाल उस खुली थैली की-सी है जो मुश्क से भरी हुई हो कि उसकी ख़ुश्बू तमाम मकान में फैलती है और जिस शख़्स ने क़ुरआन करीम सीखा, फिर बावजूद इसके कि क़ुरआन करीम उसके सीने में है, वह सो जाता है, यानी उसको तहज्जुद में नहीं पढ़ता उसकी मिसाल उस मुश्क की थैली की तरह है जिसका मुंह बन्द कर दिया गया हो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम की मिसाल मुश्क की है और हाफ़िज़ का सीना उस थैली की तरह है जिसमें मुश्क हो। लिहाज़ा क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाला हाफ़िज़ उस मुश्क की थैली की तरह है, जिसका मुंह खुला हो और तिलावत न करने वाला मुश्क की बन्द थैली की तरह है।

﴿68﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْأَلِ اللهَ بِهِ فَإِنَّهُ سَيَجِيْءُ اَقْوَامٌ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ يَسْأَلُوْنَ بِهِ النَّاسَ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن، باب من قرأ القرآن فليسأل الله به، رقم: ٢٩١٧

68. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े, उसे क़ुरआन के ज़रिए अल्लाह तआला से ही सवाल करना चाहिए। अंक़रीब ऐसे लोग आएंगे जो क़ुरआन मजीद पढ़ेंगे और उसके ज़रिए लोगों से सवाल करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿69﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ اُسَيْدَ بْنَ حُضَيْرٍ، بَيْنَمَا هُوَ، لَيْلَةً، يَقْرَأُ فِيْ مِرْبَدِهِ، اِذْ جَالَتْ فَرَسُهُ، فَقَرَأَ، ثُمَّ جَالَتْ اُخْرٰى، فَقَرَأَ، ثُمَّ جَالَتْ اَيْضًا، قَالَ اُسَيْدٌ: فَخَشِيْتُ اَنْ تَطَأَ يَحْيٰى، فَقُمْتُ اِلَيْهَا، فَاِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فَوْقَ رَاْسِيْ، فِيْهَا اَمْثَالُ السُّرُجِ، عَرَجَتْ فِي الْجَوِّ حَتّٰى مَا اَرَاهَا، قَالَ: فَغَدَوْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ بَيْنَمَا اَنَا الْبَارِحَةَ مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ اَقْرَأُ فِيْ مِرْبَدِيْ، اِذْ جَالَتْ فَرَسِيْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ

ﷺ: اِقْرَأْ ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَقَرَأْتُ، ثُمَّ جَالَتْ أَيْضًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِقْرَأْ ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَقَرَأْتُ، ثُمَّ جَالَتْ أَيْضًا. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِقْرَأْ ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَانْصَرَفْتُ، وَكَانَ يَحْيٰى قَرِيْبًا مِنْهَا، خَشِيْتُ أَنْ تَطَاَهُ، فَرَأَيْتُ مِثْلَ الظُّلَّةِ، فِيْهَا أَمْثَالُ السُّرُجِ، عَرَجَتْ فِي الْجَوِّ حَتّٰى مَا أَرَاهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تِلْكَ الْمَلَائِكَةُ كَانَتْ تَسْتَمِعُ لَكَ، وَلَوْ قَرَأْتَ لَأَصْبَحَتْ يَرَاهَا النَّاسُ، مَا تَسْتَتِرُ مِنْهُمْ.

رواه مسلم، باب نزول السكينة لقراءة القرآن، رقم: ١٨٥٩

69. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ﷺ अपने बाड़े में एक रात क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। अचानक उनकी घोड़ी उछलने लगी। उन्होंने और पढ़ा, वह घोड़ी और उछलने लगी। वह पढ़ते रहे, घोड़ी और उछली। हज़रत उसैद ﷺ फ़रमाते हैं मुझे ख़तरा हुआ कि घोड़ी कहीं मेरे बच्चे यह्या को (जो वहीं क़रीब था) कुचल न डाले, इसलिए मैं घोड़ी के क़रीब जाकर खड़ा हो गया, क्या देखता हूं, कि मेरे सर के ऊपर बादल की तरह कोई चीज़ है जिसमें चिराग़ों की तरह कुछ चीज़ें रौशन हैं, फिर वह बादल की तरह की चीज़ फ़िज़ा में उठती चली गई, यहां तक कि मेरी नज़रों से ओझल हो गई। मैं सुबह को रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! मैं गुज़िश्ता रात अपने बाड़े में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था, अचानक मेरी घोड़ी उछलने लगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अर्ज़ किया : मैं पढ़ता रहा, वह घोड़ी फिर उछली। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अर्ज़ किया : मैं पढ़ता रहा फिर भी वह उछलती रही। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अर्ज़ किया : फिर मैं उठकर चल दिया क्योंकि मेरा लड़का यह्या घोड़ी के क़रीब ही था, मुझे यह ख़तरा हुआ कि घोड़ी कहीं यह्या को कुचल न डाले तो क्या देखता हूं कि बादल की तरह कोई चीज़ है जिसमें चिराग़ों की तरह कुछ चीज़ें रौशन हैं फिर वह चीज़ फ़िज़ा में उठती चली गई यहां तक कि मेरी नज़रों से ओझल हो गई। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे फ़रिश्ते थे, तुम्हारा क़ुरआन सुनने आए थे, अगर तुम सुबह तक पढ़ते रहते तो और लोग भी उनको देख लेते, वे फ़रिश्ते उनसे छुपे न रहते। (मुस्लिम)

﴿70﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَلَسْتُ فِيْ عِصَابَةٍ مِنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِيْنَ، وَإِنَّ بَعْضَهُمْ لَيَسْتَتِرُ بِبَعْضٍ مِنَ الْعُرْيِ، وَقَارِئٌ يَقْرَأُ عَلَيْنَا إِذْ جَاءَ رَسُوْلُ

اللهِ ﷺ فَقَامَ عَلَيْنَا، فَلَمَّا قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَكَتَ الْقَارِئُ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُوْنَ؟ قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنَّهُ كَانَ قَارِئٌ لَنَا يَقْرَأُ عَلَيْنَا فَكُنَّا نَسْتَمِعُ اِلٰى كِتَابِ اللهِ تَعَالٰى، قَالَ: فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ اُمِرْتُ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ قَالَ: فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَسْطَنَا لِيَعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِيْنَا، ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ هٰكَذَا، فَتَحَلَّقُوْا وَبَرَزَتْ وُجُوْهُهُمْ لَهُ. قَالَ: فَمَا رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَرَفَ مِنْهُمْ اَحَدًا غَيْرِيْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَبْشِرُوْا يَا مَعْشَرَ صَعَالِيْكِ الْمُهَاجِرِيْنَ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ اَغْنِيَاءِ النَّاسِ بِنِصْفِ يَوْمٍ، وَذٰلِكَ خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ.

رواه ابوداؤد، باب فی القصص، رقم: ٣٦٦٦

70. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं फ़ुक़रा मुहाजिरीन की एक जमाअत में बैठा हुआ था (उन लोगों के पास इतना कपड़ा भी न था कि जिससे पूरा बदन ढांप लें) बाज़ ने बाज़ की आड़ ली हुई थी। और एक सहाबी ﷺ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे कि इस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए और बिल्कुल हमारे क़रीब खड़े हुए। रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीफ़ आवरी पर तिलावत करने वाले सहाबी ख़ामोश हो गए। आप ﷺ ने सलाम किया, फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, तुम लोग क्या कर रहे थे? हमने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक तिलावत करने वाले हमारे सामने तिलावत कर रहे थे, हम अल्लाह की किताब की तिलावत तवज्जोह से सुन रहे थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ अल्लाह तआला के लिए है, जिन्होंने मेरी उम्मत में ऐसे लोग बनाए कि उनमें मुझे ठहरने का हुक्म दिया गया। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ हमारे दर्मियान बैठ गए, ताकि सबके बराबर रहें (किसी से क़रीब, किसी से दूर न हों) फिर सबको अपने मुबारक हाथ से हल्क़ा बनाकर बैठने का हुक्म फ़रमाया। चुनांचे सब हल्क़ा बनाकर नबी करीम ﷺ की तरफ़ मुंह करके बैठ गए। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आपने मज्लिस वालों में मेरे अलावा किसी को नहीं पहचाना। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन की जमाअत! तुम्हें क़ियामत के दिन कामिल नूर की ख़ुशख़बरी हो और इस बात की भी कि तुम मालदारों से आधे दिन पहले जन्नत में दाख़िल होगे। यह आधा दिन पांच सौ साल का होगा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ को पहचानने और बाक़ी लोगों को न पहचानने की वजह शायद यह होगी कि रात का अंधेरा था और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ चूंकि आपसे क़रीब थे, इसलिए आप ﷺ ने उनको

पहचान लिया। (बज़्लुलमज़्हूद)

﴿71﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِیْ وَقَّاصٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ ھٰذَا الْقُرْآنَ نَزَلَ بِحَزَنٍ فَاِذَا قَرَاْتُمُوْہُ فَابْکُوا، فَاِنْ لَّمْ تَبْکُوْا فَتَبَاکَوْا، وَتَغَنَّوا بِہٖ فَمَنْ لَّمْ یَتَغَنَّ بِہٖ فَلَیْسَ مِنَّا۔

رواہ ابن ماجہ، باب فی حسن الصوت بالقرآن،......رقم: ۱۳۳۷

71. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : यह क़ुरआन करीम फ़िक्र व बेक़रारी (पैदा करने वाले) के लिए नाज़िल हुआ है। जब तुम इसे पढ़ो तो रोया करो, अगर रोना न आए तो रोने वालों-जैसी शक्ल बना लो और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी आवाज़ से पढ़ो, क्योंकि जो शख़्स उसे अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है, यानी हमारी कामिल इत्तिबा करने वालों में से नहीं है। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : उलमा ने इस रिवायत के दूसरे माने यह भी लिखे हैं कि जो शख़्स क़ुरआन करीम की बरकत से लोगों से मुस्तग़नी न हो, वह हम में से नहीं है।

﴿72﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَااَذِنَ اللّٰہُ لِشَیْءٍ مَا اَذِنَ لِنَبِیٍّ حَسَنِ الصَّوْتِ یَتَغَنّٰی بِالْقُرْآنِ۔

رواہ مسلم، باب استحباب تحسین الصوت بالقرآن، رقم: ۱۸٤٥

72. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इतना किसी की तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाते जितना कि उस नबी की आवाज़ को तवज्जोह से सुनते हैं जो क़ुरआन करीम ख़ुशइल्हानी से पढ़ता है। (मुस्लिम)

﴿73﴾ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: زَیِّنُوْا الْقُرْآنَ بِاَصْوَاتِکُمْ فَاِنَّ الصَّوْتَ الْحَسَنَ یَزِیْدُ الْقُرْآنَ حُسْنًا۔

رواہ الحاکم ۱/٥٧٥

73. हज़रत बरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अच्छी आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ को मुज़ैय्यन करो क्योंकि अच्छी आवाज़ क़ुरआन शरीफ़ के हुस्न को बढ़ा देती है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿74﴾ عَنْ عُقْبَۃَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: اَلْجَاھِرُ

بِالْقُرْآنِ كَالْمُجَاهِرِ بِالصَّدَقَةِ وَ الْمُسِرُّ بِالْقُرْآنِ كَالْمُسِرِّ بِالصَّدَقَةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب من قرأ القرآن فليسال الله به، رقم: ٢٩١٩

74. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ुरआन करीम आवाज़ से पढ़ने वाले का सवाब एलानिया सदक़ा करने वाले की तरह है और आहिस्ता पढ़ने वाले का सवाब छुप कर सदक़ा करने वाले की तरह है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ से आहिस्ता पढ़ने की फ़ज़ीलत मालूम होती है, यह इस सूरत में है, जबकि रिया का शुब्हा हो, अगर रिया का शुब्हा न हो और दूसरे को तकलीफ़ का अंदेशा भी न हो तो दूसरी रिवायात की वजह से बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल है कि यह दूसरों के लिए तर्ग़ीब का ज़रिया बनेगा। (शर्हुत्तैय्यिबा)

﴿75﴾ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِأَبِي مُوسَى: لَوْ رَأَيْتَنِي وَ أَنَا أَسْتَمِعُ قِرَاءَتَكَ الْبَارِحَةَ لَقَدْ أُوتِيتَ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيرِ آلِ دَاوُدَ.

رواه مسلم، باب استحباب تحسين الصوت بالقرآن، رقم: ١٨٥٢

75. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम मुझे गुज़िश्ता रात देख लेते जब मैं तुम्हारा क़ुरआन तवज्जोह से सुन रहा था, (तो यक़ीनन ख़ुश होते) तुम को हज़रत दाऊद عليه السلام की खुश इल्हानी से हिस्सा मिला है। (मुस्लिम)

﴿76﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُقَالُ يَعْنِي لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ اقْرَأْ وَارْقَ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذي ليس في جوفه من القرآن،......رقم: ٢٩١٤

76. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) साहबे क़ुरआन से कहा जाएगा : क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों पर चढ़ता जा और ठहर ठहर कर पढ़, जैसा कि तू दुनिया में ठहर-ठहर कर पढ़ा करता था। बस तेरा मक़ाम वही होगा जहां तेरी आख़िरी आयत की तिलावत ख़त्म होगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : साहबे क़ुरआन से हाफ़िज़े क़ुरआन या कसरत से तिलावत करने वाला या

क़ुरआन करीम पर तदब्बुर के साथ अमल करने वाला मुराद है।
(तैय्यिबी, मिरक़ात)

﴿77﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ، وَالَّذِيْ يَقْرَءُ الْقُرْآنَ وَ يَتَتَعْتَعُ فِيْهِ، وَهُوَ عَلَيْهِ شَاقٌّ لَهُ اَجْرَانِ.

رواه مسلم، باب فضل الماهر بالقرآن والذي يتتعتع فيه، رقم ١٨٦٢

77. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन का हाफ़िज़ जिसे याद भी ख़ूब हो और पढ़ता भी अच्छा हो, उसका हश्र क़ियामत में उन मुअ़ज़्ज़ज़ फ़रमांबरदार फ़रिश्तों के साथ होगा जो क़ुरआन शरीफ़ को लौहे महफ़ूज़ से नक़ल करने वाले हैं और जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ को अटक-अटक कर पढ़ता है और उसमें मशक़्क़त उठाता है, उसके लिए दोहरा अज्र है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अटकने वाले से मुराद वह हाफ़िज़ है जिसे क़ुरआन शरीफ़ अच्छी तरह याद न हो, लेकिन वह याद करने की कोशिश में लगा रहता हो। नीज़ इससे मुराद वह देखकर पढ़ने वाला भी हो सकता है जो देखकर पढ़ने में भी अटकता हो, लेकिन सही पढ़ने की कोशिश कर रहा हो, ऐसे शख़्स के लिए दो अज्र हैं। एक अज्र तिलावत का है, दूसरा अज्र बार-बार अटकने की वजह से मशक़्क़त बरदाश्त करने का है। (तैय्यिबी, मिरक़ात)

﴿78﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَجِيْءُ صَاحِبُ الْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُوْلُ: يَارَبِّ حَلِّهِ فَيُلْبَسُ تَاجَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُوْلُ: يَارَبِّ زِدْهُ، فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُوْلُ: يَارَبِّ ارْضَ عَنْهُ، فَيَرْضَى عَنْهُ فَيُقَالُ لَهُ اِقْرَأْ وَارْقَ وَيُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةً.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذي ليس في جوفه من القرآن كالبيت الخرب، رقم: ٢٩١٥

78. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : साहबे क़ुरआन क़ियामत के दिन (अल्लाह तआ़ला के दरबार में) आएगा तो क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा इसको जोड़ा अ़ता फ़रमाएं, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसको करामत का ताज पहनाया जाएगा। यह फिर दरख़्वास्त करेगा, ऐ मेरे रब! और पहनाइए, तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इकराम का पूरा जोड़ा पहनाया

जाएगा। फिर वह दरख़्वास्त करेगा, ऐ मेरे रब! इस शख़्स से राज़ी हो जाइए तो अल्लाह तआला उससे राज़ी हो जाएंगे। फिर उससे कहा जाएगा, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों पर चढ़ता जा और (उसके लिए) हर आयत के बदले में एक नेकी बढ़ा दी जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴿79﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: إِنَّ الْقُرْآنَ يَلْقَى صَاحِبَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِيْنَ يَنْشَقُّ عَنْهُ قَبْرُهُ كَالرَّجُلِ الشَّاحِبِ فَيَقُوْلُ لَهُ: هَلْ تَعْرِفُنِيْ؟ فَيَقُوْلُ: مَا أَعْرِفُكَ، فَيَقُوْلُ لَهُ هَلْ تَعْرِفُنِيْ؟ فَيَقُوْلُ: مَا أَعْرِفُكَ، فَيَقُوْلُ: أَنَا صَاحِبُكَ الْقُرْآنُ الَّذِيْ أَظْمَأْتُكَ فِي الْهَوَاجِرِ وَ أَسْهَرْتُ لَيْلَكَ وَ إِنَّ كُلَّ تَاجِرٍ مِنْ وَرَاءِ تِجَارَتِهِ وَإِنَّكَ الْيَوْمَ مِنْ وَرَاءِ كُلِّ تِجَارَتِهِ فَيُعْطَى الْمُلْكَ بِيَمِيْنِهِ وَالْخُلْدَ بِشِمَالِهِ وَ يُوْضَعُ عَلَى رَأْسِهِ تَاجُ الْوَقَارِ وَيُكْسَى وَالِدَاهُ حُلَّتَيْنِ لَا يَقُوْمُ لَهُمَا أَهْلُ الدُّنْيَا فَيَقُوْلَانِ: بِمَ كُسِيْنَا هٰذِهِ؟ فَيُقَالُ: بِأَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ ثُمَّ يُقَالُ لَهُ: اِقْرَأْ وَاصْعَدْ فِيْ دَرَجَةِ الْجَنَّةِ وَ غُرَفِهَا فَهُوَ فِيْ صُعُوْدٍ مَادَامَ يَقْرَأُ هَذًّا كَانَ أَوْ تَرْتِيْلًا۔ رواه احمد، الفتح الربانى ١٨/٦٩

79. हज़रत बुरैदा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन जिस वक़्त क़ुरआन वाला अपनी क़ब्र से निकलेगा, तो क़ुरआन उससे इस हालत में मिलेगा जैसे कमज़ोरी की वजह से रंग बदला हुआ आदमी हो और साहिबे क़ुरआन से पूछेगा : क्या तुम मुझे पहचानते हो? वह कहेगा : मैं तुम्हें नहीं पहचानता। क़ुरआन दोबारा पूछेगा : क्या तुम मुझे पहचानते हो? वह कहेगा : मैं तुम्हें नहीं पहचानता। क़ुरआन कहेगा : मैं तुम्हारा साथी क़ुरआन हूं जिसने तुम्हें सख़्त गर्मी की दोपहर में प्यासा रखा और रात को जगाया (यानी क़ुरआन के हुक्म पर अमल की वजह से तुमने दिन में रोज़ा रखा और रात में क़ुरआन की तिलावत की) हर ताजिर अपनी तिजारत से नफ़ा हासिल करना चाहता है और आज तुम अपनी तिजारत से सबसे ज़्यादा नफ़ा हासिल करने वाले हो। उसके बाद साहिबे क़ुरआन को दाएं हाथ में बादशाहत दी जाएगी और बाएं हाथ में (जन्नत में) हमेशा रहने का परवाना दिया जाएगा। उसके सर पर वक़ार का ताज रखा जाएगा और उसके वालिदैन को दो ऐसे जोड़े पहनाए जाएंगे जिसकी क़ीमत दुनिया वाले नहीं लगा सकते। वालिदैन कहेंगे : हमें ये जोड़े किस वजह से पहनाए गए हैं? उनसे कहा जाएगा : तुम्हारे बच्चे के क़ुरआन हिफ़्ज़ करने की वजह से। फिर साहिबे क़ुरआन से कहा जाएगा : क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के दरजों और बालाख़ानों पर चढ़ता

आ। चुनांचे जब तक वह क़ुरआन पढ़ता रहेगा चाहे रवानी से पढ़े, चाहे ठहर-ठहर कर पढ़े वह (जन्नत के दर्जों और बाला ख़ानों पर) चढ़ता जाएगा।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम का कमज़ोरी की वजह से रंग बदले हुए आदमी की शक्ल में क़ुरआन वाले के सामने आना दरहक़ीक़त यह ख़ुद क़ुरआन वाले का एक नक़्शा है कि उसने रातों को क़ुरआन करीम की तिलावत और दिन में उसके अह्काम पर अ़मल करके अपने आपको कमज़ोर बना लिया था।

(इन्जाहुल हाजः)

﴿80﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ لِلّٰهِ اَهْلِيْنَ مِنَ النَّاسِ قَالُوا: مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: اَهْلُ الْقُرْآنِ هُمْ اَهْلُ اللهِ وَخَاصَّتُهُ.

رواه الحاكم وقال الذهبي: روى من ثلاثة اوجه عن انس هذا اجودها ١/٥٥٦

80. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के लिए बाज़ लोग ऐसे हैं जैसे किसी के घर के ख़ास लोग होते हैं। सहाबा ने अ़र्ज़ किया : वह कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन शरीफ़ वाले कि वह अल्लाह वाले और उसके ख़ास लोग हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿81﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الَّذِيْ لَيْسَ فِيْ جَوْفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذي ليس في جوفه من القرآن.... رقم: ٢٩١٣

81. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के दिल में क़ुरआन करीम का कोई हिस्सा भी महफ़ूज़ नहीं वह वीरान घर की तरह है, यानी जैसे मकान की रौनक़ और आबादी, रहने वाले से है ऐसे ही इंसान के दिल की रौनक़ और आबादी क़ुरआन करीम को याद रखने से है। (तिर्मिज़ी)

﴿82﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنِ امْرِئٍ يَقْرَءُ الْقُرْآنَ ثُمَّ يَنْسَاهُ اِلاَّ لَقِيَ اللهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَجْذَمَ.

رواه ابوداؤد، باب التشديد فيمن حفظ القرآن...... رقم: ١٤٧٤

82. हज़रत साद बिन उबादा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर भुला दे, तो वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के यहां इस हाल में आएगा कि कोढ़ के मर्ज़ की वजह से उसके अंग-अंग झड़े हुए होंगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : क़ुरआन को भुला देने के कई मतलब ब्यान किए गए हैं। एक यह है कि देखकर भी न पढ़ सके। दूसरा यह है कि ज़बानी न पढ़ सके। तीसरा यह है कि उसकी तिलावत में ग़फ़लत करे। चौथा यह है कि क़ुरआनी हुक्मों को जानने के बाद उसपर अमल न करे।

(बज़्लुलमजहूद, शर्हे सुनन अबीदाऊद लिलऐनी)

﴿83﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَفْقَهُ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فِىْ اَقَلَّ مِنْ ثَلَاثٍ. رواه ابوداؤد، باب تحزيب القرآن، رقم: ١٣٩٤

83. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम को तीन दिन से कम में ख़त्म करने वाला उसे अच्छी तरह नहीं समझ सकता। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ का यह इर्शाद अवाम के लिए है, चुनांचे बाज़ सहाबा ﷺ के बारे में तीन दिन से कम में ख़त्म करना भी साबित है। (शर्हुत्तैयिबी)

﴿84﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: اُعْطِيْتُ مَكَانَ التَّوْرَاةِ السَّبْعَ وَاُعْطِيْتُ مَكَانَ الزَّبُوْرِ الْمِئِيْنَ وَاُعْطِيْتُ مَكَانَ الْاِنْجِيْلِ الْمَثَانِىَ وَ فُضِّلْتُ بِالْمُفَصَّلِ. رواه احمد ١٠٧/٤

84. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तौरात के बदले में क़ुरआन करीम के शुरू की सात सूरतें और ज़बूर के बदले में "मेईन" यानी उसके बाद की ग्यारह सूरतें और इंजील के बदले में "मसानी" यानी उसके बाद की बीस सूरतें मिली हैं और उसके बाद आख़िर क़ुरआन तक की सूरतें "मुफ़स्सल" मुझे ख़ास तौर पर दी गई हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿85﴾ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ ابْنِ عُمَيْرٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فِىْ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ. رواه الدارمى ٥٣٨/٢

85. हज़रत अब्दुल मलिक बिन उमैर रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरः फ़ातिहा में हर बीमारी से शिफ़ा है। (दारमी)

﴿86﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ اَحَدُكُمْ: آمِيْنَ، وَقَالَتِ الْمَلَائِكَةُ فِى السَّمَاءِ: آمِيْنَ، فَوَافَقَتْ اِحْدَاهُمَا الْاُخْرٰى، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ۔

رواه البخاري، باب فضل التامين، رقم: ٧٨١

86. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई (सूरः फ़ातिहा के आख़िर में) आमीन कहता है, तो उसी वक़्त फ़रिश्ते आसमान पर आमीन कहते हैं, अगर उस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाती है तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿87﴾ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الْكِلَابِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: يُؤْتٰى بِالْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاَهْلِهِ الَّذِيْنَ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ بِهٖ، تَقْدُمُهٗ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ وَآلُ عِمْرَانَ۔

(الحديث) رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، رقم: ١٨٧٦

87. हज़रत नव्वास बिन समआन किलाबी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन क़ुरआन मजीद को लाया जाएगा और वे लोग भी लाए जाएंगे जो उस पर अ़मल किया करते थे। सूरः बक़रः और आले इमरान (जो क़ुरआन की सबसे पहली सूरतें हैं) पेश-पेश होंगी। (मुस्लिम)

﴿88﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ مَقَابِرَ، اِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْفِرُ مِنَ الْبَيْتِ الَّذِىْ تُقْرَاُ فِيْهِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ۔

رواه مسلم، باب استحباب الصلاة النافلة فى بيته...، رقم: ١٨٢٤

88. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ, यानी घरों को अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से आबाद रखो। जिस घर में सूरः बक़रः पढ़ी जाती है शैतान उस घर से भाग जाता है। (मुस्लिम)

﴿89﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ:

اِقْرَءُوْا الْقُرْآنَ، فَإِنَّهُ يَأْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيْعًا لِأَصْحَابِهِ، اِقْرَءُوْا الزَّهْرَاوَيْنِ: الْبَقَرَةَ وَسُوْرَةَ آلِ عِمْرَانَ، فَإِنَّهُمَا يَأْتِيَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، كَأَنَّهُمَا غَمَامَتَانِ، أَوْ كَأَنَّهُمَا غَيَايَتَانِ، أَوْ كَأَنَّهُمَا فِرْقَانِ مِنْ طَيْرٍ صَوَافَّ، تُحَاجَّانِ عَنْ أَصْحَابِهِمَا، اِقْرَءُوْا سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، فَإِنَّ أَخْذَهَا بَرَكَةٌ، وَتَرْكَهَا حَسْرَةٌ، وَلَا يَسْتَطِيْعُهَا الْبَطَلَةُ، قَالَ مُعَاوِيَةُ: بَلَغَنِيْ أَنَّ الْبَطَلَةَ السَّحَرَةُ.

رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، رقم: ١٨٧٤

89. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ुरआन मजीद पढ़ो, क्योंकि यह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों का सिफ़ारशी बनकर आएगा। सूरह बक़रः और आले इमरान जो दोनों रौशन सूरतें हैं (ख़ास तौर से) पढ़ा करो क्योंकि ये क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों को अपने साए में लिए इस तरह आएंगी जैसे वह अब्र के दो टुकड़े हों या दो सायबान हों या क़तार बांधे परिन्दों के दो ग़ोल हों, ये दोनों अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करेंगी और ख़ुसूसियत से सूरः बक़रः पढ़ा करो, क्योंकि इसका पढ़ना, याद करना और समझना बरकत का सबब है और इसका छोड़ देना महरूमी की बात है और इस सूरः से ग़लत क़िस्म के लोग फ़ायदा नहीं उठा सकते। मुआविया बिन सलाम रह० कहते हैं मुझे यह बात पहुंची है कि ग़लत क़िस्म के लोगों से मुराद जादूगर हैं यानी सूरः बक़रः की तिलावत का मामूल रखने वाले, पर कभी किसी जादूगर का जादू नहीं चलेगा। (मुस्लिम)

﴿90﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ فِيْهَا آيَةٌ سَيِّدَةُ آيِ الْقُرْآنِ لَا تُقْرَأُ فِيْ بَيْتٍ وَفِيْهِ شَيْطَانٌ إِلَّا خَرَجَ مِنْهُ، آيَةُ الْكُرْسِيِّ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد، الترغيب ٢/ ٣٧٠

90. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूर : बक़रः में एक आयत है जो क़ुरआन शरीफ़ की तमाम आयतों की सरदार है। वह आयत जैसे ही किसी घर में पढ़ी जाए और वहां शैतान हो तो फ़ौरन निकल जाता है, वह आयतल कुर्सी है। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴿91﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكٰوةِ رَمَضَانَ، فَأَتَانِيْ آتٍ فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ وَقُلْتُ: لَأَرْفَعَنَّكَ إِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: إِنِّيْ مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ وَلِيْ حَاجَةٌ شَدِيْدَةٌ، قَالَ فَخَلَّيْتُ عَنْهُ، فَأَصْبَحْتُ

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا اَبَا هُرَيْرَةَ، مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ الْبَارِحَةَ؟ قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ شَكَا حَاجَةً شَدِيْدَةً وَ عِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ قَالَ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ وَ سَيَعُوْدُ فَعَرَفْتُ اَنَّهُ سَيَعُوْدُ لِقَوْلِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ "اِنَّهُ سَيَعُوْدُ" فَرَصَدْتُهُ، فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ فَاَخَذْتُهُ فَقُلْتُ لَاَرْفَعَنَّكَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ دَعْنِىْ فَاِنِّىْ مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ، لَا اَعُوْدُ، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، فَاَصْبَحْتُ فَقَالَ لِىْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا اَبَاهُرَيْرَةَ، مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ؟ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، شَكَا حَاجَةً شَدِيْدَةً وَ عِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، قَالَ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ و سَيَعُوْدُ، فَرَصَدْتُهُ الثَّالِثَةَ فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ فَاَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لَاَرْفَعَنَّكَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَ هٰذَا آخِرُ ثَلَاثِ مَرَّاتٍ اِنَّكَ تَزْعُمُ لَا تَعُوْدُ ثُمَّ تَعُوْدُ، قَالَ: دَعْنِىْ اُعَلِّمْكَ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُكَ اللهُ بِهَا، قُلْتُ: مَاهُنَّ؟ قَالَ: اِذَا اَوَيْتَ اِلٰى فِرَاشِكَ فَاقْرَاْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ "اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" (البقرة: ٢٥٥) حَتّٰى تَخْتِمَ الْآيَةَ، فَاِنَّكَ لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللهِ حَافِظٌ وَلَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتّٰى تُصْبِحَ، فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، فَاَصْبَحْتُ فَقَالَ لِىْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ الْبَارِحَةَ؟ قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، زَعَمَ اَنَّهُ يُعَلِّمُنِىْ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُنِى اللهُ بِهَا فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، قَالَ: مَا هِيَ؟ قُلْتُ: قَالَ لِىْ: اِذَا اَوَيْتَ اِلٰى فِرَاشِكَ فَاقْرَاْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ مِنْ اَوَّلِهَا حَتّٰى تَخْتِمَ الْآيَةَ "اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" وَقَالَ لِىْ: لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللهِ حَافِظٌ وَ لَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتّٰى تُصْبِحَ، وَ كَانُوْا اَحْرَصَ شَيْءٍ عَلَى الْخَيْرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ صَدَقَكَ وَ هُوَ كَذُوْبٌ، تَعْلَمُ مَنْ تُخَاطِبُ مُذْ ثَلَاثِ لَيَالٍ يَا اَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: ذَاكَ شَيْطَانٌ. رواه البخاري، باب اذا وكل رجلا فترك الوكيل شيئا......رقم: ٢٣١١ وفي رواية الترمذي عَنْ اَبِىْ اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اِقْرَاْهَا فِىْ بَيْتِكَ فَلَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ وَلَا غَيْرُهُ. رقم: ٢٨٨٠

91. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सदक़ा-ए-फ़ित्र की निगरानी पर मुझे मुक़र्रर फ़रमाया था। एक शख़्स आया और दोनों हाथ भर कर ग़ल्ला लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा : मैं तुझे ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ के पास ले चलूंगा। उसने कहा, मैं एक मुहताज हूं, मेरे ऊपर मेरे अह्ल व अ़याल का बोझ है और मैं सख़्त ज़रूरतमंद हूं। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो नबी करीम ﷺ ने मुझसे फ़रमाया : अबू हुरैरह! तुम्हारे क़ैदी ने कल रात क्या किया? (अल्लाह तआ़ला ने आपको इस वाक़िआ की ख़बर दे दी थी) मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसने अपनी शदीद ज़रूरत और अह्ल व अ़याल के बोझ की शिकायत की, इसलिए मुझे उस पर रहम आया और मैंने उसे

छोड़ दिया। आप ﷺ ने फ़रमाया : ख़बरदार रहना उसने तुम से झूठ बोला है वह दोबारा आएगा। मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के फ़रमान की वजह से यक़ीन हो गया कि वह दोबारा आएगा। चुनांचे मैं उसकी ताक में लगा रहा। (वह आया) और अपने दोनों हाथों से गल्ला भरना शुरू कर दिया। चुनांचे मैंने उसे पकड़ कर कहा, मैं तुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास ज़रूर ले जाऊंगा। उसने कहा, मुझे छोड़ दीजिए मैं ज़रूरतमंद हूं, मेरे ऊपर बाल बच्चों का बोझ है अब आइन्दा मैं नहीं आऊंगा। मुझे उस पर रहम आया और मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से फिर फ़रमाया : अबू हुरैरह! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसने अपनी शदीद ज़रूरत और अह्ल व अयाल के बोझ की शिकायत की इसलिए मुझे उस पर रहम आ गया और मैंने उसको छोड़ दिया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : होशियार रहना! उसने झूठ बोला है वह फिर आएगा। चुनांचे मैं फिर उसकी ताक में रहा। (वह आया) और दोनों हाथों से गल्ला भरने लगा। मैंने उसे पकड़ कर कहा कि मैं तुझे ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ के पास ले जाऊंगा। यह तीसरा और आख़िरी मौक़ा है, तूने कहा था आइन्दा नहीं आऊंगा, मगर तू फिर आ गया। उसने कहा, मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें ऐसे कलिमे सिखाऊंगा कि अल्लाह तआला उनकी वजह से तुम्हें नफ़ा पहुंचाएंगे। मैंने कहा वे कलिमे क्या हैं? उसने कहा जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करो। तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से एक हिफ़ाज़त करने वाला मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा। सुबह को रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे फ़रमाया : तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया : उसने कहा था कि वह मुझे चन्द ऐसे कलिमे सिखाएगा जिनसे अल्लाह तआला मुझे नफ़ा पहुंचाएंगे, तो मैंने इस मर्तबा भी छोड़ दिया। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, वे कलिमे क्या थे। मैंने कहा कि वह यह कह गया, जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करो। तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से एक हिफ़ाज़त करने वाला मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा। रावी कहते हैं, सहाबा किराम : ख़ैर के कामों पर बहुत ज़्यादा हरीस थे। (इसलिए आख़िरी मर्तबा ख़ैर की बात सुनकर उसे छोड़ दिया।) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, अगरचे वह झूठा है लेकिन तुम से सच बोल गया। अबू हुरैरह! तुम जानते हो कि तुम तीन रातों से किस से बातें कर रहे थे? मैंने कहा नहीं! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शैतान था (जो इस तरह मक्र व फ़रेब से सदक़ों के माल में कमी करने आया था)। (बुख़ारी)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ की रिवायत में है कि शैतान ने यूं कहा : तुम अपने घर में आयतुल कुर्सी पढ़ा करो, तुम्हारे पास कोई शैतान जिन्न वग़ैरह न आएगा। (तिर्मिज़ी)

﴿92﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا اَبَا الْمُنْذِرِ! اَتَدْرِیْ اَیُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ مَعَكَ اَعْظَمُ؟ قَالَ: قُلْتُ: اللهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: يَا اَبَا الْمُنْذِرِ! اَتَدْرِیْ اَیُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ مَعَكَ اَعْظَمُ؟ قَالَ: قُلْتُ: "اَللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ" قَالَ: فَضَرَبَ فِیْ صَدْرِیْ وَ قَالَ: وَاللهِ! لِيَهْنِكَ الْعِلْمُ اَبَا الْمُنْذِرِ. رواه مسلم، باب فضل سورة الكهف وآية الكرسى، رقم: ١٨٨٥ وَفِیْ رِوَايَةٍ: وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ اِنَّ لَهَا لِسَانًا وَ شَفَتَيْنِ تُقَدِّسُ الْمَلِكَ عِنْدَ سَاقِ الْعَرْشِ.

قُلْتُ: هُوَفِى الصحيح باختصار. رواه احمد ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٧/ ٣٩

92. हज़रत उबई बिन काब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अबुलमुंज़िर! (यह हज़रत उबई बिन काब ﷺ की कुन्नियत है) क्या तुम जानते हो कि किताबुल्लाह की कौन-सी आयत तुम्हारे पास सबसे ज़्यादा अज़मत वाली है? मैंने अर्ज़ किया : अल्लाह और उनके रसूल ही सबसे ज़्यादा जानते हैं। नबी करीम ﷺ ने दोबारा पूछा : अबुलमुंज़िर! क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे पास किताबुल्लाह की सबसे अज़ीम आयत कौन-सी है? मैंने अर्ज़ किया : (आयतुल कुर्सी) आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मारा (गोया इस जवाब पर शाबाशी दी) और इर्शाद फ़रमाया : अबुलमुंज़िर! तुझे इल्म मुबारक हो। (मुस्लिम)

एक रिवायत में आयतुल कुर्सी के बारे में फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है इस आयत की एक ज़बान और दो होंठ हैं, जो अर्श के पाए के पास अल्लाह तआला की पाकी ब्यान करते हैं।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿93﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِكُلِّ شَیْءٍ سَنَامٌ وَ اِنَّ سَنَامَ الْقُرْآنِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ ، وَ فِيْهَا آيَةٌ هِیَ سَيِّدَةُ آیِ الْقُرْآنِ هِیَ آيَةُ الْكُرْسِیِّ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فى سورة البقرة وآية الكرسى، رقم: ٢٨٧٨

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर चीज़ की कोई चोटी होती है (जो सबसे ऊपर और बालातर होती है) और क़ुरआन

करीम की चोटी सूरः बक़रः है और उसमें एक आयत ऐसी है जो क़ुरआन शरीफ़ की सारी आयतों की सरदार है, वह आयतुल कुर्सी है। (तिर्मिज़ी)

﴾94﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَا جِبْرَئِيْلُ قَاعِدٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، سَمِعَ نَقِيْضًا مِنْ فَوْقِهِ، فَرَفَعَ رَأْسَهُ، فَقَالَ: هٰذَا بَابٌ مِنَ السَّمَاءِ فُتِحَ الْيَوْمَ، لَمْ يُفْتَحْ قَطُّ إِلَّا الْيَوْمَ، فَنَزَلَ مِنْهُ مَلَكٌ فَقَالَ: هٰذَا مَلَكٌ نَزَلَ إِلَى الْأَرْضِ، لَمْ يَنْزِلْ قَطُّ إِلَّا الْيَوْمَ، فَسَلَّمَ وَقَالَ: أَبْشِرْ بِنُوْرَيْنِ أُوْتِيْتَهُمَا لَمْ يُؤْتَهُمَا نَبِيٌّ قَبْلَكَ، فَاتِحَةُ الْكِتَابِ وَخَوَاتِيْمُ سُوْرَةِ الْبَقَرَةِ، لَنْ تَقْرَأَ بِحَرْفٍ مِنْهُمَا إِلَّا أُعْطِيْتَهُ. رواه مسلم، باب فضل الفاتحة......رقم:١٨٧٧

94. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि एक मर्तबा जिबरईल अलैहि॰ नबी करीम ﷺ के पास बैठे हुए थे, इतने में आसमान से कुछ खड़का सुनाई दिया। उन्होंने सर उठाया और कहा, यह आसमान का एक दरवाज़ा खुला है जो आज से पहले कभी नहीं खुला था। उससे एक फ़रिश्ता उतरा है, यह फ़रिश्ता आज से पहले कभी ज़मीन पर नहीं आया था। उस फ़रिश्ते ने ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अर्ज़ किया : ख़ुशख़बरी हो आपको दो नूर दिए गए हैं जो आपसे पहले किसी नबी को नहीं दिए गए थे। एक सूरः फ़ातिहा, दूसरे सूरः बक़रः की आख़िरी (दो) आयतें। आप उनमें से जो जुम्ला भी पढ़ेंगे, वह आपको मिलेगा।

फ़ायदा : यानी अगर तारीफ़ी जुम्ला है तो तारीफ़ करने का सवाब मिलेगा, और अगर दुआ का जुम्ला है तो दुआ क़ुबूल की जाएगी। (मिर्क़ात)

﴾95﴿ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضَ بِأَلْفَيْ عَامٍ أَنْزَلَ مِنْهُ آيَتَيْنِ خَتَمَ بِهِمَا سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، وَلَا يُقْرَآنِ فِيْ دَارٍ ثَلَاثَ لَيَالٍ فَيَقْرَبُهَا شَيْطَانٌ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في آخر سورة البقرة رقم: ٢٨٨٢

95. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आसमान व ज़मीन की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले अल्लाह तआला ने किताब लिखी। इस किताब में से दो आयतें नाज़िल फ़रमाईं, जिन पर अल्लाह तआला ने सूरः बक़रः को ख़त्म फ़रमाया। ये आयतें जिस मकान में तीन रात तक पढ़ी जाती रहें, शैतान उसके नज़दीक भी नहीं आता। (तिर्मिज़ी)

﴿96﴾ عَنْ اَبِیْ مَسْعُوْدٍ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ الْاٰیَتَیْنِ مِنْ آخِرِ سُوْرَۃِ الْبَقَرَۃِ فِیْ لَیْلَۃٍ کَفَتَاہُ۔

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء فی آخر سورۃ البقرۃ، رقم: ۲۸۸۱

96. हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सूरः बक़रः की आख़िरी दो आयतें किसी रात में पढ़ ले, तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफ़ी हो जाएंगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : दो आयतों के काफ़ी हो जाने के दो मतलब हैं—एक यह कि उनका पढ़ने वाला उस रात हर बुराई से महफ़ूज़ रहेगा। दूसरा यह कि ये दो आयतें तहज्जुद के क़ायम मक़ाम हो जाएंगी। (नव्वी)

﴿97﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ مَا مِنْ مُسْلِمٍ یَاْخُذُ مَضْجَعَہُ یَقْرَاُ سُوْرَۃً مِنْ کِتَابِ اللہِ اِلَّا وَکَّلَ اللہُ مَلَکًا فَلَا یَقْرَبُہُ شَیْءٌ یُؤْذِیْہِ حَتّٰی یَھُبَّ مَتٰی ھَبَّ۔

رواہ الترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳٤۰۷

97. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान भी बिस्तर पर जाकर क़ुरआन करीम की कोई-सी भी सूरत पढ़ लेता है, तो अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देते हैं, फिर जब भी वह बेदार हो उसके बेदार होने तक कोई तकलीफ़देह चीज उसके क़रीब भी नहीं आती। (तिर्मिज़ी)

﴿98﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ فِیْ لَیْلَۃٍ مِائَۃَ آیَۃٍ کُتِبَ مِنَ الْقَانِتِیْنَ۔

(وھو بعض الحدیث) رواہ الحاکم وقال: ھذا حدیث صحیح علی شرط الشیخین ولم یخرجاہ ووافقہ الذھبی ۱/۳۰۸

98. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात में सौ आयतों की तिलावत करे वह उस रात इबादतगुज़ारों में शुमार किया जाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿99﴾ عَنْ فَضَالَۃَ بْنِ عُبَیْدٍ وَتَمِیْمِ الدَّارِیِّ رَضِیَ اللہُ عَنْھُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ عَشَرَ آیَاتٍ فِیْ لَیْلَۃٍ کُتِبَ لَہُ قِنْطَارٌ وَالْقِنْطَارُ خَیْرٌ مِنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْھَا۔

(الحدیث) رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط وفیہ: اسماعیل بن عیاش وھو ثقۃ فی روایتہ عن الشامیین وھی مقبولۃ، مجمع الزوائد ۲/۵٤۷

99. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद और हज़रत तमीम दारी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी रात दस आयतों की तिलावत करे, उसके लिए एक क़िन्तार लिखा जाता है और क़िन्तार दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उन सबसे बेहतर है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿100﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ عَشْرَ آیَاتٍ فِیْ لَیْلَةٍ لَمْ یُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبي ١/٥٥٥

100. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात में दस आयतों की तिलावत करे, वह उस रात अल्लाह तआला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿101﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنِّیْ لَاَعْرِفُ اَصْوَاتَ رُفْقَةِ الْاَشْعَرِیِّیْنَ بِالْقُرْآنِ، حِیْنَ یَدْخُلُوْنَ بِاللَّیْلِ، وَاَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ اَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّیْلِ، وَاِنْ كُنْتُ لَمْ اَرَ مَنَازِلَهُمْ حِیْنَ نَزَلُوْا بِالنَّهَارِ۔

(الحديث) رواه مسلم، باب من فضائل الاشعريين رضي الله عنهم، رقم: ٦٤٠٧

101. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अशअर क़ौम के सफ़र के साथियों के क़ुरआन करीम पढ़ने की आवाज़ को पहचान लेता हूं जबकि वह अपने कामों से वापस आकर रात को अपनी क़ियामगाहों में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं और रात को उनके क़ुरआन मजीद पढ़ने की आवाज़ से उनकी क़ियामगाहों को भी पहचान लेता हूं अगरचे दिन में, मैंने उन्हें उनकी क़ियामगाहों पर उतरते हुए न देखा हो। (मुस्लिम)

﴿102﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ خَشِیَ مِنْكُمْ اَنْ لَا یَسْتَیْقِظَ مِنْ آخِرِ اللَّیْلِ فَلْیُوْتِرْ مِنْ اَوَّلِهٖ، وَمَنْ طَمِعَ مِنْكُمْ اَنْ یَقُوْمَ مِنْ آخِرِ اللَّیْلِ فَلْیُوْتِرْ مِنْ آخِرِ اللَّیْلِ، فَاِنَّ قِرَاءَةَ الْقُرْآنِ فِیْ آخِرِ اللَّیْلِ مَحْضُوْرَةٌ، وَهِیَ اَفْضَلُ۔

رواه الترمذي، باب ماجاء في كراهية النوم قبل الوتر، رقم: ٤٥٥

102. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको यह अंदेशा हो कि वह रात के आख़िरी हिस्से में न उठ सकेगा उसको रात के शुरू में (सोने से पहले) वित्र पढ़ लेना चाहिए और जिसको रात के आख़िरी

में उठने की उम्मीद हो उसे रात के आख़िर में वित्र पढ़ने चाहिएं, क्योंकि रात के आख़िरी हिस्से में क़ुरआन करीम की तिलावत के वक़्त फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और उस वक़्त तिलावत करना अफ़ज़ल है। (तिर्मिज़ी)

﴾103﴿ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَأَ ثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ أَوَّلِ الْكَهْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في فضل سورة الكهف، رقم: ٢٨٨٦

103. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूरः कहफ़ की शुरू की तीन आयतें पढ़ लीं, वह दज्जाल के फ़ित्ने से बचा लिया गया। (तिर्मिज़ी)

﴾104﴿ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ حَفِظَ عَشْرَ آيَاتٍ مِنْ أَوَّلِ سُوْرَةِ الْكَهْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ، وَفِيْ رِوَايَةٍ: مِنْ آخِرِ الْكَهْفِ.

رواه مسلم، باب فضل سورة الكهف وآية الكرسي، رقم: ١٨٨٣

85. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूरः कहफ़ की शुरू की दस आयतें याद कर लीं वह दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ हो गया। और एक रिवायत में सूरः कहफ़ की आख़िरी दस आयतों के याद करने का ज़िक्र है। (मुस्लिम)

﴾105﴿ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَأَ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ سُوْرَةِ الْكَهْفِ فَإِنَّهُ عِصْمَةٌ لَهُ مِنَ الدَّجَّالِ.

رواه النسائي في عمل اليوم والليلة، رقم:٩٤٨ قال المحقق:هذا الاسناد رجاله ثقات

105. हज़रत सौबान ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सूरः कहफ़ की आख़िरी दस आयतें पढ़ ले तो यह पढ़ना उसके लिए दज्जाल के फ़ित्ने से बचाव होगा। (अमलुलयौम वल्लैलः)

﴾106﴿ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَرْفُوْعًا: مَنْ قَرَأَ سُوْرَةَ الْكَهْفِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَهُوَ مَعْصُوْمٌ إِلَى ثَمَانِيَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ فِتْنَةٍ، وَإِنْ خَرَجَ الدَّجَّالُ عُصِمَ مِنْهُ.

التفسير لابن كثير عن المختارة للحافظ الضياء المقدسي ٣/٧٥

106. हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स

जुमा के दिन सूर : कहफ़ पढ़ ले, वह आठ दिन तक यानी अगले जुमा तक हर फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा और अगर इस दौरान दज्जाल निकल आए तो यह उसके फ़ित्ने से भी महफ़ूज़ रहेगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

﴿107﴾ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ سُوْرَةَ الْكَهْفِ كَمَا أُنْزِلَتْ كَانَتْ لَهُ نُوْرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ مَقَامِهِ إِلَى مَكَّةَ وَمَنْ قَرَأَ عَشْرَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِهَا ثُمَّ خَرَجَ الدَّجَّالُ لَمْ يُسَلَّطْ عَلَيْهِ۔

(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبي ١/٥٦٤

107. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूरः कहफ़ को (हुरूफ़ की सही अदाइगी के साथ) इस तरह पढ़ा जिस तरह कि वह नाज़िल की गई है तो यह सूरः अपने पढ़ने वाले के लिए क़ियामत के दिन उसके रहने की जगह से लेकर मक्का मुकर्रमा तक नूर बन जाएगी। जिस शख़्स ने इस सूरः की आख़िरी दस आयतों की तिलावत की फिर दज्जाल निकल आया, तो दज्जाल उस पर क़ाबू न पा सकेगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿108﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الْبَقَرَةُ سَنَامُ الْقُرْآنِ وَذُرْوَتُهُ، نَزَلَ مَعَ كُلِّ آيَةٍ مِنْهَا ثَمَانُوْنَ مَلَكًا، وَاسْتُخْرِجَتْ "اَللهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" مِنْ تَحْتِ الْعَرْشِ، فَوُصِلَتْ بِسُوْرَةِ الْبَقَرَةِ، وَ"يٰسٓ" قَلْبُ الْقُرْآنِ لَا يَقْرَؤُهَا رَجُلٌ يُرِيْدُ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى وَالدَّارَ الْآخِرَةَ إِلَّا غُفِرَ لَهُ وَاقْرَؤُوْهَا عَلٰى مَوْتَاكُمْ۔

رواه احمد ٥/٢٦

108. हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम की चोटी यानी सबसे ऊंचा हिस्सा सूरः बक़रः है। उसकी हर आयत के साथ अस्सी फ़रिश्ते उतरते हैं और आयतल कुर्सी अर्श के नीचे से निकाली गई है, यानी अल्लाह तआला के ख़ास ख़ज़ाने से नाज़िल हुई है। फिर उसको सूरः बक़रः के साथ मिला दिया गया, यानी उसमें शामिल कर लिया गया और सूरः यासीन क़ुरआन करीम का दिल है। उसको जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत की नीयत से पढ़ेगा, तो यक़ीनन उसकी मग़फ़िरत कर दी जाएगी, लिहाज़ा इस सूरः को अपने मरने वालों के पास पढ़ा करो (ताकि रूह निकलने में आसानी हो)। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में सूरः बक़रः को क़ुरआन करीम की चोटी ग़ालिबन इस वजह से फ़रमाया है कि इस्लाम के बुनियादी उसूल और अक़ाइद और शरीयत के हुक्मों का जितना तफ़्सीली ब्यान सूरः बक़रः में किया गया है उतना और इस तरह क़ुरआन करीम की किसी दूसरी सूरः में नहीं किया गया। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿109﴾ عَنْ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ يٰسٓ فِيْ لَيْلَةٍ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ غُفِرَ لَهُ. رواه ابن حبان، قال المحقق: رجاله ثقات ٣١٢/٦

109. हज़रत जुंदुब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सूरः यासीन किसी रात में अल्लाह तआला की रज़ा के लिए पढ़ी तो उसकी मग्फ़िरत कर दी जाती है। (इब्ने हब्बान)

﴿110﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَرَأَ الْوَاقِعَةَ كُلَّ لَيْلَةٍ لَمْ يَفْتَقِرْ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٤٩١/٢

110. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने हर रात सूरः वाक़िआ पढ़ी, उस पर फ़क़्र नहीं आएगा। (बैहक़ी)

﴿111﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَنَامُ حَتّٰى يَقْرَأَ الٓمّٓ تَنْزِيْلُ، وَتَبَارَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ. رواه الترمذي، باب ماجاء في فضل سورة الملك، رقم: ٢٨٩٢

111. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ उस वक़्त तक नहीं सोते थे जब तक कि सूरः 'अलिफ़-लाम-मीम सज्दा' (जो इक्कीसवें पारे में है) और 'त-बा-र-कल्लज़ी बियदिहिल मुल्क' न पढ़ लेते। (तिर्मिज़ी)

﴿112﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ سُوْرَةً مِنَ الْقُرْآنِ ثَلَاثُوْنَ آيَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتّٰى غُفِرَ لَهُ وَهِيَ سُوْرَةُ تَبَارَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في فضل سورة الملك، رقم: ٢٨٩١

112. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम में एक सूरः तीस आयतों की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअ़त करती रहती है, यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत कर दी जाए। वह

सूरः "त-बा-र-कल्लज़ी" है। (तिर्मिज़ी)

﴿113﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَرَبَ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ خِبَاءَهُ عَلَى قَبْرٍ وَهُوَ لَا يَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ، فَإِذَا فِيهِ قَبْرُ إِنْسَانٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْمُلْكِ حَتَّى خَتَمَهَا، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي ضَرَبْتُ خِبَائِي وَأَنَا لَا أَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ فَإِذَا فِيهِ إِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُورَةَ الْمُلْكِ حَتَّى خَتَمَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هِيَ الْمَانِعَةُ، هِيَ الْمُنْجِيَةُ تُنْجِيهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في فضل سورة الملك، رقم: ٢٨٩٠

113. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि किसी सहाबी ﷺ ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया। उनको इल्म न था कि वहां क़ब्र है। अचानक उस जगह किसी को सूरः तबारकल्लज़ी पढ़ते हुए सुना, तो नबी करीम ﷺ से आकर अर्ज़ किया कि मैंने एक जगह ख़ेमा लगाया था, मुझे मालूम न था कि वहां क़ब्र है। अचानक मैंने उस जगह किसी को तबारकल्लज़ी आख़िर तक पढ़ते हुए सुना। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह सूरः अल्लाह तआला के अज़ाब से रोकने वाली है और क़ब्र के अज़ाब से नजात दिलाने वाली है। (तिर्मिज़ी)

﴿114﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يُؤْتَى الرَّجُلُ فِي قَبْرِهِ فَتُؤْتَى رِجْلَاهُ فَتَقُولُ رِجْلَاهُ لَيْسَ لَكُمْ عَلَى مَا قِبَلِي سَبِيلٌ كَانَ يَقُومُ يَقْرَأُ بِي سُورَةَ الْمُلْكِ، ثُمَّ يُؤْتَى مِنْ قِبَلِ صَدْرِهِ أَوْ قَالَ بَطْنِهِ فَيَقُولُ لَيْسَ لَكُمْ عَلَى مَا قِبَلِي سَبِيلٌ كَانَ يَقْرَأُ بِي سُورَةَ الْمُلْكِ، ثُمَّ يُؤْتَى رَأْسُهُ فَيَقُولُ لَيْسَ لَكُمْ عَلَى مَا قِبَلِي سَبِيلٌ كَانَ يَقْرَأُ بِي سُورَةَ الْمُلْكِ، فَهِيَ الْمَانِعَةُ تَمْنَعُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَهِيَ فِي التَّوْرَاةِ سُورَةُ الْمُلْكِ، مَنْ قَرَأَهَا فِي لَيْلَةٍ فَقَدْ أَكْثَرَ وَأَطْيَبَ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢/٤٩٨

114. हज़रत इब्ने मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि क़ब्र में आदमी पर पैरों की तरफ़ से अज़ाब आता है, तो उसके पैर कहते हैं कि मेरी तरफ़ से आने का कोई रास्ता नहीं, क्योंकि ये सूरः मुल्क पढ़ता था। फिर वह सीने या पेट की तरफ़ से आता है तो सीना या पेट कहता है, मेरी तरफ़ से तेरे लिए आने का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि यह सूरः मुल्क पढ़ा करता था। फिर अज़ाब सिर की तरफ़ से आता है तो सिर कहता है कि तेरे लिए मेरी तरफ़ से आने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि ये सूरः मुल्क पढ़ा करता था। (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि) यह सूरः क़ब्र के अज़ाब को रोकने वाली है। तौरात में उसका नाम सूरः मुल्क है। किसी मुसलमान

उसको किसी रात में पढ़ा उसने बहुत ज़्यादा सवाब कमाया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾115﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَنْظُرَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كَاَنَّهُ رَاْىُ عَيْنٍ فَلْيَقْرَاْ: "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" وَ "اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ" وَ "اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ"۔

رواه الترمذي و قال هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة "إذا الشمس كورت"۔ رقم:٣٣٣٣

115. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे यह शौक़ हो कि क़ियामत के दिन का मंज़र गोया अपनी आंखों से देख ले तो उसे सूरः **'इज़श-शम्सु कुव्विरत, इज़स्समाउन फ़-तरत, इज़स्समाउन शक़्क़त'** पढ़नी चाहिए (इसलिए कि इन सूरतों में क़ियामत का ब्यान है)।(तिर्मिज़ी)

﴾116﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا زُلْزِلَتْ تَعْدِلُ نِصْفَ الْقُرْآنِ، وَ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ تَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ، وَقُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ تَعْدِلُ رُبُعَ الْقُرْآنِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في اذا زلزلت، رقم: ٢٨٩٤

116. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरः 'इज़ा ज़ुलज़िलत' आधे क़ुरआन के बराबर है, सूरः 'क़ुलहुवल्लाहु अहद' एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है और सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' चौथाई क़ुरआन के बराबर है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम में इंसान की दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी को ब्यान किया गया है और सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' में आख़िरत की ज़िन्दगी का मोअस्सिर अन्दाज़ में ब्यान है, इसलिए यह सूरः आधे क़ुरआन के बराबर है। सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' को एक तिहाई क़ुरआन के बराबर इसलिए फ़रमाया कि क़ुरआन करीम में बुनयादी तौर पर तीन क़िस्म के मज़्मून मज़्कूर हैं : वाक़िआ़त, अह्कामात, तौहीद। सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' में तौहीद का ब्यान निहायत उम्दा तरीक़े पर किया गया है। सूर : 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' चौथाई क़ुरआन के बराबर इस तौर पर है कि अगर क़ुरआन करीम में तौहीद, नुबुव्वत, अह्काम, वाक़िआ़त ये चार मज़्मून समझे जाएं, तो इस सूरः में तौहीद का बहुत आला ब्यान है।

बाज़ उलमा के नज़दीक इन सूरतों के आधे, तिहाई और चौथाई क़ुरआन

करीम के बराबर होने का मतलब यह है कि इन सूरतों की तिलावत पर आधे, तिहाई और चौथाई क़ुरआन करीम की तिलावत के बराबर अज्र मिलेगा।

(मज़ाहिरे हक़)

﴿117﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَقْرَاَ اَلْفَ آيَةٍ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ؟ قَالُوْا: وَمَنْ يَسْتَطِيْعُ ذٰلِكَ! قَالَ: اَمَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَقْرَاَ اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ.

رواه الحاكم وقال: رواة هذا الحديث كلهم ثقات و عقبة هذا غير مشهور ووافقه الذهبى ١/٥٦٧

117. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई इस बात की ताक़त नहीं रखता कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें क़ुरआन शरीफ़ की पढ़ लिया करे? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : किसमें यह ताक़त है कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें पढ़े? इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें कोई इतना नहीं कर सकता कि सूरः 'अलहाकुमुत्तकासुर' पढ़ लिया करे (कि असका सवाब एक हज़ार आयतों के बराबर है)। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿118﴾ عَنْ نَوْفَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِنَوْفَلٍ: اِقْرَاْ "قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" ثُمَّ نَمْ عَلٰى خَاتِمَتِهَا فَاِنَّهَا بَرَاءَةٌ مِنَ الشِّرْكِ. رواه ابوداؤد، باب مايقول عند النوم، رقم ٥٠٥٥

118. हज़रत नौफ़ल ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' पढ़ने के बाद बग़ैर किसी से बात किए हुए सो जाया करो, क्योंकि इस सूरः में शिर्क से बरअत है। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ اَصْحَابِهٖ: هَلْ تَزَوَّجْتَ يَا فُلَانُ؟ قَالَ: لَا، وَاللهِ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَلَا عِنْدِيْ مَا اَتَزَوَّجُ بِهٖ قَالَ اَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ، قَالَ: بَلٰى، قَالَ: ثُلُثُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: تَزَوَّجْ تَزَوَّجْ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى اذا زلزلت، رقم ٢٨٩٥

119. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा में एक सहाबी से फ़रमाया : ऐ फ़्लां! क्या तुमने शादी कर ली? उन्होंने अ़र्ज़

किया : **या रसूलुल्लाह! शादी नहीं की और न मेरे पास इतना माल है कि मैं शादी कर सकूं यानी ग़रीब आदमी हूं।** आप ﷺ ने पूछा : तुम्हें सूरः इख़्लास याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : ये (सवाब में) तिहाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें सूरः 'इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि वल-फ़त्ह' याद नहीं? अ़र्ज़ किया, जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : ये (सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : (यह सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें सूर : 'इज़ा ज़ुलज़िलतिल अर्ज़' याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी, याद है। इर्शाद फ़रमाया : यह (सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है, शादी कर लो, शादी कर लो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद का मक़सद यह है कि जब तुम्हें ये सूरतें याद हैं तो तुम ग़रीब नहीं, बल्कि ग़नी हो, लिहाज़ा तुम्हें शादी करनी चाहिए। (आरिज़तुल अह्वज़ी)

﴿120﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: اَقْبَلْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَسَمِعَ رَجُلًا یَقْرَاُ قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَجَبَتْ، فَسَاَلْتُهُ: مَاذَا یَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْجَنَّةُ، قَالَ اَبُوْهُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ: فَاَرَدْتُ اَنْ اَذْهَبَ اِلَی الرَّجُلِ فَاُبَشِّرُهُ ثُمَّ فَرِقْتُ اَنْ یَفُوْتَنِی الْغَدَآءُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاٰثَرْتُ الْغَدَآءَ ثُمَّ ذَهَبْتُ اِلَی الرَّجُلِ فَوَجَدْتُهُ قَدْ ذَهَبَ.

رواه امام مالك فى الموطا، ماجاء فى قراءة قل هو الله احد، ص ١٩٣

120. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ आया। आप ﷺ ने एक शख़्स को 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ते हुए सुनकर इर्शाद फ़रमाया : वाजिब हो गई। मैंने पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या वाजिब हो गई? इर्शाद फ़रमाया : जन्नत वाजिब हो गई। हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं : मैंने चाहा कि उन साहब के पास जाकर यह ख़ुशख़बरी सुना दूं, फिर मुझे डर हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ दोपहर का खाना न छूट जाए तो मैंने खाने को तरजीह दी (कि आप ﷺ के साथ खाना सआदत की बात है) फिर उन साहब के पास गया तो देखा कि वह जा चुके थे। (मालिक)

﴿121﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اَیَعْجِزُ اَحَدُكُمْ اَنْ یَقْرَاَ فِیْ لَیْلَةٍ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ قَالُوْا: وَكَیْفَ یَقْرَاُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ قَالَ "قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ" یَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ.

رواه مسلم، باب فضل قراءة قل هو الله احد، رقم: ١٨٨٦

121. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स इस बात से आजिज़ है कि एक रात में तिहाई कुरआन पढ़ लिया करे? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : एक रात में तिहाई कुरआन कैसे कोई पढ़ सकता है? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' तिहाई कुरआन के बराबर है। (मुस्लिम)

﴿122﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ اَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَءَ "قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ" حَتّٰى يَخْتِمَهَا عَشْرَ مَرَّاتٍ بَنَى اللهُ لَهٗ قَصْرًا فِي الْجَنَّةِ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: اِذًا اَسْتَكْثِرُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللهُ اَكْثَرُ وَ اَطْيَبُ. رواه احمد ٣/٤٣٧

122. हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दस मर्तबा सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ी, अल्लाह तआ़ला जन्नत में उसके लिए एक महल बना देंगे। हज़रत उमर : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फिर तो मैं बहुत ज़्यादा पढ़ा करूंगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला भी बहुत ज़्यादा और बहुत उम्दा सवाब देने वाले हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿123﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا عَلٰى سَرِيَّةٍ وَكَانَ يَقْرَأُ لِاَصْحَابِهٖ فِيْ صَلَاتِهٖ فَيَخْتِمُ بِ "قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ" فَلَمَّا رَجَعُوْا ذَكَرُوْا ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: سَلُوْهُ لِاَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذٰلِكَ؟ فَسَاَلُوْهُ فَقَالَ: لِاَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمٰنِ، وَاَنَا اُحِبُّ اَنْ اَقْرَاَ بِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَخْبِرُوْهُ اَنَّ اللهَ يُحِبُّهٗ.

رواه البخاري، باب ما جاء في دعاء النبي ﷺ ...، رقم: ٧٣٧٥

123. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान करती हैं कि नबी करीम ﷺ ने एक शख़्स को लश्कर का अमीर बनाकर भेजा। वह अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते और (और जो भी सूरः पढ़ते उसके साथ) अख़ीर में 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ते। जब ये लोग वापस हुए तो उन्होंने उसका तज़्किरा नबी करीम ﷺ से किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उनसे पूछो कि वह ऐसा क्यों करते हैं? लोगों ने उनसे पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि इस सूरः में रहमान की सिफ़ात का बयान है इसलिए इसे ज़्यादा पढ़ना मुझे महबूब है। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन्हें बता दो कि अल्लाह तआ़ला भी उनसे मुहब्बत फ़रमाते हैं। (बुख़ारी)

﴿124﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ اِذَا اَوٰى اِلٰى فِرَاشِهٖ كُلَّ لَيْلَةٍ جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيْهِمَا فَقَرَاَ فِيْهِمَا: قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ، وَ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، وَقُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ، ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا مَا اسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهٖ، يَبْدَأُ بِهِمَا عَلٰى رَاْسِهٖ وَوَجْهِهٖ وَ مَا اَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهٖ، يَفْعَلُ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ۔

رواه ابوداؤد، باب ما يقول عند النوم، رقم:٥٠٥٦

124. हजरत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल था कि जब रात को सोने के लिए लेटते तो दोनों हथेलियों को मिलाते और (क़ुल हुवल्लाहु अहद) और (क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़) और (क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास) पढ़कर हथेलियों में दम फ़रमाते, फिर जहां तक आप ﷺ के मुबारक हाथ पहुंच सकते, उनको मुबारक जिस्म पर फेरते, पहले सर और चेहरे और जिस्म के सामने के हिस्से पर फेरते। यह अमल तीन मर्तबा फ़रमाते। (अबूदाऊद)

﴿125﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خُبَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ، فَلَمْ اَقُلْ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: قُلْ، فَلَمْ اَقُلْ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: قُلْ، فَقُلْتُ: مَا اَقُوْلُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ وَ الْمُعَوِّذَتَيْنِ، حِيْنَ تُمْسِيْ وَحِيْنَ تُصْبِحُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، تَكْفِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ۔ رواه ابوداؤد، باب ما يقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٨٢

125. हजरत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि (मुझे) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैं चुप रहा। फिर इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैं चुप रहा। फिर इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या कहूं? इर्शाद फ़रमाया : सुबह शाम 'क़ुल हुवल्लाहु अहद, क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़, क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास' तीन मर्तबा पढ़ लिया करो, ये सूरतें हर (तकलीफ़ देने वाली) चीज़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगी। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक इर्शादे नब्वी का मक़सद यह है कि जो लोग ज़्यादा न पढ़ सकें वह कम-से-कम ये तीन सूरतें सुबह व शाम पढ़ लिया करें, यही इन्शाअल्लाह काफ़ी होंगी। (शर्हुत्तैय्यिबी)

﴿126﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ! اِنَّكَ لَنْ تَقْرَاَ سُوْرَةً اَحَبَّ اِلَى اللهِ، وَلَا اَبْلَغَ عِنْدَهٗ، مِنْ اَنْ تَقْرَاَ "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ لَا تَفُوْتَكَ فِيْ صَلَاةٍ فَافْعَلْ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: واسناده قوى ٥/١٥١

126. हजरत उक़्बा बिन आमिर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (मुझ से)

इर्शाद फ़रमाया : ऐ उक़्बा बिन आमिर! तुम अल्लाह तआला के नज़दीक सूरः "क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़" से ज़्यादा महबूब और उससे ज़्यादा जल्द क़ुबूल होने वाली और कोई सूरः नहीं पढ़ सकते। लिहाज़ा जहां तक तुम से हो सके, उसको नमाज़ में पढ़ना मत छोड़ो। (इब्ने हब्बान)

﴿127﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَمْ تَرَ آيَاتٍ اُنْزِلَتِ اللَّيْلَةَ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ قَطُّ! "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ".

رواه مسلم، باب فضل قراءة المعوذتين، رقم: ١٨٩١

127. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज रात जो आयतें मुझ पर नाज़िल की गईं (वे ऐसी बेमिसाल हैं कि) उन-जैसी आयतें देखने में नहीं आईं। वह सूरः 'क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़' और सूरः 'क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास' हैं। (मुस्लिम)

﴿128﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا اَنَا اَسِيْرُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بَيْنَ الْجُحْفَةِ وَ الْاَبْوَاءِ اِذْ غَشِيَتْنَا رِيْحٌ وَظُلْمَةٌ شَدِيْدَةٌ، فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَتَعَوَّذُ بِـ "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" وَقُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" وَهُوَ يَقُوْلُ: يَا عُقْبَةُ! تَعَوَّذْ بِهِمَا، فَمَا تَعَوَّذَ مُتَعَوِّذٌ بِمِثْلِهِمَا قَالَ: وَسَمِعْتُهُ يَؤُمُّنَا بِهِمَا فِي الصَّلٰوةِ.

رواه ابو داؤد، باب في المعوذتين، رقم: ١٤٦٣

128. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं सफ़र में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जुह्फ़ा और अब्वा के दर्मियान चल रहा था कि अचानक आंधी और सख़्त अंधेरा हम पर छा गया। रसूलुल्लाह ﷺ 'क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़' और 'क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास' पढ़कर अल्लाह तआला की पनाह लेने लगे और मुझ से इर्शाद फ़रमाने लगे : उक़्बा! तुम भी ये दो सूरतें पढ़ कर अल्लाह तआला की पनाह लो। किसी पनाह लेने वाले ने उन-जैसी दो सूरतों की तरह किसी चीज़ से पनाह नहीं ली, यानी अल्लाह तआला की पनाह लेने में कोई दुआ ऐसी नहीं है जो इन दो सूरतों की तरह हो। इन ख़ुसूसियात में ये दो सूरतें बेमिसाल हैं। हज़रत उक़्बा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इमामत करते वक़्त इन दोनों सूरतों को पढ़ते हुए सुना। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : जुह्फ़ा और अब्वा मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के रास्ते में दो मशहूर मक़ाम थे। (बज़्लुलमज्हूद)

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह तआला के ज़िक्र के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى : ﴿فَاذْكُرُوْنِىْٓ اَذْكُرْكُمْ﴾ [البقرة: ١٥٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा। यानी दुनिया व आख़िरत में मेरी इनायात और एहसानात तुम्हारे साथ रहेंगे। (बक़रः 152)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا﴾ [المزمل: ٨]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप अपने रब के नाम को याद करते रहा कीजिए और हर तरफ़ से ला-तअल्लुक़ होकर उन्हीं की तरफ़ मुतवज्जह रहिए। (मुज़्ज़म्मिल 8)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ﴾ [الرعد: ٢٨]

एक जगह इर्शाद फ़रमाया : ख़ूब समझ लो, अल्लाह तआला के ज़िक्र ही से दिलों को इत्मीनान हुआ करता है। (राद : 28)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ﴾ [العنكبوت: ٤٥]

एक जगह इर्शाद है : और अल्लाह तआला की याद बहुत बड़ी चीज़ है। (अनकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ﴾

[آل عمران: ۱۹۱]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : अक़्लमंद वे लोग हैं जो खड़े और बैठे और लेटे, हर हाल में अल्लाह तआला को याद किया करते हैं। (आले इमरान : 191)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاذْكُرُوا اللهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا﴾ [البقرة: ۲۰۰]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करो जिस तरह तुम अपने बाप-दादा का ज़िक्र किया करते हो, बल्कि अल्लाह तआला का ज़िक्र उससे भी ज़्यादा किया करो। (बक़र: 20)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ﴾ [الاعراف: ۲۰۵]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : सुबह व शाम अपने रब को दिल ही दिल में आजिज़ी, ख़ौफ़ और पस्त आवाज़ से क़ुरआन करीम पढ़कर तस्बीह करते हुए याद करते रहिए, और ग़ाफ़िल न रहिए।

(आराफ़ : 205)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ﴾ [يونس: ٦١]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और तुम जिस हाल में होते हो या क़ुरआन में से कुछ पढ़ते हो या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उसमें मसरूफ़ होते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं।

(यूनुस : 61)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ۝ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ [الشعراء: ۲۱۷-۲۲۰]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप, उस ज़बरदस्त रहम करने वाले पर भरोसा रखिए, जो आप को उस वक़्त भी

देखता है जब आप तहज्जुद की नमाज़ के लिए खड़े होते हैं और उस वक़्त भी आपके उठने-बैठने को देखता है जब आप नमाज़ियों में होते हैं। बेशक वही ख़ूब सुनने वाला, जानने वाला है। (शुअ़रा :217-220)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ﴾ [الحديد: ٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अल्लाह तआला तुम्हारे साथ हैं जहां कहीं तुम हो। (हदीद : 4)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ﴾

[الزخرف: ٣٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल होता है, तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, फिर हर वक़्त वह उसके साथ रहता है। (ज़ुख़रुफ़ : 36)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ، لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ﴾

[الصافات: ١٤٣، ١٤٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : अगर यूनुस عليه السلام मछली के पेट में भी और मछली के पेट में जाने से पहले भी, अल्लाह तआला की कसरत से तस्बीह करने वाले न होते, तो क़ियामत तक मछली के पेट से निकलना नसीब नहीं होता (यानी मछली की ग़िज़ा बन जाते। मछली के पेट में हज़रत यूनुस عليه السلام की तस्बीह 'ला इला-ह इल्ला अन-त सुब-हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०' थी)। (साफ़्फ़ात : 143-144)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ﴾ [الروم: ١٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तो अल्लाह तआला की तस्बीह हर वक़्त किया करो, ख़ुसूसन शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (रूम : 17)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا، وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا﴾

[الاحزاب: ٤١، ٤٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! अल्लाह तआला को बहुत

करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह ब्यान किया करो। (अह्ज़ाब : 41-42)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾ [الاحزاب: ٥٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। (अह्ज़ाब : 56)

यानी अल्लाह तआ़ला अपनी ख़ास रहमत से अपने नबी को नवाज़ते हैं और उस ख़ास रहमत के भेजने के लिए फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला से दुआ़ किया करते हैं। लिहाज़ा मुसलमानो! तुम भी रसूलुल्लाह ﷺ के लिए उस ख़ास रहमत के नाज़िल होने की दुआ़ किया करो और आप पर कसरत से सलाम भेजा करो। (अह्ज़ाब)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ إِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوْٓا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۖ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ﴾ [آل عمران: ١٣٥-١٣٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तक़्वा वालों की सिफ़तों में से यह है कि वे लोग जब खुल्लम खुल्ला कोई बेहयाई का काम कर बैठते हैं या और कोई बुरी हरकत करके ख़ास अपनी ज़ात को नुक़्सान पहुंचाते हैं तो उसी लम्हा अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत व अ़ज़ाब को याद कर लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं, और बात भी यह है कि सिवाए अल्लाह तआ़ला के कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है? और बुरे काम पर वह अड़ते नहीं, और वे यक़ीन रखते हैं (कि तौबा से गुनाह माफ़ हो जाते हैं) यही वे लोग हैं जिनका बदला उनके रब की जानिब से बख़्शिश और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, ये लोग उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे। और काम करने वालों की कैसी अच्छी मज़दूरी है। (आले इमरान : 135-136)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ﴾ [الانفال: ٣٣]

अल्लाह तआला का इर्शाद फ़रमाया : और अल्लाह तआला की यह शान ही नहीं है कि लोग इस्तिग्फ़ार करने वाले हों और फिर उनको अज़ाब दें।(अनफ़ाल : 33)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ [النحل: ١١٩]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : फिर बेशक आप का रब उन लोगों के लिए जो नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर उस बुराई के बाद वह तौबा कर लें और अपने आमाल दुरुस्त कर लें, तो बेशक आप का रब उस तौबा के बाद बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (नह्ल : 119)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ [النمل: ٤٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम लोग अल्लाह तआला से इस्तग्फ़ार क्यों नहीं करते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (नम्ल : 46)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَتُوبُوا إِلَى اللهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ [النور: ٣١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! तुम सब अल्लाह तआला के सामने तौबा करो, ताकि तुम भलाई पाओ। (नूर : 31)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللهِ تَوْبَةً نَصُوحًا﴾ [التحريم: ٨]

एक जगह इर्शाद है : ईमान वालो! तुम अल्लाह तआला के सामने सच्चे दिल से तौबा करो (कि दिल में उस गुनाह का ख़्याल भी न रहे)। (तहरीम : 8)

नबी ﷺ की हदीसें

﴾129﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا عَمِلَ آدَمِيٌّ عَمَلًا أَنْجَى لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ تَعَالَى، قِيلَ: وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ؟ قَالَ: وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ إِلَّا أَنْ يَضْرِبَ بِسَيْفِهِ حَتَّى يَنْقَطِعَ.

رواه الطبراني في الصغير والاوسط و رجالهما رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٧١

129. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ ने नबी करीम ﷺ का यह इर्शाद नक़ल

किया है कि अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़कर किसी आदमी का कोई अ़मल अज़ाब से नजात दिलाने वाला नहीं है। अ़र्ज़ किया गया : अल्लाह तआला के रास्ते का जिहाद भी नहीं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद भी अल्लाह तआला के अ़ज़ाब से बचाने में अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़कर नहीं, मगर यह कि कोई ऐसी बहादुरी से जिहाद करे कि तलवार चलाते-चलाते टूट जाए, फिर तो यह अ़मल भी ज़िक्र की तरह अ़ज़ाब से बचाने वाला हो सकता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿130﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِيْ فَإِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهُ فِيْ نَفْسِيْ، وَإِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ مَلَإٍ ذَكَرْتُهُ فِيْ مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَ إِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِيْ يَمْشِيْ أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً.

رواه البخاري، باب قول الله تعالى و يحذركم الله نفسه ٦/٢٦٩٤ طبع دار ابن كثير بيروت

130. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूं जैसा वह मेरे साथ गुमान करता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूं। अगर वह मेरा मजमा में ज़िक्र करता है तो मैं उस मजमा से बेहतर यानी फ़रिश्तों के मजमा में उसका तज़्किरा करता हूं। अगर बन्दा मेरी तरफ़ एक बालिश्त मुतवज्जह होता है तो मैं एक हाथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। अगर वह मेरी तरफ़ एक हाथ बढ़ता है तो मैं दो हाथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। अगर वह मेरी तरफ़ चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूं। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स आमाले सालिहा के ज़रिए जितना ज़्यादा मेरा क़ुर्ब हासिल करता है, मैं उससे ज़्यादा अपनी रहमत और मदद के साथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं।

﴿131﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ: أَنَا مَعَ عَبْدِيْ إِذَا هُوَ ذَكَرَنِيْ وَ تَحَرَّكَتْ بِيْ شَفَتَاهُ. رواه ابن ماجه، باب فضل الذكر، رقم: ٣٧٩٢

131. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का इर्शाद है : जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और उसके होंट मेरी याद में हिलते रहते हैं, तो मैं उसके साथ होता हूं। (इब्ने माजा)

﴿132﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنَّ شَرَائِعَ الْإِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَأَخْبِرْنِيْ بِشَيْءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ، قَالَ: لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل الذكر، رقم: ٣٣٧٥

132. हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ से रिवायत है कि एक सहाबी ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अहकाम तो शरीअ़त के बहुत से हैं (जिन पर अ़मल तो ज़रूरी है ही, लेकिन) मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जिसको मैं अपना मामूल बना लूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से हर वक़्त तर रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿133﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ كَلِمَةٍ فَارَقْتُ عَلَيْهَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَخْبِرْنِيْ بِأَحَبِّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ! قَالَ: أَنْ تَمُوْتَ وَ لِسَانُكَ رَطْبٌ مِنْ ذِكْرِ اللهِ تَعَالَى. رواه ابن السني في عمل اليوم والليلة، رقم:٢، وقال المحقق: اخرجه البزار كما في كشف الاستار ولفظه: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ أَخْبِرْنِيْ بِأَفْضَلِ الْأَعْمَالِ وَ أَقْرَبِهَا إِلَى اللهِ...... الحديث و حسن الهيثمي اسناده في مجمع الزوائد ٧٤/١٠

133. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं मेरी आख़िरी गुफ़्तगू जो रसूलुल्लाह ﷺ से जुदाई के वक़्त हुई, वह यह थी—मैंने पूछा, तमाम आमाल में महबूब तरीन अ़मल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक क्या है? एक रिवायत में है कि हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा कि मुझे सबसे अफ़ज़ल अ़मल और अल्लाह का सबसे ज़्यादा क़ुर्ब दिलाने वाला अ़मल बताइए। इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मौत इस हाल में आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से तर हो (और यह उसी वक़्त हो सकता है जब ज़िन्दगी में ज़िक्र का इहतिमाम रहा हो)।

(अ़मलुल यौम वल्लैलः, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : जुदाई के वक़्त का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआ़ज़ ﷺ को यमन का अमीर बनाकर भेजा था, उस मौक़े पर यह गुफ़्तगू हुई थी।

﴿134﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيْكِكُمْ وَأَرْفَعِهَا فِيْ دَرَجَاتِكُمْ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، وَ خَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوْا أَعْنَاقَهُمْ وَ يَضْرِبُوْا أَعْنَاقَكُمْ؟ قَالُوْا: بَلَى، قَالَ: ذِكْرُ اللهِ تَعَالَى. رواه الترمذي، باب منه كتاب الدعوات، الرقم: ٣٣٧٧

134. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या

मैं तुम को ऐसा अमल न बताऊं जो तुम्हारे आमाल में सबसे बेहतर हो, तुम्हारे मालिक के नज़दीक सबसे ज़्यादा पाकीज़ा, तुम्हारे दर्जों को बहुत ज़्यादा बुलन्द करने वाला, सोने-चांदी को अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करने से भी बेहतर और जिहाद में तुम दुश्मनों को क़त्ल करो, ये तुमको क़त्ल करें उससे भी बढ़ा हुआ हो? सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : ज़रूर बताइए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह अमल अल्लाह तआला का ज़िक्र है। (तिर्मिज़ी)

﴾135﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَرْبَعٌ مَنْ اُعْطِيَهُنَّ فَقَدْ اُعْطِيَ خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ: قَلْبًا شَاكِرًا، وَ لِسَانًا ذَاكِرًا، وَ بَدَنًا عَلَى الْبَلَاءِ صَابِرًا، وَ زَوْجَةً لَا تَبْغِيْهِ حَوْبًا فِيْ نَفْسِهَا وَ لَا مَالِهِ.

رواه الطبراني في الكبير والاوسط ورجال الاوسط رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٢ ٥

135. हज़रत इब्ने अब्बास ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चार चीज़ें ऐसी हैं जिसको वे मिल गईं उसको दुनिया व आख़िरत की हर ख़ैर मिल गई। शुक्र करने वाला दिल, ज़िक्र करने वाली ज़बान, मुसीबतों पर सब्र करने वाला बदन और ऐसी बीवी जो न अपने नफ़्स में ख़ियानत करे, यानी पाक दामन रहे और न शौहर के माल में ख़ियानत करे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾136﴿ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ اِلَّا لِلّٰهِ مَنٌّ يَمُنُّ بِهٖ عَلٰى عِبَادِهٖ وَ صَدَقَةٌ، وَ مَا مَنَّ اللهُ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ عِبَادِهٖ اَفْضَلَ مِنْ اَنْ يُلْهِمَهُ ذِكْرَهُ. (وهو جزء من الحديث) رواه الطبراني في الكبير وفيه: موسى بن يعقوب الزمعي، وثقه ابن معين وابن حبان، وضعفه ابن المديني وغيره، وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٤٦٤/٢

136. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की तरफ़ से रोज़ाना दिन रात बन्दों पर एहसान और सदक़ा होता रहता है, लेकिन कोई एहसान किसी बन्दे पर इससे बढ़कर नहीं कि उसको अल्लाह तआला अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾137﴿ عَنْ حَنْظَلَةَ الْاُسَيْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ! اِنْ لَوْ تَدُوْمُوْنَ عَلٰى مَا تَكُوْنُوْنَ عِنْدِيْ، وَفِي الذِّكْرِ، لَصَافَحَتْكُمُ الْمَلَائِكَةُ عَلٰى فُرُشِكُمْ، وَفِيْ طُرُقِكُمْ، وَلٰكِنْ، يَا حَنْظَلَةُ! سَاعَةً وَسَاعَةً ثَلَاثَ مِرَارٍ.

رواه مسلم، باب فضل دوام الذكر... رقم: ٦٩٦٦

137. हज़रत हनज़ला उसैदी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुम्हारा हाल वैसा रहे जैसा मेरे पास होता है और तुम हर वक़्त अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशग़ूल रहो, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुमसे मुसाफ़हा करने लगें, लेकिन हनज़ला बात यह है कि यह कैफ़ियत कभी-कभी होती है। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई, यानी इंसान की एक ही कैफ़ियत हर वक़्त नहीं रहती बल्कि हालात के एतबार से बदलती रहती है। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ يَتَحَسَّرُ اَهْلُ الْجَنَّةِ عَلٰى شَيْءٍ اِلَّا عَلٰى سَاعَةٍ مَرَّتْ بِهِمْ لَمْ يَذْكُرُوااللهَ عَزَّوَجَلَّ فِيْهَا.

رواه الطبراني في الكبير والبيهقي في شعب الايمان و هو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/٤٦٨

138. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत वालों को जन्नत में जाने के बाद दुनिया की किसी चीज़ का अफ़सोस नहीं होगा सिवाए उस घड़ी के जो दुनिया में अल्लाह तआला के ज़िक्र के बग़ैर गुज़री होगी। (तबरानी, बैहक़ी, जामेअ़ सग़ीर)

﴿139﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَدُّوا حَقَّ الْمَجَالِسِ: اُذْكُرُوا اللهَ كَثِيْرًا. (الحديث) رواه الطبراني في الكبير وهو حديث حسن، الجامع الصغير ١/٥٣

139. हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज्लिसों का हक़ अदा किया करो (उसमें से एक यह है कि) अल्लाह तआला का ज़िक्र उनमें कसरत से करो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿140﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ رَاكِبٍ يَخْلُوْ فِيْ مَسِيْرِهٖ بِاللهِ وَ ذِكْرِهٖ اِلَّا رَدِفَهٗ مَلَكٌ، وَلَا يَخْلُوْ بِشِعْرٍ وَ نَحْوِهٖ اِلَّا رَدِفَهٗ شَيْطَانٌ.

رواه الطبراني و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/١٨٥

140. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो सवार अपने सफ़र में दुन्यावी बातों से दिल हटा कर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान रखता है, तो फ़रिश्ता उसके साथ रहता है और जो शख़्स बेहूदा अश्आ़र या किसी और बेकार काम में लगा रहता है, तो शैतान उसके साथ रहता है। (तबरानी,

﴿141﴾ عَنْ اَبِىْ مُوْسٰى رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِىْ لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ. (رواه البخارى، باب فضل ذكر الله عزوجل، رقم: ٦٤٠٧ وفى رواية لمسلم: مَثَلُ الْبَيْتِ الَّذِىْ يُذْكَرُ اللهُ فِيْهِ وَالْبَيْتُ الَّذِىْ لَا يُذْكَرُ اللهُ فِيْهِ مَثَلُ الْحَيِّ وَ الْمَيِّتِ باب استحباب صلاة النافلة فى بيته...... رقم: ١٨٢٣

141. हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता, उन दोनों की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दे की तरह है। ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है। एक रिवायत में यह भी है कि उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाता हो ज़िन्दा शख़्स की तरह है, यानी आबाद है और जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र न होता हो वह मुर्दा शख़्स की तरह है यानी वीरान है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

﴿142﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّ رَجُلًا سَاَلَهُ فَقَالَ: اَىُّ الْجِهَادِ اَعْظَمُ اَجْرًا؟ قَالَ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى ذِكْرًا قَالَ: فَاَىُّ الصَّائِمِيْنَ اَعْظَمُ اَجْرًا قَالَ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى ذِكْرًا، ثُمَّ ذَكَرَلَنَا الصَّلٰوةَ وَالزَّكٰوةَ وَ الْحَجَّ وَ الصَّدَقَةَ كُلُّ ذٰلِكَ وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى ذِكْرًا فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ لِعُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ: يَا اَبَا حَفْصٍ! ذَهَبَ الذَّاكِرُوْنَ بِكُلِّ خَيْرٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَجَلْ. رواه احمد ٤٣٨/٣

142. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : कौन से जिहाद का अज्र सबसे ज़्यादा है? इर्शाद फ़रमाया : जिस जिहाद में अल्लाह तआला का ज़िक्र सबसे ज़्यादा हो। पूछा : रोज़ेदारों में सबसे ज़्यादा अज्र किसे मिलेगा? इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला हो। फिर उसी तरह नमाज़, ज़कात, हज और सदक़ा के मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि वह नमाज़, ज़कात, हज और सदक़ा अफ़ज़ल है जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र ज़्यादा हो। हज़रत अबूबक्र ﷺ ने हज़रत उमर ﷺ से फ़रमाया : अबू हफ़्स! ज़िक्र करने वाले सारी ख़ैर व भलाई ले गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिल्कुल ठीक कहते हो। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : अबू हफ़्स हज़रत उमर ﷺ की कुन्नियत है।

﴿143﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ، قَالُوْا: وَ مَا الْمُفَرِّدُوْنَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْمُسْتَهْتَرُوْنَ فِيْ ذِكْرِ اللهِ يَضَعُ الذِّكْرُ عَنْهُمْ أَثْقَالَهُمْ فَيَأْتُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خِفَافًا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب سبق المفردون ..... رقم: ٣٥٩٦

143. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुफ़र्रिद लोग बहुत आगे बढ़ गए। सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुफ़र्रिद लोग कौन हैं? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के ज़िक्र में मर मिटने वाले, ज़िक्र उनके बोझों को हल्का कर देगा, चुनांचे वे क़ियामत के दिन हल्के-फुल्के आएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿144﴾ عَنْ أَبِي مُوْسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّ رَجُلًا فِيْ حِجْرِهِ دَرَاهِمُ يُقَسِّمُهَا، وَ آخَرُ يَذْكُرُ اللهَ كَانَ ذِكْرُ اللهِ أَفْضَلَ.

رواه الطبراني في الاوسط و رجاله وثقوا، مجمع الزوائد ٧٢/١٠

144. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर एक शख़्स के पास बहुत-से रुपये हों और वह उनको तक़सीम कर रहा हो और दूसरा शख़्स अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशग़ूल हो, तो अल्लाह तआला का ज़िक्र (करने वाला) अफ़ज़ल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿145﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَكْثَرَ ذِكْرَ اللهِ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ النِّفَاقِ. رواه الطبراني في الصغير و هو حديث صحيح، الجامع الصغير ٥٧٩/٢

145. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत से करे, वह निफ़ाक़ से बरी है। (तबरानी, जामेअ् सग़ीर)

﴿146﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيَذْكُرَنَّ اللهَ قَوْمٌ عَلَى الْفُرُشِ الْمُمَهَّدَةِ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّاتِ الْعُلٰى.

رواه ابو يعلى و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٨٠/١٠

146. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बहुत से लोग ऐसे हैं जो नर्म-नर्म बिस्तरों पर अल्लाह त[illegible]

करते हैं, अल्लाह तआ़ला उस ज़िक्र की बरकत से उनको जन्नत के आला दर्जों में पहुंचा देते हैं। (अबूयाला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿147﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى الْفَجْرَ تَرَبَّعَ فِي مَجْلِسِهِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ حَسْنَاءَ. رواه ابوداؤد، باب في الرجل يجلس متربعا، رقم: ٤٨٥٠

147. हज़रत जाबिर बिन समुरः ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ जब फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते, तो चार ज़ानूं बैठ जाते, यहां तक कि सूरज अच्छी तरह निकल आता। (अबूदाऊद)

﴿148﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُوْنَ اللهَ تَعَالَى مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً مِنْ وُلْدِ إِسْمَاعِيْلَ، وَ لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُوْنَ اللهَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً. رواه ابوداؤد، باب في القصص، رقم: ٣٦٦٧

148. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सुबह की नमाज़ के बाद से आफ़ताब निकलने तक ऐसी जमाअ़त के साथ बैठूं, जो अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल हो। यह मुझे हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है, इसी तरह मैं अ़स्र की नमाज़ के बाद से आफ़ताब गुरूब होने तक ऐसी जमाअ़त के साथ बैठूं जो अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल हो यह मुझे हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद का ज़िक्र इसलिए फ़रमाया कि वे अरबों में अफ़ज़ल और शरीफ़ होने की वजह से ज़्यादा क़ीमती हैं।

﴿149﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ مَلَائِكَةً يَطُوْفُوْنَ فِي الطُّرُقِ يَلْتَمِسُوْنَ أَهْلَ الذِّكْرِ، فَإِذَا وَجَدُوْا قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ اللهَ تَنَادَوْا: هَلُمُّوْا إِلَى حَاجَتِكُمْ، فَيَحُفُّوْنَهُمْ بِأَجْنِحَتِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، قَالَ: فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ عَزَّ وَجَلَّ، وَ هُوَ أَعْلَمُ مِنْهُمْ: مَا يَقُوْلُ عِبَادِيْ؟ قَالَ: تَقُوْلُ: يُسَبِّحُوْنَكَ وَ يُكَبِّرُوْنَكَ، وَيَحْمَدُوْنَكَ، وَ يُمَجِّدُوْنَكَ فَيَقُوْلُ: هَلْ رَأَوْنِيْ؟ قَالَ فَيَقُوْلُوْنَ: لَا، وَ اللهِ مَا رَأَوْكَ، قَالَ فَيَقُوْلُ: كَيْفَ لَوْ رَأَوْنِيْ؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَوْ رَأَوْكَ كَانُوْا أَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً، وَأَشَدَّ لَكَ تَمْجِيْدًا، وَأَكْثَرَ لَكَ

تَسْبِيْحًا، قَالَ يَقُوْلُ: فَمَا يَسْاَلُوْنِيْ؟ قَالَ: يَسْاَلُوْنَكَ الْجَنَّةَ، قَالَ يَقُوْلُ: وَ هَلْ رَاَوْهَا؟
قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَا، وَاللّٰهِ يَارَبِّ مَارَاَوْهَا، قَالَ فَيَقُوْلُ: فَكَيْفَ لَوْ اَنَّهُمْ رَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ:
لَوْ اَنَّهُمْ رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا وَ اَشَدَّ لَهَا طَلَبًا وَ اَعْظَمَ فِيْهَا رَغْبَةً، قَالَ: فَمِمَّ
يَتَعَوَّذُوْنَ؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: مِنَ النَّارِ، قَالَ يَقُوْلُ: وَ هَلْ رَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَا، وَاللّٰهِ يَا رَبِّ
مَا رَاَوْهَا، قَالَ يَقُوْلُ: فَكَيْفَ لَوْرَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَوْ رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا وَاَشَدَّ
لَهَا مَخَافَةً، قَالَ فَيَقُوْلُ: فَاُشْهِدُكُمْ اَنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ قَالَ يَقُوْلُ مَلَكٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ:
فِيْهِمْ فُلَانٌ لَيْسَ مِنْهُمْ اِنَّمَا جَاءَ لِحَاجَةٍ قَالَ: هُمُ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ۔

رواه البخاري، باب فضل ذكر الله عزّوجلّ، رقم:٦٤٠٨

149. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़रिश्तों की एक जमाअत है, जो रास्तों में अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों की तलाश में घूमती फिरती है। जब वे किसी ऐसी जमाअत को पा लेते हैं जो अल्लाह तआला के ज़िक्र में मसरूफ़ होती है तो एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि आओ यहां तुम्हारी मतलूबा चीज़ है। उसके बाद वे सब फ़रिश्ते मिलकर आसमाने दुनिया तक उन लोगों को अपने परों से घेर लेते हैं। अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों से पूछते हैं, जबकि अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों से ज़्यादा बाख़बर हैं कि मेरे बन्दे क्या कह रहे हैं? फ़रिश्ते जवाब में कहते हैं : वे आपकी पाकी, बड़ाई, तारीफ़ और बुज़ुर्गी ब्यान करने में मशगूल हैं। फिर अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों से पूछते हैं, क्या उन्होंने मुझे देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं : अल्लाह की क़सम! उन्होंने आप को देखा तो नहीं। इर्शाद होता है कि अगर देख लेते तो क्या हाल होता? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं : अगर वह आप को देख लेते तो और भी ज़्यादा इबादत में मशगूल होते और इससे भी ज़्यादा आपकी तस्बीह और तारीफ़ करते। फिर अल्लाह तआला का इर्शाद होता है कि वे मुझसे क्या मांग रहे हैं? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि वे आप से जन्नत का सवाल कर रहे हैं। इर्शाद होता है : क्या उन्होंने जन्नत को देखा है? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं : अल्लाह की क़सम! ऐ रब! उन्होंने जन्नत को देखा तो नहीं। अल्लाह तआला का इर्शाद होता है कि अगर वह जन्नत को देख लेते तो उनका क्या हाल होता? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं : अगर वह उसको देख लेते तो उससे भी ज़्याया जन्नत के शौक़, तमन्ना और उसकी तलब में लग जाते। फिर अल्लाह तआला का इर्शाद होता है : किस चीज़ से पनाह मांग रहे हैं? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं : वे जहन्नम से पनाह मांग रहे हैं। अल्लाह तआला का इर्शाद होता है : क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है? फ़रिश्ते अर्ज़ करते

हैं : अल्लाह की क़सम! ऐ रब! उन्होंने देखा तो नहीं। इर्शाद होता है : अगर देख लेते तो क्या हाल होता? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर देख लेते तो और भी ज़्यादा उससे डरते और भागने की कोशिश करते। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है : अच्छा तुम गवाह रहो मैंने इन मज्लिस वालों को बख़्श दिया। एक फ़रिश्ता एक शख़्स के बारे में अ़र्ज़ करता है कि वह शख़्स अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र करने वालों में शामिल नहीं था, बल्कि वह अपनी किसी ज़रूरत से मज्लिस में आया था (और उनके साथ बैठ गया था)। इर्शाद होता है : ये लोग ऐसी मज्लिस वाले हैं कि उनके साथ बैठने वाला भी (अल्लाह तआ़ला की रहमत से) महरूम नहीं होता। (बुख़ारी)

﴿150﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ لِلّٰهِ سَيَّارَةً مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَطْلُبُوْنَ حِلَقَ الذِّكْرِ، فَإِذَا اَتَوْا عَلَيْهِمْ وَ حَفُّوْا بِهِمْ، ثُمَّ بَعَثُوْا رَائِدَهُمْ إِلَى السَّمَاءِ إِلٰى رَبِّ الْعِزَّةِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى، فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا اَتَيْنَا عَلٰى عِبَادٍ مِنْ عِبَادِكَ يُعَظِّمُوْنَ آلَاءَكَ، وَ يَتْلُوْنَ كِتَابَكَ، وَيُصَلُّوْنَ عَلٰى نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَ يَسْأَلُوْنَكَ لِآخِرَتِهِمْ وَدُنْيَاهُمْ، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: غَشُّوْهُمْ رَحْمَتِيْ، فَيَقُوْلُوْنَ: يَا رَبِّ، إِنَّ فِيْهِمْ فُلَانًا الْخَطَّاءَ إِنَّمَا اعْتَنَقَهُمْ اِعْتِنَاقًا، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: غَشُّوْهُمْ رَحْمَتِيْ، فَهُمُ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ.

رواه البزار من طريق زائدة بن ابي الرقاد، عن زياد النميري، و

كلاهما وثق على ضعف، فعاد هذا اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٧٧

150. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्तों की चलने फिरने वाली एक जमाअ़त है जो ज़िक्र के हल्क़ों की तलाश में होती है। जब वह ज़िक्र के हल्क़ों के पास आती है और उनको घेर लेती है तो अपना एक क़ासिद (पैग़ाम देकर) अल्लाह तआ़ला के पास आसमान पर भेजती है। वह उन सबकी तरफ़ से अ़र्ज़ करता है : हमारे रब! हम आपके उन बन्दों के पास से आए हैं जो आपकी नेमतों (क़ुरआन, ईमान, इस्लाम) की बड़ाई ब्यान कर रहे हैं, आपकी किताब की तिलावत कर रहे हैं, आपके नबी मुहम्मद ﷺ पर दुरूद शरीफ़ भेज रहे हैं और अपनी आख़िरत और दुनिया की भलाई आप से मांग रहे हैं। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाते हैं : उनको मेरी रहमत से ढांप दो। फ़रिश्ते कहते हैं : हमारे रब! उनके साथ-साथ एक गुनहगार बन्दा भी था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : उन सबको मेरी रहमत से ढांप दो, क्योंकि यह ऐसे लोगों की मज्लिस

है कि उनमें बैठने वाला भी (अल्लाह तआला की रहमत से) महरूम नहीं होता।
(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿151﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ قَوْمٍ اجْتَمَعُوْا يَذْكُرُوْنَ اللهَ عَزَّوَجَلَّ لَا يُرِيْدُوْنَ بِذٰلِكَ إِلَّا وَجْهَهُ إِلَّا نَادَاهُمْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَآءِ أَنْ قُوْمُوْا مَغْفُوْرًا لَكُمْ، فَقَدْ بُدِّلَتْ سَيِّئَاتُكُمْ حَسَنَاتٍ. رواه احمد وابو يعلى والبزار والطبراني في الاوسط، وفيه: ميمون المرئي، وثقه جماعة، وفيه ضعف، وبقية رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٧٥

151. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए जमा हों, और उनका मक़सूद सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की रज़ा हो तो आसमान से एक फ़रिश्ता (अल्लाह तआला के हुक्म से उस मज्लिस के ख़त्म होने पर) एलान करता है कि बख़्शे-बख़्शाए उठ जाओ। तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया गया है।
(मुस्नद अहमद, तबरानी, अबू याला, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿152﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ وَ أَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللهَ عَزَّوَجَلَّ إِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ، وَ ذَكَرَهُمُ اللهُ فِيْمَنْ عِنْدَهُ.

رواه مسلم، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن ... رقم: ٦٨٥٥

152. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ दोनों हज़रात इस बात की गवाही देते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो जमाअत अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशग़ूल हो, फ़रिश्ते उस जमाअत को घेर लेते हैं, रहमत उनको ढांप लेती है, सकीनत उनपर नाज़िल होती है और अल्लाह तआला उनका तज़्किरा फ़रिश्तों की मज्लिस में फ़रमाते हैं।
(मुस्लिम)

﴿153﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيَبْعَثَنَّ اللهُ أَقْوَامًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْ وُجُوْهِهِمُ النُّوْرُ عَلَى مَنَابِرِ اللُّؤْلُؤِ، يَغْبِطُهُمُ النَّاسُ، لَيْسُوْا بِأَنْبِيَاءَ وَ لَا شُهَدَاءَ قَالَ: فَجَثَا أَعْرَابِيٌّ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! حِلْهِمْ لَنَا نَعْرِفْهُمْ، قَالَ: هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِي اللهِ، مِنْ قَبَائِلَ شَتّٰى وَ بِلَادٍ شَتّٰى يَجْتَمِعُوْنَ عَلَى ذِكْرِ اللهِ يَذْكُرُوْنَهُ.

رواه الطبراني واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٧٧

153. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला बाज़ लोगों का हश्र इस तरह फ़रमाएंगे कि उनके चेहरों पर नूर चमकता हुआ होगा, वे मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करते होंगे, वे अम्बिया और शुहदा नहीं होंगे। एक देहात के रहने वाले (सहाबी) ने घुटनों के बल बैठ कर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उनका हाल ब्यान कर दीजिए कि हम उनको पहचान लें। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों से मुख़्तलिफ़ जगहों से आकर एक जगह जमा हो गए हों और अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशगूल हों।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾154﴿ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: عَنْ يَمِيْنِ الرَّحْمٰنِ.وَكِلْتَا يَدَيْهِ يَمِيْنٌ.رِجَالٌ لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ،وَلَا شُهَدَاءَ، يَغْشٰى بَيَاضُ وُجُوْهِهِمْ نَظَرَ النَّاظِرِيْنَ، يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ بِمَقْعَدِهِمْ، وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمْ جُمَّاعٌ مِنْ نَوَازِعِ الْقَبَائِلِ، يَجْتَمِعُوْنَ عَلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ، فَيَنْتَقُوْنَ اَطَايِبَ الْكَلَامِ، كَمَا يَنْتَقِيْ آكِلُ التَّمْرِ اَطَايِبَهٗ.

رواه الطبراني و رجاله موثقون، مجمع الزوائد ١٠/٧٨

154. हज़रत अम्र बिन अ़बसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : रहमान के दाहिनी तरफ़। और उनके दोनों ही हाथ दाहिने हैं। कुछ ऐसे होंगे कि वे न तो नबी होंगे न शहीद, उनके चेहरों की नूरानियत देखने वालों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह रखेगी, उनके बुलन्द मक़ाम और अल्लाह तआला से उनके क़रीब होने की वजह से अम्बिया और शुहदा भी उन पर रश्क करते होंगे। पूछा गया : या रसूलुल्लाह! वे कौन लोग होंगे? इर्शाद फ़रमाया : ये वह लोग होंगे जो मुख़्तलिफ़ खानदानों से अपने घर वालों और रिश्तेदारों से दूर होकर अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए (एक जगह) जमा होते थे और ये सब इस तरह छांट-छांट कर अच्छी बातें करते थे, जैसे खजूरें खाने वाला (खजूरों के ढेर में से) अच्छी खूजूरें छांट कर निकालता रहता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में रहमान के दाहिने तरफ़ होने से मुराद यह है कि उन लोगों का अल्लाह तआला के यहां ख़ास मक़ाम होगा। रहमान के दोनों हाथ दाहिने हैं का मतलब यह है कि जैसे दाहिना हाथ ख़ूबियों वाला है, ऐसे

ही अल्लाह तआला की ज़ात में ख़ूबियां ही हैं।

अम्बिया ﷺ और शुहदा का उन पर रश्क करना उन लोगों के इस ख़ास अमल की वजह से होगा अगरचे हज़रात अम्बिया ﷺ और शुहदा का दर्जा उनसे कहीं ज़्यादा होगा। (मज्मअ़ुबहारुल अनवार)

﴿155﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِيْ بَعْضِ اَبْيَاتِهِ﴿وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ﴾ خَرَجَ يَلْتَمِسُ فَوَجَدَ قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ مِنْهُمْ ثَائِرُ الرَّاْسِ وَ جَافُّ الْجِلْدِ وَ ذُو الثَّوْبِ الْوَاحِدِ فَلَمَّا رَآهُمْ جَلَسَ مَعَهُمْ فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ فِيْ اُمَّتِيْ مَنْ اَمَرَنِيْ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ. رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨٩/٧

155. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन सहल बिन हुनैफ़ ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ अपने घर में थे कि आप पर यह आयत उतरी : तर्जुमा : अपने आपको उन लोगों के पास (बैठने का) पाबन्द कीजिए जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं। नबी करीम ﷺ इस आयत के नाज़िल होने पर उन लोगों की तलाश में निकले। एक जमाअ़त को देखा कि अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशग़ूल है। बाज़ लोग उनमें बिखरे हुए बालों वाले, ख़ुश्क खालों वाले और सिर्फ़ एक कपड़े वाले हैं (कि सिर्फ़ एक लुंगी उनके पास है) जब नबी करीम ﷺ ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला ही के लिए हैं, जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़रमाए कि मुझे ख़ुद उनके पास बैठने का हुक्म फ़रमाया है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿156﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا غَنِيْمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ؟ قَالَ: غَنِيْمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ الْجَنَّةُ الْجَنَّةُ.

رواه احمد و الطبراني واسناد احمد حسن، مجمع الزوائد ٧٨/١٠

156. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़िक्र की मज्लिस का क्या अज्र व इनाम है? इर्शाद फ़रमाया : ज़िक्र की मज्लिस का अज्र व इनाम जन्नत है, जन्नत।(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿157﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ

وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، سَيَعْلَمُ اَهْلُ الْجَمْعِ مَنْ اَهْلُ الْكَرَمِ، فَقِيْلَ: وَ مَنْ اَهْلُ الْكَرَمِ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: مَجَالِسُ الذِّكْرِ فِي الْمَسَاجِدِ.

رواه احمد باسنادين واحدهما حسن وابو يعلى كذلك، مجمع الزوائد ١٠/٧٥

157. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला एलान फ़रमाएंगे कि आज क़ियामत के दिन मैदान में जमा होने वालों को मालूम हो जाएगा कि इज़्ज़त व एहतराम वाले कौन लोग हैं। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! ये इज़्ज़त व एहतराम वाले कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : मसाजिद में ज़िक्र की मज्लिसों (वाले)।

(मुस्नद अहमद, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿158﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوْا، قَالُوْا: وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: حِلَقُ الذِّكْرِ.

رواه الترمذي، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب حديث في أسماء الله الحسنى، رقم: ٣٥١٠

158. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो तो ख़ूब चरो। सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : ज़िक्र के हल्क़े। (तिर्मिज़ी)

﴿159﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ خَرَجَ عَلٰى حَلْقَةٍ مِنْ اَصْحَابِهٖ فَقَالَ: مَا اَجْلَسَكُمْ؟ قَالُوْا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللهَ وَ نَحْمَدُهُ عَلٰى مَا هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ، وَ مَنَّ بِهٖ عَلَيْنَا، قَالَ: آللهِ! مَا اَجْلَسَكُمْ اِلَّا ذَاكَ؟ قَالُوْا: وَ اللهِ! مَا اَجْلَسَنَا اِلَّا ذَاكَ، قَالَ: اَمَا اِنِّيْ لَمْ اَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ، وَ لٰكِنَّهُ اَتَانِيْ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَاَخْبَرَنِيْ اَنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِيْ بِكُمُ الْمَلَائِكَةَ.

رواه مسلم، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر، رقم: ٦٨٥٧

159. हज़रत मुआविया ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सहाबा के एक हल्क़े में तशरीफ़ ले गए और उनसे दरयाफ़्त फ़रमाया : हम लोग अल्लाह तआला का ज़िक्र करने और इस बात का शुक्र अदा करने के लिए बैठे हैं कि अल्लाह तआला ने हम को इस्लाम की हिदायत देकर हम पर एहसान किया है। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! क्या तुम सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हो? सहाबा ने अर्ज़ किया : अल्लाह तआला की क़सम! सिर्फ़ इसीलिए बैठे हैं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : मैंने तुम्हें झूठा समझ कर क़सम नहीं ली, बल्कि बात यह है कि जिबरईल ﷺ मेरे पास आए थे और यह ख़बर सुना गए कि अल्लाह तआला तुम लोगों की वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख्र फ़रमा रहे हैं। (मुस्लिम)

﴿160﴾ عَنْ اَبِیْ رَزِیْنٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ قَالَ لَہٗ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَلاَ اَدُلُّكَ عَلٰی مِلَاكِ ھٰذَا الْاَمْرِ الَّذِیْ تُصِیْبُ بِہٖ خَیْرَ الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَۃِ؟ عَلَیْكَ بِمَجَالِسِ اَھْلِ الذِّکْرِ وَ اِذَا خَلَوْتَ فَحَرِّكْ لِسَانَكَ مَا اسْتَطَعْتَ بِذِکْرِ اللّٰہِ۔

(الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان، مشكوة المصابيح رقم: ٥٠٢٥

160. हज़रत अबू रज़ीन ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमको दीन की बुनियादी चीज़ न बताऊं जिससे तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल कर लो? अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों की मज्लिसों में बैठा करो और तन्हाई में भी जितना हो सके अल्लाह तआला के ज़िक्र में अपनी ज़बान को हरकत में रखो। (बैहक़ी, मिश्कात)

﴿161﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا قَالَ: قِیْلَ: یَارَسُوْلَ اللّٰہِ! اَیُّ جُلَسَائِنَا خَیْرٌ؟ قَالَ: مَنْ ذَکَّرَکُمُ اللّٰہَ رُؤْیَتُہٗ وَزَادَ فِیْ عَمَلِکُمْ مَنْطِقُہٗ، وَذَکَّرَکُمْ بِالْاٰخِرَۃِ عَمَلُہٗ۔

رواه ابو يعلى وفيه مبارك بن حسان، وقد وثق وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٩

161. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया गया : हमारे लिए किस शख़्स के पास बैठना बेहतर है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको देखने से तुम्हें अल्लाह तआला याद आएं, जिसकी बात से तुम्हारे अ़मल में तरक्क़ी हो और जिसके अ़मल से तुम्हें आख़िरत याद आ जाए।

(अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿162﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَکَرَ اللّٰہَ فَفَاضَتْ عَیْنَاہُ مِنْ خَشْیَۃِ اللّٰہِ حَتّٰی یُصِیْبَ الْاَرْضَ مِنْ دُمُوْعِہٖ لَمْ یُعَذِّبْہُ اللّٰہُ تَعَالٰی یَوْمَ الْقِیَامَۃِ۔

رواه الحاكم و قال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه و وافقه الذهبي ٤/٢٦٠

162. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला का ज़िक्र करे और अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से उसकी आंखों से कुछ आंसू ज़मीन पर गिर पड़ें तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे अ़ज़ाब नहीं देंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿163﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَى اللهِ مِنْ قَطْرَتَيْنِ وَ أَثَرَيْنِ: قَطْرَةٌ مِنْ دُمُوْعٍ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ، وَقَطْرَةُ دَمٍ تُهَرَاقُ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَأَمَّا الْأَثَرَانِ فَأَثَرٌ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَأَثَرٌ فِي فَرِيْضَةٍ مِنْ فَرَائِضِ اللهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في فضل المرابط، رقم: ١٦٦٩

163. हज़रत अबू उमामा ﵁ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला को दो क़तरे और दो निशानों से ज़्यादा कोई चीज़ महबूब नहीं। एक आंसू का क़तरा जो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से निकले, दूसरा ख़ून का क़तरा जो अल्लाह तआला के रास्ते में बह जाए और दो निशानों में एक अल्लाह तआला का कोई निशान (जैसे ज़ख़्म या अल्लाह तआला के रास्ते में चलने का निशान) और एक वह निशान जो अल्लाह तआला के किसी फ़रीज़े की अदाइगी में पड़ गया हो (जैसे सज्दा या सफ़रे हज वग़ैरह का कोई निशान)। (तिर्मिज़ी)

﴿164﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: إِمَامٌ عَدْلٌ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسَاجِدِ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللهِ، اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِيْنُهُ وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ.

رواه البخاري، باب الصدقة باليمين، رقم: ١٤٢٣

164. हज़रत अबू हुरैरह ﵁ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात आदमी हैं जिनको अल्लाह तआला अपनी रहमत के साए में ऐसे दिन जगह अता फ़रमाएंगे, जिस दिन उसके साए के अलावा कोई साया न होगा—1. आदिल बादशाह, 2. वह जवान जो जवानी में अल्लाह तआला की इबादत करता हो, 3. वह शख़्स जिसका दिल हर वक़्त मस्जिद में लगा रहता हो, 4. दो ऐसे शख़्स जो अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत रखते हों, उनके मिलने और जुदा होने की बुनियाद यही हो, 5. वह शख़्स जिसको कोई ऊंचे ख़ानदान वाली हसीन औरत अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे और वह कह दे, मैं तो अल्लाह तआला से डरता हूं, 6. वह शख़्स जो इस तरह छुपा कर सदक़ा करे कि बाएं हाथ को भी ख़बर न हो कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है, 7. वह शख़्स जो अल्लाह तआला का ज़िक्र तन्हाई में करे और आंसू बहने लगें। (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللهَ فِيْهِ وَ لَمْ يُصَلُّوا عَلٰى نَبِيِّهِمْ اِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً فَاِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَاِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُمْ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء فی القوم یجلسون ولا یذکرون الله، رقم ۳۳۸۰

165. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी मज्लिस में बैठें, जिसमें न अल्लाह तआला का ज़िक्र करें और न अपने नबी पर दुरूद भेजें, तो वह मज्लिस उनके लिए क़ियामत के दिन ख़सारे का सबब होगी। अब यह अल्लाह तआला को इख़्तियार है, चाहे उनको अज़ाब दें, चाहे माफ़ फ़रमा दें। (तिर्मिज़ी)

﴿166﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَعَدَ مَقْعَدًا لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَا يَذْكُرُ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ۔ رواه ابوداؤد، باب كراهية ان يقوم الرجل من مجلسه ولا يذكر الله، رقم: ۴۸۵۶

166. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मज्लिस में बैठे, जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र न करे तो वह मज्लिस उसके लिए नुक़सानदेह होगी और जो शख़्स लेटने के वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र न करे, तो यह लेटना भी उसके लिए नुक़सानदेह होगा। (अबूदाऊद)

﴿167﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا قَعَدَ قَوْمٌ مَقْعَدًا لَا يَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْهِ وَ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ، اِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَ اِنْ اُدْخِلُوا الْجَنَّةَ لِلثَّوَابِ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: إسناده صحيح ۳۵۲/۲

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी मज्लिस में बैठें जिसमें न अल्लाह तआला का ज़िक्र करें और न नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजें तो उनको क़ियामत के दिन (ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ के) सवाब को देखते हुए उस मज्लिस पर अफ़सोस होगा, अगरचे वे लोग (अपनी दूसरी नेकियों की वजह से) जन्नत में दाख़िल भी हो जाएं। (इब्ने हब्बान)

﴿168﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُوْمُوْنَ مِنْ مَجْلِسٍ لَا يَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْهِ اِلَّا قَامُوْا عَنْ مِثْلِ جِيْفَةِ حِمَارٍ وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةً۔

رواه ابوداؤد، باب كراهية ان يقوم الرجل من مجلسه ولا يذكر الله، رقم ۴۸۵۵

108. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी ऐसी मज्लिस से उठते हैं जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करते तो गोया (बदबूदार) मुर्दा गधे के पास से उठे हैं और यह मज्लिस उनके लिए क़ियामत के दिन अफ़सोस का ज़रिया होगी। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अफ़सोस का ज़रिया इसलिए होगी कि मज्लिस में आम तौर से कोई फ़ुज़ूल बात हो ही जाती है जो पकड़ का सबब बन सकती है, अलबत्ता उसमें अगर अल्लाह तआला का ज़िक्र कर लिया जाए तो उसकी वजह से पकड़ से बचाव हो जाएगा। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿169﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْمٍ أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: كَيْفَ يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: يُسَبِّحُ مِائَةَ تَسْبِيْحَةٍ فَيُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ، وَتُحَطُّ عَنْهُ أَلْفُ خَطِيْئَةٍ.

رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٥٢

169. हज़रत साद ﷺ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बैठे हुए थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स हर रोज़ एक हज़ार नेकियां कमाने से आजिज़ है? आप ﷺ के पास बैठे हुए लोगों में से एक ने सवाल किया : हममें से कोई आदमी एक हज़ार नेकियां किस तरह कमा सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह सौ मर्तबा पढ़े उस के लिए एक हज़ार नेकियां लिख दी जाएंगी और उसके एक हज़ार गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। (मुस्लिम)

﴿170﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِمَّا تَذْكُرُوْنَ مِنْ جَلَالِ اللهِ، التَّسْبِيْحَ وَالتَّهْلِيْلَ وَالتَّحْمِيْدَ يَنْعَطِفْنَ حَوْلَ الْعَرْشِ، لَهُنَّ دَوِيٌّ كَدَوِيِّ النَّحْلِ، تُذَكِّرُ بِصَاحِبِهَا، أَمَا يُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكُوْنَ لَهُ، أَوْلَا يَزَالُ لَهُ، مَنْ يُذَكِّرُ بِهِ؟

رواه ابن ماجه، باب فضل التسبيح، رقم: ٣٨٠٩

170. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन चीज़ों से तुम अल्लाह तआला की बड़ाई ब्यान करते हो, उनमें से 'सुब-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' हैं। ये कलिमात अर्श के चारों तरफ़ घूमते हैं। उनकी आवाज़ शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह होती है। इस तरह ये कलिमात अपने पढ़ने वाले का अल्लाह तआला की बारगाह में

तज़्किरा करते हैं। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में कोई तुम्हारा हमेशा तज़्किरा करता रहे? (इब्ने माजा)

﴿171﴾ عَنْ يُسَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُنَّ بِالتَّسْبِيْحِ وَ التَّهْلِيْلِ وَالتَّقْدِيْسِ وَ اعْقِدْنَ بِالْاَنَامِلِ فَاِنَّهُنَّ مَسْؤُوْلَاتٌ مُسْتَنْطَقَاتٌ وَ لَا تَغْفُلْنَ فَتَنْسَيْنَ الرَّحْمَةَ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في فضل التسبيح ...، رقم: ٣٥٨٣

171. हज़रत युसैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमसे इर्शाद फ़रमाया : अपने ऊपर तस्बीह (सुब-हानल्लाह कहना) और तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) और तक़दीस (अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान करना, मसलन 'सुब्-हानलमलिकिल क़ुद्दूस' कहना) लाज़िम कर लो और उंगलियों पर गिना करो, इसलिए कि उंगलियों से सवाल किया जाएगा (कि उनसे क्या अ़मल किए और जवाब के लिए) बोलने की ताक़त दी जाएगी और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़फ़लत न करना वरना तुम अपने आपको अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरूम कर लोगी। (तिर्मिज़ी)

﴿172﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ.

رواه البزار واسناده جيد، مجمع الزوائد ١١١/١٠

172. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' पढ़ता है, उसके लिए जन्नत में एक खजूर का दरख़्त लगा दिया जाता है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿173﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ اَيُّ الْكَلَامِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: مَا اصْطَفَاهُ اللهُ لِمَلَائِكَتِهِ اَوْ لِعِبَادِهِ سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهِ.

رواه مسلم، باب فضل سبحان الله وبحمده، رقم: ٦٩٢٥

173. हज़रत अबूज़र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : अफ़ज़ल कलाम कौन-सा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़ज़ल कलाम वह है जिसको अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़रिश्तों या अपने बन्दों के लिए पसन्द फ़रमाया है। वह 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' है। (मुस्लिम)

﴾174﴿ عَنْ اَبِیْ طَلْحَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ اَوْ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَ مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ مِائَةَ مَرَّةٍ كَتَبَ اللهُ لَهُ مِائَةَ اَلْفِ حَسَنَةٍ وَاَرْبَعًا وَ عِشْرِيْنَ اَلْفَ حَسَنَةٍ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِذًا لَا يَهْلِكُ مِنَّا اَحَدٌ؟ قَالَ: بَلٰى، اِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَجِیْءُ بِالْحَسَنَاتِ لَوْ وُضِعَتْ عَلٰى جَبَلٍ اَثْقَلَتْهُ، ثُمَّ تَجِیْءُ النِّعَمُ فَتَذْهَبُ بِتِلْكَ، ثُمَّ يَتَطَاوَلُ الرَّبُّ بَعْدَ ذٰلِكَ بِرَحْمَتِهٖ۔

رواه الحاكم و قال: صحيح الاسناد، الترغيب ٢/ ٤٢١

174. हज़रत अबू तलहा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कहता है, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। जो शख़्स 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' सौ मर्तबा पढ़ता है इसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ऐसी हालत में तो कोई भी (क़ियामत में) हलाक नहीं हो सकता (कि नेकियां ज़्यादा ही रहेंगी)? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (बाज़ लोग फिर भी हलाक होंगे, इसलिए कि) तुम में से एक शख़्स इतनी नेकियां लेकर आएगा कि अगर पहाड़ पर लिख दी जाएं तो वह दब जाए लेकिन अल्लाह तआ़ला की नेमतों के मुक़ाबले में वे नेकियां ख़त्म हो जाएंगी, फिर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से जिसकी चाहेंगे मदद फ़रमाएंगे और हलाक होने से बचा लेंगे। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴾175﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُكَ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَى اللهِ؟ قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَخْبِرْنِیْ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَى اللهِ، فَقَالَ: اِنَّ اَحَبَّ الْكَلَامِ اِلَى اللهِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ۔ رواه مسلم، باب فضل سبحان الله و بحمده رقم: ٦٩٢٥، والترمذي الا انه قال: سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِهٖ وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب اى الكلام احب الى الله، رقم: ٣٥٩٣

175. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको बताऊं कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा कलाम क्या है? मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे बता दीजिए कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम किया है? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' है।(मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम 'सुब्हा-न रब्बी व बिहम्दिही' है। (तिर्मिज़ी)

﴾176﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهٖ غُرِسَتْ لَهٗ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في فضائل سبحان الله و بحمده، رقم: ٣٤٦٥

176. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ि शख़्स ने 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीमि व बिहम्दिही०' कहा, उसके लिए जन्नत में एक खजूर का दरख़्त लगा दिया जाता है। (तिर्मि)

﴾177﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: كَلِمَتَانِ حَبِيْبَتَانِ إِلَى الرَّحْمٰنِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ۔ رواه البخاري، باب قول الله تعالى و نضع الموازين القسط ليوم القيامة، رقم: ٧٥٦٣

177. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ो कलिमे ऐसे हैं, जो अल्लाह तआला को बहुत महबूब, ज़बान पर बहुत हल्के और तराज़ू में बहुत वज़नी हैं। वह कलिमात 'सुब्हा-नल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्ल हि अज़ीमि०' हैं। (बुख़..)

﴾178﴿ عَنْ صَفِيَّةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَ بَيْنَ يَدَيَّ أَرْبَعَةُ آلَافِ نَوَاةٍ أُسَبِّحُ بِهِنَّ فَقَالَ: يَا بِنْتَ حُيَيٍّ! مَا هٰذَا؟ قُلْتُ: أُسَبِّحُ بِهِنَّ، قَالَ: قَدْ سَبَّحْتُ مُنْذُ قُمْتُ عَلَى رَأْسِكِ أَكْثَرَ مِنْ هٰذَا قُلْتُ: عَلِّمْنِي يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ: قُوْلِي سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ مِنْ شَيْءٍ۔

رواه الحاكم في المستدرك و قال: هذا حديث صحيح ولم يخرجاه و وافقه الذهبي ١/٥٤٧

178. हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए मेरे सामने चार हज़ार खजूर की गुठलियां रखी हुई थीं, जिन पर मैं तस्बीह पढ़ रही थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हुय्य की बेटी (सफ़िया)! यह   है? मैंने अर्ज़ किया कि इन गुठलियों पर तस्बीह पढ़ रही हूं। इर्शाद फ़रमाया : मैं जब से तुम्हारे पास आकर खड़ा हुआ हूं उससे ज़्यादा तस्बीह पढ़ चुका हूं। मैंने अर्ज़ किया : ा रसूलुल्लाह! वह मुझे सिखा दें। इर्शाद फ़रमाया 'सुब्हानल्लज़ी अ-द-द मा ख़-ल-क़ मिन शैइन' कहा करो, यानी जो चीज़ें अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाई हैं उन ी तादाद के बराबर मैं अल्लाह की पाकी ब्यान करती हूं। (मुस्तदरक हाकि..)

﴿179﴾ عَنْ جُوَيْرِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا بُكْرَةً حِيْنَ صَلَّى الصُّبْحَ، وَهِيَ فِي مَسْجِدِهَا، ثُمَّ رَجَعَ بَعْدَ اَنْ اَضْحٰى، وَ هِيَ جَالِسَةٌ، فَقَالَ: مَازِلْتِ عَلَى الْحَالِ الَّتِي فَارَقْتُكِ عَلَيْهَا؟ قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ اَرْبَعَ كَلِمَاتٍ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ: سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ، وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ.

رواه مسلم، باب التسبيح اول النهار و عند النوم، رقم: ٦٩١٢

179. हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ सुबह की नमाज़ के वक़्त उनके पास से तशरीफ़ ले गए और यह अपनी नमाज़ की जगह पर बैठी हुई (ज़िक्र में मशगूल थीं)। नबी करीम ﷺ चाश्त की नमाज़ के बाद तशरीफ़ लाए तो यह उसी हाल में बैठी हुई थीं। नबी करीम ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम उसी हाल में हो जिस पर मैंने छोड़ा था? उन्होंने अर्ज़ किया : जी हां! नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैंने तुमसे जुदा होने के बाद चार कलिमे तीन मर्तबा कहे। अगर उन कलिमों को उन सबके मुक़ाबले में तौला जाए, जो तुमने सुबह से अब तक पढ़ा है तो वे कलिमे भारी हो जाएं। वह कलिमे ये हैं 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही व ज़ि-न-त अर्शिही व मिदा-द कलिमातिही०' "मैं अल्लाह तआला की मख़लूक़ात की तादाद के बराबर, उसकी रज़ा, उसके अर्श के वज़न और उसके कलिमात के लिखने की स्याही के बराबर अल्लाह तआला की तस्बीह और तारीफ़ ब्यान करता हूं।" (मुस्लिम)

﴿180﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَلَى امْرَاَةٍ وَ بَيْنَ يَدَيْهَا نَوًى، اَوْ حَصًى، تُسَبِّحُ بِهٖ فَقَالَ: اُخْبِرُكِ بِمَا هُوَ اَيْسَرُ عَلَيْكِ مِنْ هٰذَا اَوْ اَفْضَلُ؟ فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْاَرْضِ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ بَيْنَ ذٰلِكَ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ، وَ اللهُ اَكْبَرُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ مِثْلَ ذٰلِكَ.

رواه ابو داؤد، باب التسبيح بالحصى، رقم: ١٥٠٠

180. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया, जिनके सामने गुठलियां या कंकरियां रखी हुई थीं। वह उन पर तस्बीह पढ़ रही थीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या

मैं तुमको ऐसे कलिमे बतलाऊं जो तुम्हारे लिए इस अमल से ज़्यादा आसान हैं? उसके बाद ये कलिमे बताए : "मैं अल्लाह तआ़ला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसने आसमान में पैदा फ़रमाई हैं, मैं अल्लाह तआ़ला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसने ज़मीन में पैदा फ़रमाई हैं, मैं अल्लाह तआ़ला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान उसने पैदा की हैं और मैं अल्लाह तआ़ला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो अल्लाह तआ़ला आईंदा पैदा फ़रमाने वाले हैं" फिर फ़रमाया : अल्लाहु अकबर इसी तरह, अल-हम्दु लिल्लाह इसी तरह और 'ला-हौ-ल व ला क़ुव्व इल्ला बिल्लाह' को भी इसी तरह पढ़ो, यानी इन कलिमों के साथ भी आख़िर में और मिला दो। (अबूदाऊद)

﴿181﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَ أَنَا جَالِسٌ أُحَرِّكُ شَفَتَيَّ فَقَالَ: بِمَ تُحَرِّكُ شَفَتَيْكَ؟ قُلْتُ: أَذْكُرُ اللهَ يَا رَسُوْلَ اللهِ قَالَ: أَفَلَا أُخْبِرُكَ بِشَيْءٍ إِذَا قُلْتَهُ، ثُمَّ دَأَبْتَ اللَّيْلَ وَ النَّهَارَ لَمْ تَبْلُغْهُ؟ قُلْتُ: بَلٰى، قَالَ: تَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهُ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِيْ كِتَابِهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا أَحْصٰى خَلْقُهُ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا فِيْ خَلْقِهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ سَمٰوَاتِهِ وَ أَرْضِهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ، وَ تُسَبِّحُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ تُكَبِّرُ مِثْلَ ذٰلِكَ.

رواه الطبراني من طريقين واسناد احدهما حسن، مجمع الزوائد ١٠٩/١٠

181. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और मैं बैठा हुआ था मेरे होंठ हरकत कर रहे थे। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि अपने होंठ किस वजह से हिला रहे हो? मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र कर रहा हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वे कलिमे न बतला दूं कि अगर तुम उनको कह लो, तो तुम्हारा दिन रात मुसलसल ज़िक्र करना भी उसके सवाब को न पहुंच सके? मैंने अर्ज़ किया : ज़रूर बता दीजिए। इर्शाद फ़रमाया : ये कलिमे कहा करो तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़लूक़ ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों के

भर देने के बराबर जो मख़्लूक़ात में हैं, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं आसमानों और ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं हर चीज़ पर।

अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर, जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसकी किताब में हैं, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़्लूक़ात ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है आसमानों और ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है हर चीज़ पर।

अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों के बराबर जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जो उनकी किताब में हैं, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़्लूक़ात ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों के भर देने के बराबर जो मख़्लूक़ात में हैं, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है आसमानों और ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है हर चीज़ पर। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿182﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَوَّلُ مَنْ يُدْعٰى اِلَى الْجَنَّةِ الَّذِيْنَ يَحْمَدُوْنَ اللهَ فِي السَّرَّاءِ وَ الضَّرَّاءِ.

رواه الحاكم و قال: صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه و وافقه الذهبي ١/٥٠٢

182. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : सबसे पहले जन्नत की तरफ़ बुलाए जाने वाले वे लोग होंगे जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती (दोनों हालतों में) अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿183﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ لَيَرْضٰى عَنِ الْعَبْدِ اَنْ يَّاْكُلَ الْاَكْلَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا، اَوْيَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا.

رواه مسلم باب استحباب حمد الله تعالى بعد الأكل والشرب، رقم: ٦٩٣٢

183. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से बेहद ख़ुश होते हैं जो लुक़मा खाए और उसपर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे या पानी का घूंट पीये और उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे। (मुस्लिम)

﴿184﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَلِمَتَانِ إِحْدَاهُمَا لَيْسَ لَهَا نَاهِيَةٌ دُوْنَ الْعَرْشِ، وَالْأُخْرٰى تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْأَرْضِ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ۔

رواه الطبراني ورواته الى معاذ بن عبدالله ثقة سوى ابن لهيعة والحديث حسن بشواهده، الترغيب ٢/٤٣٤

184. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ला इला-ह इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर दो कलिमे हैं, उनमें से एक (ला इला-ह इल्लल्लाह) तो अ़र्श से पहले कहीं रुकता नहीं और दूसरा (अल्लाहु अकबर) ज़मीन व आसमान के दर्मियानी ख़ला को (नूर या अज्र से) भर देता है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿185﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِيْ سُلَيْمٍ قَالَ: عَدَّهُنَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِيْ يَدِيْ۔ أَوْ فِيْ يَدِهِ: اَلتَّسْبِيْحُ نِصْفُ الْمِيْزَانِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ يَمْلَؤُهُ وَالتَّكْبِيْرُ يَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْأَرْضِ۔

(الحديث) رواه الترمذي وقال: حديث حسن، باب فيه حديث أن التسبيح نصف الميزان، رقم: ٣٥١٩

185. क़बीला बनू सुलैम के एक सहाबी : फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इन बातों को मेरे हाथ या अपने मुबारक हाथ पर गिनकर फ़रमाया : सुब्हानल्लाह कहना आधे तराज़ू को सवाब से भर देता है। और अल-हम्दुलिल्लाह कहना पूरे तराज़ू को सवाब से भर देता है और अल्लाहु अकबर का सवाब ज़मीन व आसमान के दर्मियान की ख़ाली जगह को पुर कर देता है। (तिर्मिज़ी)

﴿186﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَلَا أَدُلُّكَ عَلٰى بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ؟ قُلْتُ: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ۔

رواه الحاكم وقال: صحيح على شرطهما ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/٢٩٠

186. हज़रत साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा न बतलाऊं? मैंने अ़र्ज़ किया : ज़रूर

बतलाइए! इर्शाद फ़रमाया : वह दरवाज़ा 'ला हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह' है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾187﴿ عَنْ اَبِىْ اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ اُسْرِىَ بِه مَرَّ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ: يَا جِبْرِيْلُ مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ ﷺ، قَالَ لَهُ اِبْرَاهِيْمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ: مُرْ اُمَّتَكَ فَلْيُكْثِرُوْا مِنْ غِرَاسِ الْجَنَّةِ فَاِنَّ تُرْبَتَهَا طَيِّبَةٌ، وَ اَرْضَهَا وَاسِعَةٌ قَالَ: وَمَا غِرَاسُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ.

رواه احمد ورجال احمد رجال الصحيح غير عبدالله بن عبد الرحمٰن بن عبدالله بن عمر بن الخطاب و هو ثقة لم يتكلم فيه احد و وثقه ابن حبان، مجمع الزوائد ١١٩/١٠

187. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ मेराज की रात हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा : जिबरील! यह तुम्हारे साथ कौन हैं? जिबरील ﷺ ने अ़र्ज़ किया : मुहम्मद ﷺ हैं। इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया : आप अपनी उम्मत से कहिए कि वह जन्नत के पौधे ज़्यादा-से-ज़्यादा लगाएं, इसलिए कि जन्नत की मिट्टी उम्दा है और उसकी ज़मीन कुशादा है। पूछा : जन्नत के पौधे क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : 'ला हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह०'। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾188﴿ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَحَبُّ الْكَلَامِ اِلَى اللهِ اَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، لَا يَضُرُّكَ بِاَيِّهِنَّ بَدَاْتَ

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم باب كراهة التسمية بالاسماء القبيحة... رقم: ٥٦٠١ وزاد احمد: اَفْضَلُ الْكَلَامِ بَعْدَ الْقُرْآنِ اَرْبَعٌ وَ هِىَ مِنَ الْقُرْآنِ ٢٠/٥

188. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चार कलिमे अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा महबूब हैं 'सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' उनमें से जिसको चाहो पहले पढ़ो (और जिसको चाहो बाद में पढ़ो कोई हर्ज नहीं) (मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि ये चारों कलिमे क़ुरआन मजीद के बाद सबसे अफ़ज़ल हैं और ये क़ुरआन करीम ही के कलिमे हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿189﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَاَنْ اَقُوْلَ سُبْحَانَ اللهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَ اللهُ اَكْبَرُ، اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ.

رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٤٧

189. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे 'सुब्-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहना हर उस चीज़ से ज़्यादा महबूब है, जिसपर सूरज तुलू होता है (क्योंकि उनका अज्र व सवाब बाक़ी रहेगा और दुनिया अपने तमाम साज़ व सामान समेत ख़त्म हो जाएगी)। (मुस्लिम)

﴿190﴾ عَنْ اَبِیْ سَلْمٰی رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَخٍ بَخٍ بِخَمْسٍ مَا اَثْقَلَهُنَّ فِی الْمِيْزَانِ: سُبْحَانَ اللهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَ اللهُ اَكْبَرُ، وَالْوَلَدُ الصَّالِحُ يُتَوَفّٰى لِلْمُسْلِمِ فَيَحْتَسِبُهُ.

رواه الحاكم و قال: هذا حديث صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ١/٥١١

190. हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वाह! वाह! पांच चीज़ें आमालनामे के तराज़ू में कितनी ज़्यादा वज़नी हैं—1. ला इला-ह इल्लल्लाह 2. सुब्-हानल्लाह 3. अल-हम्दु लिल्लाह 4. अल्लाहु अकबर 5. किसी मुसलमान का नेक लड़का फ़ौत हो जाए और वह सवाब की उम्मीद पर सब्र करे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿191﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، كُتِبَ لَهٗ بِكُلِّ حَرْفٍ عَشْرُ حَسَنَاتٍ.

(و هو جزء من الحديث) رواه الطبراني في الكبير والاوسط ورجالهما

رجال الصحيح غير محمد بن منصور الطوسي و هو ثقة، مجمع الزوائد ١٠/١٠٦

191. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुब्-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़े, हर हर्फ़ के बदले उसके आमालनामे में दस नेकियां लिख दी जाएंगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿192﴾ عَنْ اُمِّ هَانِیءٍ بِنْتِ اَبِیْ طَالِبٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَرَّ بِیْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَدْ كَبِرْتُ وَضَعُفْتُ، اَوْ كَمَا قَالَتْ: فَمُرْنِیْ بِعَمَلٍ اَعْمَلُ

وَ اَنَا جَالِسَةٌ؟ قَالَ: سَبِّحِي اللهَ مِائَةَ تَسْبِيْحَةٍ، فَاِنَّهَا تَعْدِلُ لَكِ مِائَةَ رَقَبَةٍ تُعْتِقِيْنَهَا مِنْ وُلْدِ اِسْمَاعِيْلَ،وَاحْمَدِي اللهَ مِائَةَ تَحْمِيْدَةٍ فَاِنَّهَا تَعْدِلُ مِائَةَ فَرَسٍ مُسْرَجَةٍ مُلْجَمَةٍ تَحْمِلِيْنَ عَلَيْهَا فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَكَبِّرِي اللهَ مِائَةَ تَكْبِيْرَةٍ، فَاِنَّهَا تَعْدِلُ لَكِ مِائَةَ بَدَنَةٍ مُقَلَّدَةٍ مُتَقَبَّلَةٍ، وَهَلِّلِي اللهَ مِائَةً، قَالَ ابْنُ خَلَفٍ: اَحْسِبُهُ قَالَ: تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ، وَ لَا يُرْفَعُ يَوْمَئِذٍ لِاَحَدٍ عَمَلٌ اِلَّا اَنْ يَاْتِيَ بِمِثْلِ مَا اَتَيْتِ. قلت: رواه ابن ماجه باختصار و رواه احمد و الطبراني في الكبير ولم يقل اَحْسِبُهُ. ورواه في الاوسط الا انه قال فيه: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ كَبُرَتْ سِنِّيْ، وَ رَقَّ عَظْمِيْ فَدُلَّنِيْ عَلٰى عَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ، فَقَالَ: بَخٍ بَخٍ، لَقَدْ سَاَلْتِ، وَقَالَ خَيْرٌ لَكِ مِنْ مِائَةِ بَدَنَةٍ مُقَلَّدَةٍ مُجَلَّلَةٍ تُهْدِيْنَهَا اِلٰى بَيْتِ اللهِ تَعَالٰى: وَ قَوْلِيْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، مِائَةَ مَرَّةٍ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكِ مِمَّا اَطْبَقَتْ عَلَيْهِ السَّمَاءُ وَالْاَرْضُ، وَ لَا يُرْفَعُ يَوْمَئِذٍ لِاَحَدٍ عَمَلٌ اَفْضَلُ مِمَّا رُفِعَ لَكِ اِلَّا مَنْ قَالَ مِثْلَ مَا قُلْتِ اَوْزَادَ واسانيدهم حسنة، مجمع الزوائد ١٠٨/١٠ رواه الحاكم وقال: قُوْلِيْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ لَا تَتْرُكُ ذَنْبًا، وَلَا يُشْبِهُهَا عَمَلٌ.

وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ١/٤١٥

192. हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मेरे यहां तशरीफ़ लाए। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बूढ़ी और कमज़ोर हो गई हूं, कोई अमल ऐसा बता दीजिए कि बैठे-बैठे करती रहा करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसा है गोया तुम इस्माईल عليه السلام की औलाद में से सौ गुलाम आज़ाद करो। अल-हम्दु लिल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसे सौ घोड़ों के बराबर है, जिन पर ज़ीन कसी हुई हो और लगाम लगी हुई हो, उन्हें अल्लाह तआला के रास्ते में सवारी के लिए दे दो। अल्लाहु अकबर सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसे सौ ऊंटों को ज़ब्ह किए जाने के बराबर है जिनकी गर्दनों में क़ुरबानी का पट्टा पड़ा हुआ हो। ला इला-ह इल्लल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब तो आसमान और ज़मीन के दर्मियान को भर देता है और उस दिन तुम्हारे अमल से बढ़कर किसी का कोई अमल नहीं होगा जो अल्लाह तआला के यहां क़ुबूल हो, अलबत्ता उस शख़्स का अमल बढ़ सकता है, जिसने तुम्हारे जैसा अमल किया हो।

एक रिवायत में है कि हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बूढ़ी हो गई हूं और मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, कोई ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल करा दे।

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वाह! वाह! तुमने बहुत अच्छा सवाल किया, और फ़रमाया कि अल्लाहु अकबर सौ मर्तबा पढ़ा करो, ये तुम्हारे लिए ऐसे सौ ऊंटों से बेहतर है जिनकी गर्दन में पट्टा पड़ा हुआ हो, झूल डली हुई हो और वे मक्का में ज़बह किए जाएं। ला इला-ह इल्लल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो वह तुम्हारे लिए उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिनको आसमान व ज़मीन ने ढांप रखा है, और उस दिन तुम्हारे अ़मल से बढ़कर किसी का कोई अ़मल नहीं होगा जो अल्लाह तआ़ला के यहां क़ुबूल हो, अलबत्ता उस शख़्स का अ़मल बढ़ सकता है जिसने ये कलिमात इतने ही मर्तबा या इससे ज़्यादा मर्तबा कहे हों।

एक रिवायत में यह भी है कि ला इला-ह इल्लल्लाह पढ़ा करो, यह किसी गुनाह को नहीं छोड़ता, और उस-जैसा कोई अ़मल नहीं।

(इब्ने माजा, मुस्नद अहमद, तबरानी, मुस्तदरक हाकिम, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿193﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ مَرَّ بِهٖ وَهُوَ یَغْرِسُ غَرْسًا، فَقَالَ: یَا اَبَا هُرَیْرَةَ! مَا الَّذِیْ تَغْرِسُ؟ قُلْتُ: غِرَاسًا لِیْ، قَالَ: اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰی غِرَاسٍ خَیْرٍ لَكَ مِنْ هٰذَا؟ قَالَ: بَلٰی، یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: قُلْ سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَکْبَرُ، یُغْرَسْ لَكَ، بِکُلِّ وَاحِدَةٍ، شَجَرَةٌ فِی الْجَنَّةِ.

رواه ابن ماجه باب فضل التسبيح، رقم: ٣٨٠٧

193. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास से गुज़रे और मैं पौधा लगा रहा था, फ़रमाया : अबू हुरैरह! क्या लगा रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया : अपने लिए पौधा लगा रहा हूं। इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर पौधे न बता दूं?

'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहना, इनमें से हर कलिमे के बदले में तुम्हारे लिए जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। (इब्ने माजा)

﴿194﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: خُذُوْا جُنَّتَکُمْ، قُلْنَا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَمِنْ عَدُوٍّ حَضَرَ؟ فَقَالَ: خُذُوْا جُنَّتَکُمْ مِنَ النَّارِ، قُوْلُوْا: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَکْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، فَاِنَّهُنَّ یَاْتِیْنَ یَوْمَ

الْقِيَامَةِ مُسْتَقْدِمَاتٍ، وَمُسْتَأْخِرَاتٍ، وَ مُنْجِيَاتٍ وَمُجَنِّبَاتٍ وَهُنَّ الْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ۔

مجمع البحرين في زوائد المعجمين ٣٢٩/٧ قال المحشي اخرجه الطبراني في الصغير و قال الهيثمي في المجمع: و رجاله رجال الصحيح غير داؤد بن بلال وهو ثقة

194. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : देखो अपने बचाव के लिए ढाल ले लो। सहाबा ने पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या कोई दुश्मन आ गया है? इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम की आग से बचाव के लिए ढाल ले लो। 'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह, इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहा करो, क्योंकि ये कलिमे क़ियामत के दिन अपने कहने वाले के आगे, पीछे, दाएं, बाएं, से आएंगे और उसको नजात दिलाने वाले होंगे और यही वह नेक आमाल हैं जिनका सवाब हमेशा मिलता रहता है। (मज्मउल बहरैन)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के इस जुम्ले ''ये कलिमे अपने पढ़ने वाले के आगे से आएंगे'' का मतलब यह है कि क़ियामत के दिन ये कलिमे आगे बढ़कर अपने पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करेंगे। ''और दाएं-बाएं-पीछे से आने'' का मतलब यह है कि अपने पढ़ने वाले की अज़ाब से हिफ़ाज़त करेंगे।

﴿195﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ إِنَّ سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ تَنْفُضُ الْخَطَايَا كَمَا تَنْفُضُ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا۔ رواه احمد ١٥٢/٣

195. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर कहने की वजह से गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे (सर्दी में) दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।

(मुस्नद अहमद)

﴿196﴾ عَنْ عِمْرَانَ يَعْنِي: ابْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَمَا يَسْتَطِيْعُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَعْمَلَ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلَ أُحُدٍ عَمَلًا؟ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَمَنْ يَسْتَطِيْعُ أَنْ يَعْمَلَ فِي كُلِّ يَوْمٍ مِثْلَ أُحُدٍ عَمَلًا؟ قَالَ: كُلُّكُمْ يَسْتَطِيْعُهُ، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَاذَا؟ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ، وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ، وَاللهُ أَكْبَرُ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ۔

رواه الطبراني و البزار و رجالهما رجال الصحيح مجمع الزوائد [illegible]

196. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷻ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स हर रोज़ उहुद पहाड़ के बराबर अ़मल नहीं कर सकता? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उहुद पहाड़ के बराबर कौन अ़मल कर सकता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से हर एक कर सकता है। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वह कौन-सा अ़मल है? इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह (का सवाब) उहुद से बड़ा है, अल-हम्दु लिल्लाह का सवाब उहुद से बड़ा है, 'ला इला-ह इल्लल्लाह' का सवाब उहुद से बड़ा है और अल्लाहु अकबर का सवाब उहुद से बड़ा है। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿197﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِیَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوا، قُلْتُ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ مَا رِیَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: الْمَسَاجِدُ، قُلْتُ: وَمَا الرَّتْعُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ. رواه الترمذی

وقال: حديث حسن غريب، باب حديث فی اسماء الله الحسنى مع ذكرها تماما، رقم: ٣٥٠٩

197. हज़रत अबू हुरैरह ﷻ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो तो ख़ूब चरो। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : मस्जिदें। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! चरने से क्या मुराद है? इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर का पढ़ना। (तिर्मिज़ी)

﴿198﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ وَاَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰی مِنَ الْكَلَامِ اَرْبَعًا: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ. فَمَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ كُتِبَ لَهُ عِشْرُوْنَ حَسَنَةً، وَحُطَّتْ عَنْهُ عِشْرُوْنَ سَیِّئَةً، وَمَنْ قَالَ: اللّٰهُ اَكْبَرُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ مِنْ قِبَلِ نَفْسِهٖ كُتِبَتْ لَهُ ثَلَاثُوْنَ حَسَنَةً وَحُطَّتْ عَنْهُ ثَلَاثُوْنَ سَیِّئَةً.

رواه النسائی فی عمل الیوم واللیلة، رقم: ٨٤٠

198. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷻ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम में से चार कलिमे चुने हैं : सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर। जो शख़्स एक मर्तबा सुब्हानल्लाह कहता है उसके लिए

लिख दी जाती हैं, उसकी बीस बुराइयां मिटा दी जाती हैं। जो शख़्स अल्लाहु अकबर कहे, उसके लिए भी यही अज्र है। जो शख़्स अल्लाहु अकबर कहे, उसके लिए भी यही अज्र है। जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाह कहे, उसके लिए भी यही अज्र है, जो शख़्स दिल की गहराई से अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन कहे, उसके लिए तीस नेकियां लिखी जाती हैं और तीस गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। (अ़मलुलयौम वल्लैल:)

﴿199﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللہِ ﷺ قَالَ: اسْتَکْثِرُوْا مِنَ الْبَاقِیَاتِ الصَّالِحَاتِ قِیْلَ: وَمَا ھُنَّ یَا رَسُوْلَ اللہِ؟ قَالَ: الْمِلَّۃُ، قِیْلَ وَمَاھِیَ؟ قَالَ: التَّکْبِیْرُ وَالتَّھْلِیْلُ، وَالتَّسْبِیْحُ، وَالتَّحْمِیْدُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللہِ۔

رواه الحاكم وقال: هذا اصح اسناد المصريين ووافقه الذهبي ١/٥١٢

199. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बाक़ियाते सालिहात की कसरत किया करो। किसी ने पूछा, वे क्या चीज़ें हैं? इर्शाद फ़रमाया : वे दीन की बुनयादें हैं। अ़र्ज़ किया गया : वे बुनयादें क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : तकबीर (अल्लाहु अकबर कहना) तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) तहमीद (अल-हम्दु लिल्लाह कहना) और ला हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह कहना। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : बाक़ियाते सालिहात से मुराद वे नेक आ़माल हैं, जिनका सवाब हमेशा मिलता रहता है। रसूलुल्लाह ﷺ ने उन कलिमों को मिल्लत इसलिए फ़रमाया है कि ये कलिमे दीने इस्लाम में बुनयादी हैसीयत रखते हैं। (फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ. قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: قُلْ سُبْحَانَ اللہِ، وَالْحَمْدُ لِلہِ، وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ، وَاللہُ اَکْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللہِ، فَاِنَّھُنَّ الْبَاقِیَاتُ الصَّالِحَاتُ، وَھُنَّ یَحْطُطْنَ الْخَطَایَا کَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَۃُ وَرَقَھَا، وَھُنَّ مِنْ کُنُوْزِ الْجَنَّۃِ۔

رواه الطبراني باسنادين في احد هما: عمر بن راشد اليمامي، وقد وُثق على ضعفه وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/١٠٤

200. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर

ला-हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह कहा करो। ये बाक़ियाते सालिहात हैं और ये गुनाहों को इस तरह मिटा देते हैं जिस तरह दरख़्त से (सर्दी के मौसम में) पत्ते झड़ते हैं, और ये कलिमे जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾201﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا عَلَى الْاَرْضِ اَحَدٌ يَقُوْلُ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ اِلَّا كُفِّرَتْ عَنْهُ خَطَايَاهُ وَلَوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل التسبيح والتكبير والتحميد، رقم: ٣٤٦٠ وزاد الحاكم: سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

وقال الذهبي: حاتم ثقة، وزيادته مقبولة ١/٥٠٣

201. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़मीन पर जो शख़्स भी ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर व ला-हौ-ल व ला कुव्वत इल्लाबिल्लाह पढ़ता है तो उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं, ख़्वाह समुंदर के झाग के बराबर हों : (तिर्मिज़ी)

एक रिवायत में यह फ़ज़ीलत सुब्हानल्लाह, वलहम्दु लिल्लाह के इज़ाफ़े के साथ ज़िक्र की गई है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾202﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ، قَالَ اللهُ: اَسْلَمَ عَبْدِيْ وَاسْتَسْلَمَ۔ رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ١/٥٠٢

202. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स (दिल से) 'सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर, व ला-हौ-ल व ला कुव्व त' इल्ला बिल्लाहि कहे तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा फ़रमांबरदार हो गया और अपने आपको मेरे हवाले कर दिया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾203﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ وَاَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، صَدَّقَهُ رَبُّهُ وَ قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَ اَنَا اَكْبَرُ، وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَاَنَا وَحْدِيْ، وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، قَالَ اللهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَحْدِيْ لَا شَرِيْكَ لِيْ وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا

اللهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، قَالَ اللهُ: لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا لِيَ الْمُلْكُ وَلِيَ الْحَمْدُ، وَإِذَا قَالَ: لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، قَالَ اللهُ: لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِيْ وَكَانَ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَهَا فِيْ مَرَضِهِ ثُمَّ مَاتَ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ.

رواه الترمذي و قال هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ما يقول العبد اذا مرض، رقم: ٣٤٣٠

203. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई कहता है : **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर'** ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह तआला ही सबसे बड़े हैं'' तो अल्लाह तआला उसकी तस्दीक़ करते हैं और फ़रमाते हैं **ला इला-ह इल्ला अना व अना अकबर** ''मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं सबसे बड़ा हूं''। और जब वह कहता है : **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू'** ''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं'' तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं **'ला इला-ह इल्ला अना व अना वह्दी'** ''मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अकेला हूं''। और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू** ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं और उनका कोई शरीक नहीं है'' तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना वह्दी ला शरी-क ली** ''मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं अकेला हूं, मेरा कोई शरीक नहीं है'' और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्द** ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं उन्हीं के लिए बादशाहत है और तमाम तारीफ़ें उन्हीं के लिए हैं'' तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना लियल मुल्कु व लियल हम्द** ''मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मेरे लिए ही बादशाहत और मेरे लिए ही तमाम तारीफ़ें हैं''। और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह** ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, और गुनाहों से बचाने और नेकियों पर लगाने की ताक़त अल्लाह तआला ही को है''। तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह** ''मेरे सिवा कोई माबूद नहीं है और गुनाहों से बचाने और नेकियों पर लगाने की क़ुव्वत मुझ ही को है''। रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स बीमारी में इन ज़िक्र किए गए कलिमों यानी **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ; ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला इला-ह इल्लल्लाहु लहुल मुल्क व लहुल हम्दु ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह'** को पढ़े और फिर मर जाए तो जहन्नम की आग उसे

चखेगी भी नहीं। (तिर्मिज़ी)

﴿204﴾ عَنْ يَعْقُوْبَ بْنِ عَاصِمٍ رَحِمَهُ اللهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُمَا سَمِعَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا قَالَ عَبْدٌ قَطُّ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، مُخْلِصًا بِهَا رُوْحُهُ، مُصَدِّقًا بِهَا قَلْبُهُ لِسَانَهُ إِلَّا فُتِقَ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى يَنْظُرَ اللهُ إِلٰى قَائِلِهَا وَحُقَّ لِعَبْدٍ نَظَرَ اللهُ إِلَيْهِ أَنْ يُعْطِيَهُ سُؤْلَهُ.

رواه النسائي في عمل اليوم والليلة، رقم: ٢٨

204. हज़रत याक़ूब बिन आसिम रह० दो सहाबा ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुलमुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर' इस तौर पर कहे कि उसके अन्दर इख़्लास हो और दिल और ज़बान से कहे हुए कलिमों की तसदीक़ करता हो, तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उसके कहने वाले को अल्लाह तआला रहमत की नज़र से देखते हैं और जिस बन्दे पर अल्लाह तआला की रहमत की नज़र पड़ जाए, तो वह इसका मुस्तहिक़ है कि अल्लाह तआला से जो मांगे अल्लाह तआला उसे दे दें। (अमलुलयौम वल्लैल:)

﴿205﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: خَيْرُ الدُّعَاءِ دُعَاءُ يَوْمِ عَرَفَةَ، وَخَيْرُ مَا قُلْتُ أَنَا وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ قَبْلِيْ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في دعاء يوم عرفة، رقم: ٣٥٨٥

205. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे बेहतर दुआ अ़रफ़ा के दिन की दुआ है और सबसे बेहतर कलिमे जो मैंने और मुझसे पहले अम्बिया ﷺ ने कहे, ये हैं 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर'। (तिर्मिज़ी)

﴿206﴾ رُوِيَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا وَكُتِبَ لَهُ بِهَا عَشْرُ حَسَنَاتٍ. رواه الترمذي، باب ما جاء في فضل الصلاة على النبي ﷺ، رقم: ٤٨٤

206. एक रिवायत में रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उसके बदले उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके लिए दस नेकियां लिख देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿207﴾ عَنْ عُمَيْرٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ مِنْ اُمَّتِيْ صَلَاةً مُخْلِصًا مِنْ قَلْبِهِ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرَ صَلَوَاتٍ، وَرَفَعَهُ بِهَا عَشْرَ دَرَجَاتٍ، وَكَتَبَ لَهُ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ، وَمَحَا عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ.

رواه النسائي في عمل اليوم الليلة رقم: ٦٤

207. हज़रत उमैर अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में से जो शख़्स दिल के ख़ुलूस के साथ मुझ पर दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं, उसके बदले में दस दर्जे बुलन्द फ़रमाते हैं, उसके लिए दस नेकियां लिख देते हैं और उसके दस गुनाह मिटा देते हैं। (अमलुलयौम वल्लैल:)

﴿208﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْثِرُوْا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيْ كُلِّ يَوْمِ الْجُمُعَةِ، فَاِنَّ صَلَاةَ اُمَّتِيْ تُعْرَضُ عَلَيَّ فِيْ كُلِّ يَوْمِ جُمُعَةٍ، فَمَنْ كَانَ اَكْثَرَهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً كَانَ اَقْرَبَهُمْ مِنِّيْ مَنْزِلَةً.

رواه البيهقي باسناد حسن الاان مكحولا قيل: لم يسمع من ابي امامة، الترغيب ٢/٥٠٣

208. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे ऊपर हर जुमा के दिन कसरत से दुरूद भेजा करो, इसलिए कि मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमा को मुझ पर पेश किया जाता है। लिहाज़ा जो शख़्स जितना ज़्यादा मेरे ऊपर दुरूद भेजेगा, वह मुझसे (क़ियामत के दिन) दर्जे के लिहाज़ से उतना ही ज़्यादा क़रीब होगा। (बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿209﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، فَاِنَّهُ اَتَانِيْ جِبْرِيْلُ آنِفًا عَنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ فَقَالَ: مَا عَلَى الْاَرْضِ مِنْ مُسْلِمٍ يُصَلِّيْ عَلَيْكَ مَرَّةً وَاحِدَةً اِلَّا صَلَّيْتُ اَنَا وَ مَلَائِكَتِيْ عَلَيْهِ عَشْرًا.

رواه الطبراني عن ابي ظلال عنه، وابو ظلال وثق، ولا يضر في المتابعات، الترغيب ٢/٤٩٨

209. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो, क्योंकि जिबरील ﷺ अपने रब की जानिब से मेरे पास अभी यह पैग़ाम लेकर आए थे कि रुए ज़मीन पर जो कोई मुसलमान आप पर एक मर्तबा दुरूद भेजेगा, तो मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूंग और मेरे फ़रिश्ते उसके लिए दस मर्तबा मग्फ़िरत की दुआ करेंगे। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿210﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل الصلاة على النبي ﷺ، رقم: ٤٨٤

210. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मुझ से क़रीबतरीन मेरा वह उम्मती होगा, जो मुझ पर ज़्यादा दुरूद भेजने वाला होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿211﴾ عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا ذَهَبَ ثُلُثَا اللَّيْلِ قَامَ فَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ! اذْكُرُوا اللهَ، اذْكُرُوا اللهَ جَاءَتِ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيْهِ، جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيْهِ قَالَ اُبَيٌّ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنِّي اُكْثِرُ الصَّلَاةَ عَلَيْكَ فَكَمْ اَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلَاتِيْ؟ قَالَ: مَا شِئْتَ قَالَ قُلْتُ: الرُّبُعَ؟ قَالَ: مَا شِئْتَ، فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ قُلْتُ: فَالنِّصْفَ؟ قَالَ: مَاشِئْتَ، وَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قَالَ قُلْتُ: فَالثُّلُثَيْنِ؟ قَالَ: مَاشِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ قُلْتُ: اَجْعَلُ لَكَ صَلَاتِيْ كُلَّهَا؟ قَالَ: إِذًا تُكْفَى هَمَّكَ وَيُغْفَرُ لَكَ ذَنْبُكَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب في الترغيب في ذكر الله......، رقم: ٢٤٥٧

211. हज़रत काब ﷺ से रिवायत है कि जब रात दो तिहाई हिस्से गुज़र जाते, रसूलुल्लाह ﷺ (तहज्जुद के लिए) उठते और फ़रमाते, लोगो! अल्लाह तआला को याद करो, अल्लाह तआला को याद करो। हिला देने वाली चीज़ आ पहुंची और उसके बाद आने वाली चीज़ आ पहुंची (मुराद यह है कि पहले सूर और उसके बाद दूसरे सूर के फूंके जाने का वक़्त क़रीब आ गया)। मौत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ आ गई है, मौत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ आ गई है। इस पर उ बिन काब ﷺ कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं आप पर कसरत से दुरूद भेजना चाहता हूं, मैं अपने दुआ और अज़्कार के वक़्त में से दुरूद शरीफ़

लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करूं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम्हारा दिल चाहे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! एक चौथाई वक़्त? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया कि आधा करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया दो तिहाई कर दूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया, फिर मैं अपने सारे वक़्त को आपके दुरूद के लिए मुक़र्रर करता हूं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर ऐसा कर लोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सारी फ़िक्रों को ख़त्म फ़रमा देंगे और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर दिए जाएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴾212﴿ عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْنَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ؟ فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ، قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. رواه البخاري، كتاب احاديث الانبياء، رقم: ٣٣٧٠

212\. हज़रत काब बिन उजरा رضي الله عنه फ़रमाते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! आप पर और आप के घर वालों पर हम दुरूद किस तरह भेजें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो (आपके ज़रिए से) हमें ख़ुद ही सिखा दिया है (कि हम तशह्हुद में अस्सलामु अ़लै–क ऐय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह० कहकर आप पर सलाम भेजा करें) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यूं कहा करो।

तर्जुमा : या अल्लाह! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आपने हज़रत इब्राहीम عليه السلام पर और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई, यक़ीनन आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं। या अल्लाह! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आपने हज़रत इब्राहीम عليه السلام और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई, यक़ीनन आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं। (बुख़ारी)

﴿213﴾ عَنْ اَبِیْ حُمَیْدٍ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّھُمْ قَالُوْا: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! کَیْفَ نُصَلِّیْ عَلَیْکَ ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: قُوْلُوْا: اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِہٖ وَ ذُرِّیَّتِہٖ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی آلِ اِبْرَاھِیْمَ، وَبَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِہٖ وَذُرِّیَّتِہٖ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی آلِ اِبْرَاھِیْمَ، اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ. رواہ البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، رقم: ٣٣٦٩

213. हज़रत अबू हुमैद साइदी ﷺ से रिवायत है कि सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हम आप पर किस तरह दुरूद भेजा करें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यूं कहा करो ।

तर्जुमा : या अल्लाह! मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवियों पर और आपकी नस्ल पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, जैसा कि आपने हज़रत इब्राहीम ﷺ के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई। और हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवीयों पर और आपकी नस्ल पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए, जैसा कि आपने हज़रत इब्राहीम ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई। बिलाशुब्हः आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं (बुख़ारी)

﴿214﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قُلْنَا: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! ھٰذَا السَّلَامُ عَلَیْکَ فَکَیْفَ نُصَلِّیْ؟ قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَ رَسُوْلِکَ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَبَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ آلِ اِبْرَاھِیْمَ. رواہ البخاری، باب الصلاۃ علی النبی ﷺ، رقم: ٦٣٥٨

214. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं, हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें मालूम हो गया (कि हम तशह्हुद में कहकर आप पर सलाम भेजा करें) अब हमें यह भी बता दें कि हम आप पर दुरूद किस तरह भेजें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस तरह कहा करो ।

तर्जुमा : या अल्लाह! अपने बन्दे और अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमाई और मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम ﷺ और हज़रत इब्राहीम ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई। (बुख़ारी)

﴿215﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ یَّکْتَالَ بِالْمِکْیَالِ الْاَوْفٰی اِذَا صَلّٰی عَلَیْنَا اَهْلَ الْبَیْتِ فَلْیَقُلْ: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ النَّبِیِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَذُرِّیَّتِهٖ وَاَهْلِ بَیْتِهٖ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی آلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

رواہ ابوداؤد، باب الصلاۃ علی النبی ﷺ بعد التشہد، رقم: ۹۸۲

215. हज़रत अबू हुरैरह ؓ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जिसको यह बात पसन्द हो कि जब वह हमारे घर वाले पर दुरूद पढ़े तो उसका सवाब बहुत बड़े पैमाने में नापा जाए तो वह इन अल्फ़ाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे :

तर्जुमा : या अल्लाह! नबी मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवियों पर जो कि मोमिनीन की माएं हैं और आपकी नस्ल पर और आपके सब घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम ؑ के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई। आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, अज़्मत वाले हैं। (अबूदाऊद)

﴿216﴾ عَنْ رُوَیْفَعِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ۔

رواہ البزار والطبرانی فی الاوسط والکبیر واسانیدھم حسنۃ، مجمع الزوائد ۱۰/۲۵٤

216. हज़रत रुवैफ़ेअ् बिन साबित ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुहम्मद ﷺ पर इस तरह दुरूद भेजे, उसके लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाएगी।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप मुहम्मद ﷺ को क़ियामत के दिन अपने पास ख़ास मक़ामे क़ुर्ब में जगह दीजिए। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿217﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ یَقُوْلُ: یَا عَبْدِیْ مَا عَبَدْتَنِیْ وَرَجَوْتَنِیْ فَاِنِّیْ غَافِرٌ لَّکَ عَلٰی مَا کَانَ فِیْکَ، وَیَا عَبْدِیْ اِنْ لَقِیْتَنِیْ بِقُرَابِ الْاَرْضِ خَطِیْئَةً مَالَمْ تُشْرِکْ بِیْ لَقِیْتُکَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً۔ (الحدیث) رواہ احمد ۵/۱٥٤

217. हज़रत अबूज़र ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे! बेशक जब तक तू मेरी इबादत करता रहेगा और मुझ से (मग़्फ़िरत की) उम्मीद रखेगा, मैं तुझको माफ़ करता रहूंगा, चाहे तुझमें

कितनी ही बुराइयां क्यों न हों। मेरे बन्दे! अगर तू ज़मीन भर गुनाह के साथ भी मुझ से इस हाल में मिले कि मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तो मैं भी ज़मीन भर मग़फ़िरत के साथ तुझ से मिलूंगा यानी भरपूर मग़फ़िरत कर दूंगा। (मुस्नद अहमद)

﴿218﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: يَا ابْنَ آدَمَ! اِنَّكَ مَادَعَوْتَنِيْ وَرَجَوْتَنِيْ غَفَرْتُ لَكَ عَلٰى مَا كَانَ فِيْكَ وَلَا اُبَالِيْ. يَاابْنَ آدَمَ! لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوْبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ، ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِيْ غَفَرْتُ لَكَ وَلَا اُبَالِيْ.

(الحديث) رواه الترمذي، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب الحديث القدسي: يا ابن آدم انك مادعوتني رقم: ٣٥٤٠

218. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : आदम के बेटे! बेशक तू जब तक मुझ से दुआ मांगता रहेगा और (मग़फ़िरत की) उम्मीद रखेगा, मैं तुझको माफ़ करता रहूंगा चाहे कितने ही गुनाह क्यों न हों और मुझको इसकी परवाह न होगी, यानी तू चाहे कितना ही बड़ा गुनाहगार हो, तुझे माफ़ करना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है। आदम के बेटे! अगर तेरे गुनाह आसमान की बुलन्दियों तक भी पहुंच जाएं, फिर तू मुझसे बख़्शिश चाहे तो मैं तुझको बख़्श दूंगा और मुझको उसकी परवाह नहीं होगी। (तिर्मिज़ी)

﴿219﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ عَبْدًا اَصَابَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ ذَنْبًا فَاغْفِرْلِيْ، فَقَالَ رَبُّهُ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ، ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللهُ ثُمَّ اَصَابَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ، فَقَالَ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ، ثُمَّ مَكَثَ مَاشَاءَ اللهُ ثُمَّ اَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ، فَقَالَ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ ثَلَاثًا فَلْيَعْمَلْ مَا شَاءَ.

رواه البخاري، باب قول الله تعالى يريدون ان يبدلوا كلام الله، رقم: ٧٥٠٧

219. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : कोई बन्दा जब गुनाह कर लेता है, फिर (नादिम होकर) कहता है, मेरे रब! मैं तो गुनाह कर बैठा, अब आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों के सामने) फ़रमाते हैं कि क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई

रब है जो गुनाहों को माफ़ करता है और उन पर पकड़ भी कर सकता है। (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़फ़िरत कर दी। फिर वह बन्दा जब तक अल्लाह तआला चाहें गुनाह से रुका रहता है। फिर कोई गुनाह कर बैठता है तो (नादिम होकर) कहता है : मेरे रब! मैं तो एक और गुनाह कर बैठा, आप उसको भी माफ़ कर दीजिए तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : क्या मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह माफ़ करता है और उस पर पकड़ भी कर सकता है? (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़फ़िरत कर दी। फिर वह बन्दा जब तक अल्लाह तआला चाहें गुनाह से रुका रहता है। उसके बाद फिर कोई गुनाह कर बैठता है, तो (नादिम होकर) कहता है : मेरे रब! मैं तो एक और गुनाह कर बैठा आप उसको भी माफ़ कर दीजिए, तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह माफ़ करता है और उस पर पकड़ भी कर सकता है? (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़फ़िरत कर दी। बन्दा जो चाहे करे यानी हर गुनाह के बाद तौबा करता रहे, मैं उसकी तौबा क़ुबूल करता रहूंगा। (बुख़ारी)

﴾220﴿ عَنْ أُمِّ عِصْمَةَ الْعَوْصِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَعْمَلُ ذَنْبًا إِلَّا وَقَفَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِإِحْصَاءِ ذُنُوْبِهِ ثَلَاثَ سَاعَاتٍ فَإِنِ اسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْ ذَنْبِهِ ذَلِكَ فِي شَيْءٍ مِنْ تِلْكَ السَّاعَاتِ لَمْ يُوْقِفْهُ عَلَيْهِ، وَلَمْ يُعَذَّبْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/٢٦٢

220. हज़रत उम्मे इस्मा औसिया रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई मुसलमान गुनाह करता है तो जो फ़रिश्ता उसके गुनाह लिखने पर मुक़र्रर है वह उस गुनाह को लिखने से तीन घड़ी यानी कुछ देर के लिए ठहर जाता है। अगर उसने उन तीन घड़ियों के दौरान किसी वक़्त भी अल्लाह तआला से अपने उस गुनाह की माफ़ी मांग ली, तो वह फ़रिश्ता आख़िरत में उसे उस गुनाह पर मुत्तला नहीं करेगा और न क़ियामत के दिन (उस गुनाह पर) उसे अज़ाब दिया जाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾221﴿ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ صَاحِبَ الشِّمَالِ لَيَرْفَعُ الْقَلَمَ سِتَّ سَاعَاتٍ عَنِ الْعَبْدِ الْمُسْلِمِ الْمُخْطِئِ أَوِ الْمُسِيْءِ، فَإِنْ نَدِمَ وَاسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْهَا أَلْقَاهَا، وَإِلَّا كُتِبَتْ وَاحِدَةً.

رواه الطبراني باسانيد ورجال احدها وثقوا، مجمع الزوائد ١٠/٢٤٦

221. हज़रत अबू उमामा ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यक़ीनन बाएं तरफ़ का फ़रिश्ता गुनाहगार मुसलमान के लिए छ : घड़ियां (कुछ देर) क़लम को (गुनाह के) लिखने से उठाए रखता है, यानी नहीं लिखता। फिर अगर यह गुनाहगार बन्दा नादिम हो जाता है और अल्लाह तआला से गुनाह की माफ़ी मांग लेता है तो फ़रिश्ता उस गुनाह को नहीं लिखता, वरना एक गुनाह लिख दिया जाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿222﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اَخْطَاَ خَطِیْئَةً نُکِتَتْ فِیْ قَلْبِهٖ نُکْتَةٌ سَوْدَاءُ فَاِذَا هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ سُقِلَ قَلْبُهٗ، وَاِنْ عَادَ زِیْدَ فِیْهَا حَتّٰی تَعْلُوَ قَلْبَهٗ، وَهُوَ الرَّانُ الَّذِیْ ذَکَرَ اللّٰهُ ﴿کَلَّا بَلْ سکتہ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا کَانُوْا یَکْسِبُوْنَ﴾ [المطففین: ١٤]

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب ومن سورة ویل للمطففین، رقم: ٣٣٣٤

222. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में एक स्याह नुक़्ता लग जाता है। फिर उसने इस गुनाह को छोड़ दिया, और अल्लाह तआला से माफ़ी मांग ली और तौबा कर ली तो (वह स्याह नुक़्ता ख़त्म होकर) दिल साफ़ हो जाता है और अगर उसने गुनाह के बाद तौबा व इस्तग़फ़ार के बजाए मज़ीद गुनाह किए तो दिल की स्याही और बढ़ जाती है, यहां तक कि दिल पर छा जाती है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यही वह ज़ंग है जिसे अल्लाह तआला ने کَلَّا بَلْ سکتہ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا کَانُوْا یَکْسِبُوْنَ में ज़िक्र फ़रमाया। (तिर्मिज़ी)

﴿223﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا اَصَرَّ مَنِ اسْتَغْفَرَ وَاِنْ عَادَ فِی الْیَوْمِ سَبْعِیْنَ مَرَّةً. رواه ابوداؤد، باب فی الاستغفار، رقم: ١٥١٤

223. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस्तग़फ़ार करता रहता है वह गुनाह पर अड़ने वाला शुमार नहीं होता, अगरचे दिन में सत्तर मर्तबा गुनाह करे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस गुनाह के बाद नदामत हो और आइंदा उस गुनाह से बचने का पक्का इरादा हो तो वह माफ़ी के क़ाबिल है, अगरचे वह गुनाह बार-बार भी सरज़द हो जाए। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿224﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَزِمَ الْاِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ ضِيْقٍ مَخْرَجًا وَمِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ۔

رواه ابوداؤد، باب في الاستغفار، رقم: ۱۵۱۸

224. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स पाबन्दी से इस्तग़फ़ार करता रहता है, अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते हैं, हर ग़म से उसे नजात अ़ता फ़रमाते हैं और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अ़ता फ़रमाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। (अबूदाऊद)

﴿225﴾ عَنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ اَنْ تَسُرَّهُ صَحِيْفَتُهُ فَلْيُكْثِرْ فِيْهَا مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ۔ رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ۱۰/۳٤۷

225. हज़रत ज़ुबैर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि (क़ियामत के दिन) उसका आमालनामा उसको ख़ुश कर दे तो उसे कसरत से इस्तग़फ़ार करते रहना चाहिए। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿226﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: طُوْبٰى لِمَنْ وَجَدَ فِيْ صَحِيْفَتِهِ اسْتِغْفَارًا كَثِيْرًا۔ رواه ابن ماجه، باب الاستغفار، رقم: ۳۸۱۸

226. हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ख़ुशख़बरी है उस शख़्स के लिए जो अपने आमालनामे में (क़ियामत के दिन) ज़्यादा इस्तग़फ़ार पाए। (इब्ने माजा)

﴿227﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَقُوْلُ: يَا عِبَادِيْ كُلُّكُمْ مُذْنِبٌ اِلَّا مَنْ عَافَيْتُ فَاسْئَلُوْنِي الْمَغْفِرَةَ فَاَغْفِرَ لَكُمْ وَمَنْ عَلِمَ مِنْكُمْ اَنِّيْ ذُوْ قُدْرَةٍ عَلَى الْمَغْفِرَةِ فَاسْتَغْفَرَنِيْ بِقُدْرَتِيْ غَفَرْتُ لَهُ وَكُلُّكُمْ ضَالٌّ اِلَّا مَنْ هَدَيْتُ فَسَلُوْنِي الْهُدٰى اَهْدِكُمْ وَكُلُّكُمْ فَقِيْرٌ اِلَّا مَنْ اَغْنَيْتُ فَسَلُوْنِيْ اَرْزُقْكُمْ وَلَوْ اَنَّ حَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ، وَاَوَّلَكُمْ وَ آخِرَكُمْ، وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوْا فَكَانُوْا عَلٰى قَلْبِ اَتْقٰى عَبْدٍ مِنْ عِبَادِيْ لَمْ يَزِدْ فِيْ مُلْكِيْ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ وَلَوِ اجْتَمَعُوْا فَكَانُوْا عَلٰى قَلْبِ اَشْقٰى عَبْدٍ مِنْ عِبَادِيْ لَمْ يَنْقُصْ مِنْ مُلْكِيْ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ وَلَوْ اَنَّ حَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ، وَاَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوْا، فَسَاَلَ كُلُّ سَائِلٍ مِنْهُمْ مَا بَلَغَتْ اُمْنِيَّتُهُ مَا نَقَصَ مِنْ مُلْكِيْ كَمَا لَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ مَرَّ بِشَفَةِ الْبَحْرِ، فَغَمَسَ فِيْهَا اِبْرَةً ثُمَّ نَزَعَهَا ذٰلِكَ بِاَنِّيْ

جَوَّادٌ مَاجِدٌ عَطَائِي كَلَامٌ إِذَا أَرَدْتُ شَيْئًا، فَإِنَّمَا أَقُوْلُ لَهُ: كُنْ فَيَكُوْنُ.

رواه ابن ماجه، باب ذكر التوبة، رقم: ٤٢٥٧

227. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : मेरे बन्दो! तुममें से हर शख़्स गुनाहगार है, सिवाए उसके जिसे मैं बचा लूं, लिहाज़ा मुझसे मग्फ़िरत मांगो, मैं तुम्हारी मग्फ़िरत कर दूंगा, और जो शख़्स यह जानते हुए कि मैं माफ़ करने पर क़ादिर हूं, मुझसे माफ़ी मांगता है, मैं उसको माफ़ कर देता हूं और तुम सब गुमराह हो सिवाए उसके जिसे मैं हिदायत दूं, लिहाज़ा मुझसे हिदायत मांगो, मैं तुम्हें हिदायत दूंगा और तुम सब फ़क़ीर हो सिवाए उसके जिसे मैं ग़नी कर दूं, लिहाज़ा मुझसे मांगो मैं तुमको रोज़ी दूंगा। अगर तुम्हारे ज़िन्दा, मुर्दा, अगले, पिछले, नबातात और जमादात (भी इंसान बनकर) जमा हो जाएं, फिर ये सारे उस शख़्स की तरह हो जाएं जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला हो तो यह बात मेरी बादशाही में मच्छर के पर के बराबर भी ज़्यादती नहीं कर सकती। अगर तुम्हारे ज़िन्दा, मुर्दा, अगले, पिछले, नबातात और जमादात (भी इंसान बनकर) जमा हो जाएं तो मेरे ख़ज़ानों में इतनी भी कमी नहीं आएगी जितनी तुम में से कोई समुंदर के किनारे पर से गुज़रे और उसमें सूई डूबो कर निकाल ले। यह इसलिए कि मैं बहुत सख़ी हूं, बुज़ुर्गी वाला हूं, मेरा देना सिर्फ़ कह देना है। मैं जब किसी चीज़ का इरादा करता हूं तो उस चीज़ को कह देता हूं कि हो जा, वह हो जाती है। (इब्ने माजा)

﴿228﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنِ اسْتَغْفَرَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ، كَتَبَ اللهُ لَهُ بِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ حَسَنَةً.

رواه الطبراني واسناده جيد، مجمع الزوائد ١٠/٣٥٢

228. हज़रत उ़बादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए इस्तग़्फ़ार करे, अल्लाह तआ़ला उसके लिए हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत के बदले एक नेकी लिख देते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿229﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ فَتَصَافَحَا وَحَمِدَا اللهَ وَاسْتَغْفَرَاهُ غُفِرَ لَهُمَا.

رواه ابو داؤد، باب في المصافحة، رقم: ٥٢١١

229. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ा करते हैं और अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करते हैं और अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत तलब करते हैं (मसलन اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ कहते हैं) तो उनकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (अबूदाऊद)

﴿230﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: كَيْفَ تَقُوْلُوْنَ بِفَرَحِ رَجُلٍ انْفَلَتَتْ مِنْهُ رَاحِلَتُهُ، تَجُرُّ زِمَامَهَا بِاَرْضٍ قَفْرٍ لَيْسَ بِهَا طَعَامٌ وَلَا شَرَابٌ، وَعَلَيْهَا لَهُ طَعَامٌ وَشَرَابٌ، فَطَلَبَهَا حَتّٰى شَقَّ عَلَيْهِ، ثُمَّ مَرَّتْ بِجِذْلِ شَجَرَةٍ، فَتَعَلَّقَ زِمَامُهَا، فَوَجَدَهَا مُتَعَلِّقَةً بِهِ؟ قُلْنَا: شَدِيْدًا، يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَمَا، اِنَّهُ وَاللّٰهِ! لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ، مِنَ الرَّجُلِ بِرَاحِلَتِهِ.

رواه مسلم، باب في الحض على التوبة والفرح بها، ٦٩٥٩

230. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम उस शख़्स की ख़ुशी के बारे में क्या कहते हो जिसकी ऊंटनी किसी सुनसान जंगल में अपनी नकेल की रस्सी घसीटती हुई निकल जाए, जहां न खाना हो न पानी, और उस ऊंटनी पर उस शख़्स का खाना और पानी रखा हुआ हो और वह उस ऊंटनी को ढूंढ-ढूंढ कर थक जाए, फिर वह ऊंटनी एक दरख़्त के तने के पास से गुज़रे तो उसकी नकेल दरख़्त के तने में अटक जाए और उस शख़्स को वह ऊंटनी उस तने में अटकी हुई मिल जाए? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसको बहुत ही ज़्यादा ख़ुशी होगी। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुनो, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला को अपने बन्दे की तवज्जोह पर उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी उस शख़्स को (ऐसे सख़्त हाल में मायूस होने के बाद) सवारी के मिल जाने से होती है। (मुस्लिम)

﴿231﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ حِيْنَ يَتُوْبُ اِلَيْهِ، مِنْ اَحَدِكُمْ كَانَ عَلٰى رَاحِلَتِهِ بِاَرْضِ فَلَاةٍ، فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ، وَعَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ، فَاَيِسَ مِنْهَا، فَاَتٰى شَجَرَةً، فَاضْطَجَعَ فِي ظِلِّهَا، قَدْ اَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهِ، فَبَيْنَا هُوَ كَذٰلِكَ اِذْ هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهُ، فَاَخَذَ بِخِطَامِهَا، ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ: اَللّٰهُمَّ! اَنْتَ عَبْدِيْ وَاَنَا رَبُّكَ، اَخْطَاَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ.

رواه مسلم، باب في الحض على التوبة والفرح بها، رقم: ٦٩٦٠

231. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से उससे भी ज़्यादा ख़ुश होते हैं जो ख़ुशी तुममें से किसी को उस वक़्त होती है जब वह अपनी सवारी के साथ जंगल बयाबान में हो और सवारी उससे छूट कर चली जाए जिस पर उसका खाना- पीना भी रखा हुआ हो, फिर वह अपनी सवारी के मिलने से नाउम्मीद होकर किसी दरख़्त के साए में आकर लेट जाए। अब जबकि वह अपनी सवारी के मिलने से बिल्कुल नाउम्मीद हो चुका था कि अचानक उसे वह सवारी खड़ी नज़र आए तो वह फ़ौरन उसकी नकेल पकड़ ले और ख़ुशी के ग़लबा में ग़लती से यूं कह जाए या अल्लाह! आप मेरे बन्दे हैं और मैं आपका रब हूं। (मुस्लिम)

﴿232﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنْ رَجُلٍ فِي اَرْضٍ دَوِيَّةٍ مَهْلِكَةٍ مَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَنَامَ فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ فَطَلَبَهَا حَتّٰى اَدْرَكَهُ الْعَطَشُ ثُمَّ قَالَ: اَرْجِعُ اِلٰى مَكَانِيَ الَّذِيْ كُنْتُ فِيْهِ، فَاَنَامُ حَتّٰى اَمُوْتَ، فَوَضَعَ رَاْسَهُ عَلٰى سَاعِدِهِ لِيَمُوْتَ فَاسْتَيْقَظَ وَعِنْدَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا زَادُهُ وَطَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَاللهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ الْمُؤْمِنِ مِنْ هٰذَا بِرَاحِلَتِهِ وَزَادِهِ.

رواه مسلم، باب في الحض على التوبة والفرح بها، رقم: ٦٩٥٥

232. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला को अपने मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुशी होती है जो किसी हलाकत वाले जंगल में सवारी पर जाए जिस पर उसका खाना-पीना रखा हो और वह (सवारी से उतर कर) सो जाए और जब आंख खुले और देखे कि सवारी कहीं जा चुकी है, तो वह उसको ढूंढता रहे, यहां तक कि जब उसे (सख़्त) प्यास लगे तो कहे कि मैं वापस उसी जगह जाता हूं जहां मैं पहले था और मैं वहां सो जाऊंगा यहां तक कि मर जाऊं, चुनांचे वह बाज़ू पर सर रख कर लेट जाता है ताकि मर जाए, फिर वह बेदार होता है तो उसकी सवारी उसके पास मौजूद होती है जिस पर उसका तोशा और खाने-पीने का सामान रखा हुआ होता है। अल्लाह तआला को मोमिन बन्दे की तौबा पर उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी उस शख़्स को (नाउम्मीद होने के बाद) अपनी सवारी और तोशा (के मिल जाने) से होती है। (मुस्लिम)

﴿233﴾ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ، وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا۔ رواه مسلم، باب قبول التوبة من الذنوب......رقم: ٦٩٨٩

233. हज़रत अबू मूसा ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला रात भर अपनी रहमत का हाथ बढ़ाए रखते हैं ताकि दिन का गुनहगार रात को तौबा कर ले, और दिन भर अपनी रहमत का हाथ बढ़ाए रखते हैं ताकि रात का गुनहगार दिन में तौबा कर ले (और यह सिलसिला जारी रहेगा) यहां तक कि सूरज मग़्रिब से निकले। (उसके बाद तौबा क़ुबूल नहीं होगी)। (मुस्लिम)

﴿234﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ بِالْمَغْرِبِ بَابًا عَرْضُهُ مَسِيرَةُ سَبْعِينَ عَامًا لِلتَّوْبَةِ لَا يُغْلَقُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ قِبَلِهِ. (وهو قطعة من الحديث) رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في فضل التوبة، رقم: ٣٥٣٦

234. हज़रत सफ़्वान बिन अ़स्साल ؓ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला ने मग़्रिब की जानिब से एक दरवाज़ा तौबा के लिए बनाया है, (जिसकी लम्बाई का तो क्या पूछना) उसकी चौड़ाई सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर है जो कभी बन्द न होगा, यहां तक कि सूरज मग़्रिब की तरफ़ से निकले (उस वक़्त क़ियामत क़रीब होगी और तौबा का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा)। (तिर्मिज़ी)

﴿235﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ان الله يقبل توبة العبد ...رقم: ٣٥٣٧

235. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल फ़रमा हैं, जब तक ग़रग़रा यानी नज़अ् की कैफ़ियत शुरू न हो जाए। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मौत के वक़्त जब बन्दे की रूह जिस्म से निकलने लगती है तो हलक़ की नाली में एक क़िस्म की आवाज़ पैदा होती है जिसे ग़रग़रा कहते हैं, उस बाद ज़िन्दगी की कोई उम्मीद नहीं रहती, यह मौत की यक़ीनी और आख़िरी अ़लामत होती है, लिहाज़ा इस अ़लामत के ज़ाहिर होने के बाद तौबा करना या ईमान लाना मोतबर नहीं होता।

﴿236﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ تَابَ قَبْلَ مَوْتِهِ بِعَامٍ تِيْبَ عَلَيْهِ حَتّٰى قَالَ بِشَهْرٍ حَتّٰى قَالَ بِجُمُعَةٍ، حَتّٰى قَالَ بِيَوْمٍ، حَتّٰى قَالَ بِسَاعَةٍ، حَتّٰى قَالَ بِفُوَاقٍ. رواه الحاكم ٢٥٨/٤

236. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी मौत से एक साल पहले तौबा कर ले बल्कि महीना, हफ़्ता, एक दिन, एक घड़ी और ऊंटनी का दूध एक मर्तबा दूहने के बाद दूसरी मर्तबा दूहने तक का जो थोड़ा-सा दर्मियानी वक़्फ़ा है, मौत से इतनी देर पहले तक भी तौबा कर ले तो क़ुबूल हो जाती है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿237﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَخْطَا خَطِيْئَةً اَوْ اَذْنَبَ ذَنْبًا ثُمَّ نَدِمَ فَهُوَ كَفَّارَتُهُ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٣٨٧/٥

237. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने कोई ग़लती की या कोई गुनाह किया, फिर उस पर शर्मिन्दा हुआ तो यह शर्मिन्दगी उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा है। (बैहक़ी)

﴿238﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كُلُّ ابْنِ آدَمَ خَطَّاءٌ، وَخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ.

رواه الترمذي وقال هذا حديث غريب، باب في استعظام المؤمن ذنوبه رقم: ٢٤٩٩

238. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर आदमी ख़ता करने वाला है और बेहतरीन ख़ता करने वाले वे हैं जो तौबा करने वाले हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿239﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ مِنْ سَعَادَةِ الْمَرْءِ اَنْ يَطُوْلَ عُمْرُهُ، وَيَرْزُقَهُ اللّٰهُ الْاِنَابَةَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢٤٠/٤

239. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इंसान की नेकबख़्ती में से यह है कि उसकी उम्र लम्बी हो और अल्लाह तआ़ला उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दें।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴾240﴿ عَنِ الْاَغَرِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَآ يُّهَا النَّاسُ! تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ، فَاِنِّيْ اَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ فِي الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ.

رواه مسلم، باب استحباب الاستغفار......، رقم: ٦٨٥٩

240. हज़रत अग़र्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा किया करो, इसलिए कि मैं ख़ुद दिन में सौ मर्तबा अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा करता हूं। (मुस्लिम)

﴾241﴿ عَنِ ابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: يَآ يُّهَا النَّاسُ! اِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: لَوْ اَنَّ ابْنَ آدَمَ اُعْطِيَ وَادِيًا مِلْأً مِنْ ذَهَبٍ، اَحَبَّ اِلَيْهِ ثَانِيًا، وَلَوْ اُعْطِيَ ثَانِيًا اَحَبَّ اِلَيْهِ ثَالِثًا، وَلَا يَسُدُّ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ اِلَّا التُّرَابُ، وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ.

رواه البخاري، باب ما يتقى من فتنة المال رقم: ٦٤٣٨

241. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ﷺ फ़रमाते हैं कि लोगो! नबी करीम ﷺ इर्शाद फ़रमाते थे : अगर इंसान को सोने से भरा हुआ एक जंगल मिल जाए तो दूसरे की ख़्वाहिश करेगा और अगर दूसरा जंगल मिल जाए तो तीसरे की ख़्वाहिश करेगा, इंसान का पेट तो सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है (यानी क़ब्र की मिट्टी में जाकर ही वह अपने उस माल के बढ़ाने की ख़्वाहिश से रुक सकता है) अलबत्ता अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर मेहरबानी फ़रमाते हैं जो अपने दिल का रुख़ दुनिया की दौलत के बजाए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ कर ले (उसे अल्लाह तआ़ला दुनिया में दिल का इत्मीनान नसीब फ़रमाते हैं और माल के बढ़ाने की हिर्स से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं) (बुख़ारी)

﴾242﴿ عَنْ زَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ غُفِرَ لَهُ، وَاِنْ كَانَ فَرَّ مِنَ الزَّحْفِ. رواه ابو داؤد، باب في الاستغفار، رقم: ١٥١٧ ورواه الحاكم من حديث ابن مسعود وقال: صحيح على شرط مسلم الا انه قال: يَقُوْلُهَا ثَلَاثًا، ووافقه الذهبي ١١٨/٢

242. हज़रत ज़ैद ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स **'अस्तग़्फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हैय्युल क़ैय्यूम'** कहे, उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी, अगरचे वह जिहाद के मैदान से भागा हो। एक रिवायत में इन कलिमे के तीन मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र है।

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला से मग्फ़िरत चाहता हूं, जिनके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा हैं, क़ायम रहने वाले हैं और उन्हीं के सामने तौबा करता हूं। (अबूदाऊद, मुस्तदरक हाकिम)

﴿243﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: وَا ذُنُوْبَاهُ وَا ذُنُوْبَاهُ، فَقَالَ هٰذَا الْقَوْلَ مَرَّتَيْنِ أَوْثَلاَثًا، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ أَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ أَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ، فَقَالَهَا ثُمَّ قَالَ: عُدْ فَعَادَ، ثُمَّ قَالَ: عُدْ فَعَادَ، فَقَالَ: قُمْ فَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ. رواه الحاكم، وقال: حديث رواته عن آخرهم مدنيون ممن لا يعرف واحد منهم بجرح ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٤٣

243. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे : हाए मेरे गुनाह! हाए मेरे गुनाह! उसने यह दो या तीन मर्तबा कहा। रसूलुल्लाह ﷺ ने उससे इर्शाद फ़रमाया : तुम कहो ऐ अल्लाह! आपकी मग्फ़िरत मेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा वसीअ़ है और मैं अपन अमल से ज़्यादा आपकी रहमत का उम्मीदवार हूं। उस शख़्स ने ये कलिमे कहे। आ ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर कहो, उसने फिर कहे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया फिर कहो उसने तीसरी मर्तबा भी ये कलिमे कहे। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उठ जाओ अल्लाह तआला ने तुम्हारी मग्फ़िरत फ़रमा दी। (मुस्तदरक हाकि

﴿244﴾ عَنْ سَلْمٰى أُمِّ بَنِيْ أَبِيْ رَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَوْلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَخْبِرْنِيْ بِكَلِمَاتٍ وَلَا تُكْثِرْ عَلَيَّ، قَالَ: قُوْلِيْ: اَللهُ أَكْبَرُ عَشْرَ مَرَّاتٍ، يَقُوْلُ اللهُ: هٰذَا لِيْ وَقُوْلِيْ: سُبْحَانَ اللهِ عَشْرَ مَرَّاتٍ، يَقُوْلُ اللهُ: هٰذَا لِيْ، وَقُوْلِيْ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ، يَقُوْلُ: قَدْ فَعَلْتُ: فَتَقُوْلِيْنَ عَشْرَ مِرَارٍ، يَقُوْلُ: قَدْ فَعَلْتُ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/١٠٩

244. हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया : । रसूलुल्लाह! मुझे चन्द कलिमे बता दीजिए मगर ज़्यादा न हों। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहो। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यह ेरे लिए है। दस मर्तबा सुब्हानल्लाह कहो, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यह मेरे ि ए है और कहो अल्लाहुम्मग़्फ़िरली ''ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए'' अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : मैंने मग़्फ़िरत कर दी। तुम उसको दस मर्तबा कहो अल ह तआला हर मर्तबा फ़रमाते हैं : मैंने मग़्फ़िरत कर दी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿245﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: عَلِّمْنِي كَلَامًا أَقُوْلُهُ، قَالَ: قُلْ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، اَللهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ. قَالَ: فَهٰؤُلَاءِ لِرَبِّيْ، فَمَالِيْ؟ قَالَ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ. رواه مسلم، رقم: ٦٨٤٨ و زاد من حديث ابي مالك: وَعَافِنِيْ وقال في رواية: فَإِنَّ هٰؤُلَاءِ تَجْمَعُ لَكَ دُنْيَاكَ وَآخِرَتَكَ. رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٥١، ٦٨٥٠

245. हजरत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है एक देहात के रहने वाले शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : मुझे कोई ऐसा कलाम सिखा दीजिए, जिसको मैं पढ़ता रहूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह कहा करो ।

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं, उनका कोई शरीक नहीं। अल्लाह तआ़ला बहुत ही बड़े हैं और अल्लाह तआ़ला ही के लिए बहुत तारीफ़ें हैं। अल्लाह तआ़ला हर ऐब से पाक हैं जो तमाम जहानों के पालने वाले हैं। गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ुव्वत अल्लाह तआ़ला ही की मदद से है, जो ग़ालिब हैं, हिकमत वाले हैं। उस देहात के रहने वाले शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ये कलिमात तो मेरे रब को याद करने के लिए हैं। मेरे लिए वे कौन से कलिमात हैं (जिनके ज़रिए मैं अपने लिए दुआ़ करूं)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस तरह मांगो : अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, मुझ पर रहम फ़रमा दीजिए, मुझे हिदायत दे दीजिए, मुझे रोज़ी दे दीजिए और मुझे आ़फ़ियत अ़ता फ़रमा दीजिए।'

एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ये कलिमे तुम्हारे लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई को जमा कर देंगे। (मुस्लिम)

﴿246﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَعْقِدُ التَّسْبِيْحَ بِيَدِهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في عقد التسبيح باليد، رقم: ٣٤٨٦

246. हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को अपने मुबारक हाथ की उंगलियों पर तस्बीह शुमार करते देखा। (तिर्मिज़ी)

بسم الله الرحمن الرحيم

रसूलुल्लाह ﷺ से मंक़ूल अज़कार और दुआएँ

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ [البقرة: ١٨٦]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : जब आप से मेरे बन्दे मेरे मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करें (कि मैं क़रीब हूं या दूर) तो आप बता दीजिए कि मैं क़रीब ही हूं, दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ को क़ुबूल करता हूं जब वह मुझसे दुआ़ मांगे। (बक़र: 186)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَاؤُكُمْ﴾ [الفرقان: ٧٧]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए, अगर तुम दुआ़ न करो, तो मेरा रब भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करेगा। (फ़ुरक़ान : 77)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً﴾ [الاعراف: ٥٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : लोगो! अपने रब से गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके दुआ़ किया करो। (आराफ़ : 55)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا﴾ [الاعراف: ٥٦]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला से डरते हुए और रहमत की उम्मीद रखते हुए दुआ़ मांगते रहना। (आराफ़ : 56)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا﴾ [الاعراف: ١٨٠]

एक जगह इर्शाद है : और अच्छे-अच्छे सब नाम अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास हैं, लिहाज़ा उन्हीं नामों से अल्लाह तआ़ला को पुकारा करो। (आराफ़ : 180)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ﴾ [النمل: ٦٢]

एक जगह इर्शाद है : (अल्लाह तआ़ला के सिवा) भला कौन है जो बेक़रार की दुआ़ क़ुबूल करता है, जब वह बेक़रार उसको पुकारता है और तकलीफ़ व मुसीबत को दूर कर देता है। (नम्ल : 62)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ﴾

[البقرة: ١٥٦، ١٥٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (सब्र करने वाले वे हैं जिनकी यह आदत है कि) जब उन पर किसी क़िस्म की कोई भी मुसीबत आती है, तो (दिल से समझ कर यूं) कहते हैं कि हम तो (माल व औलाद समेत, हक़ीक़त में) अल्लाह तआ़ला ही की मिल्कियत हैं (और हक़ीक़ी मालिक को अपनी चीज़ में हर तरह का अख़्तियार होता है, लिहाज़ा बन्दे को मुसीबत में परेशान होने की ज़रूरत नहीं) और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआ़ला ही के पास जाने वाले हैं (लिहाज़ा यहां के नुक़सानों का बदला वहां मिल कर रहेगा) यही वे लोग हैं, जिन पर उनके रब की जानिब से ख़ास-ख़ास रहमतें हैं (जो सिर्फ़ उन्हीं पर होंगी) और आ़म रहमत भी होगी (जो सब पर होती है) और यही हिदायत पाने वाले हैं। (बक़रः 156-157)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۝ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ۝ هٰرُوْنَ اَخِي ۝ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ۝ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ۝ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۝ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا﴾ [طه: ٢٤-٣٤]

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा عليه السلام से इर्शाद फ़रमाया : फ़िरऔन के पास जाओ, क्योंकि वह बहुत हद से निकल गया है। मूसा عليه السلام ने दरख़्वास्त की, मेरे रब! मेरा हौसला बढ़ा दीजिए और मेरे लिए मेरे (तब्लीग़ी) काम को आसान कर दीजिए और मेरी ज़बान का बन्द यानी लुकनत हटा दीजिए, ताकि लोग मेरी बात समझ सकें और मेरे घर वालों में से मेरे लिए एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए वह मददगार हारून को बना दीजिए जो मेरे भाई हैं। उनके ज़रिए मेरी कमर-ए-हिम्मत मज़बूत कर दीजिए और उनको मेरे (तब्लीग़ी) काम में शरीक कर दीजिए, ताकि हम मिलकर आपकी पाकी ब्यान करें और ख़ूब कसरत से आप का ज़िक्र करें। (ताहा : 24-34)

नबी ﷺ की हदीसें

﴾247﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب منه الدعاء مخ العبادة، رقم: ٣٣٧١

247. हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से नबी करीम ﷺ का इर्शाद मंक़ूल है : दुआ इबादत का मग़्ज़ है। (तिर्मिज़ी)

﴾248﴿ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ، ثُمَّ قَالَ﴿ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ﴾

رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن صحيح، باب ومن سورة المؤمن، رقم: ٣٢٤٧

248. हज़रत नोमान बिन बशीर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : दुआ इबादत ही है। उसके बाद आप ﷺ ने (दलील के तौर पर) क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई :

तर्जुमा : और तुम्हारे रब ने इर्शाद फ़रमाया है : मुझसे दुआ मांगा करो, मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करूंगा, बिलाशुब्हा जो लोग मेरी बन्दगी करने से तकब्बुर करते हैं वे अंक़रीब ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴾249﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَلُوا اللهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يُحِبُّ اَنْ يُسْاَلَ، وَاَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اِنْتِظَارُ الْفَرَجِ.

رواه الترمذي، باب في انتظار الفرج، رقم: ٣٥٧١

249. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से उसका फ़ज़्ल मांगो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला को यह बात पसन्द है कि उनसे मांगा जाए और कुशादगी (की दुआ़ के बाद कुशादगी) का इंतज़ार करना अफ़ज़ल इबादत है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : कुशादगी के इंतिज़ार का मतलब यह है कि इस बात की उम्मीद रखी जाए कि जिस रहमत, हिदायत, भलाई के लिए दुआ़ मांगी जा रही है, वह इन्शाअल्लाह ज़रूर हासिल होगी।

﴾250﴿ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَرُدُّ الْقَدْرَ اِلَّا الدُّعَاءُ، وَلَا يَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ اِلَّا الْبِرُّ وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيْبُهُ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٤٩٣

250. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुआ़ के सिवा कोई चीज़ तक़दीर के फ़ैसले को टाल नहीं सकती और नेकी के सिवा कोई चीज़ उम्र को नहीं बढ़ा सकती और आदमी (कभी-कभी) किसी गुनाह के करने की वजह से रोज़ी से महरूम कर दिया जाता है। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला के यहां यह तय होता है कि यह शख़्स अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगेगा और जो मांगेगा वह उसे मिलेगा। चुनांचे हदीस शरीफ़ में आता है ''दुआ़ करना भी अल्लाह तआ़ला के हां मुक़द्दर होता है''।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला के हां यह फ़ैसला होता है कि उस शख़्स की उम्र मिसाल के तौर पर साठ साल है लेकिन यह शख़्स फ़लां नेकी (मिसाल के तौर पर हज) करेगा, इसलिए उसकी उम्र बीस साल बढ़ा दी जाएगी और यह अस्सी साल दुनिया में ज़िन्दा रहेगा। (मिरक़ात)

﴾251﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا عَلَى الْاَرْضِ مُسْلِمٌ يَدْعُو اللهَ تَعَالَى بِدَعْوَةٍ اِلَّا آتَاهُ اللهُ اِيَّاهَا اَوْصَرَفَ عَنْهُ مِنَ السُّوْءِ مِثْلَهَا مَا لَمْ يَدْعُ

بِمَا أَثَمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: إِذًا نُكْثِرُ قَالَ: اللهُ أَكْثَرُ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب صحيح، باب انتظار الفرج وغير ذلك، رقم: ٣٥٧٣ ورواه الحاكم وزاد فيه: أَوْ يَدَّخِرُ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلَهَا وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ١/٤٩٣

251. हज़रत उबादा बिन सामित ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़मीन पर जो मुसलमान भी अल्लाह तआला से कोई ऐसी दुआ करता है, जिसमें कोई गुनाह या रिश्तों के काटने की बात न हो तो अल्लाह तआला या तो उसको वही अता फ़रमा देते हैं जो उसने मांगा है या कोई तकलीफ़ उस दुआ के बक़द्र उससे हटा लेते हैं या उसके लिए उस दुआ के बराबर अज्र का ज़ख़ीरा कर देते हैं। एक शख़्स ने अर्ज़ किया : जब बात यह है (कि दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है और उसके बदले में कुछ न कुछ ज़रूर मिलता है) तो हम बहुत ज़्यादा दुआएं करेंगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला भी बहुत ज़्यादा देने वाले हैं। (तिर्मिज़ी, मुस्तदरक हाकिम)

﴿252﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ حَيِيٌّ كَرِيمٌ يَسْتَحْيِي إِذَا رَفَعَ الرَّجُلُ إِلَيْهِ يَدَيْهِ أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا خَائِبَتَيْنِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ان الله حيي كريم... رقم: ٣٥٥٦

252. हज़रत सलमान फ़ारसी ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा अल्लाह तआला की ज़ात में बहुत ज़्यादा हया की सिफ़त है, वह बग़ैर मांगे बहुत ज़्यादा देने वाले हैं। जब आदमी अल्लाह तआला के सामने मांगने के लिए हाथ उठाता है, तो उन्हें उन हाथों को ख़ाली और नाकाम वापस करने से हया आती है (इसलिए ज़रूर अता फ़रमाने का फ़ैसला फ़रमाते हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴿253﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ يَقُولُ: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِي. رواه مسلم، باب فضل الذكر والدعاء، رقم: ٦٨٢٩

253. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं अपने बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूं जैसा कि वह मेरे साथ गुमान रखता है और जिस वक़्त वह मुझसे दुआ करता है, तो मैं उसके साथ होता हूं। (मुस्लिम)

﴾254﴿ عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَمَ عَلَى اللهِ تَعَالٰى مِنَ الدُّعَاءِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل الدعاء، رقم: ٣٣٧٠

254. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से ज़्यादा बुलन्द मर्तबा कोई चीज़ नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴾255﴿ عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَسْتَجِيْبَ اللهُ لَهُ عِنْدَ الشَّدَائِدِ وَالْكُرَبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِي الرَّخَاءِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، رقم: ٣٣٨٢

255. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह तआला सख़्तियों और बेचैनियों के वक़्त उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएं, उसे चाहिए कि वह ख़ुशहाली के ज़माने में ज़्यादा दुआ किया करे। (तिर्मिज़ी)

﴾256﴿ عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح ووافقه الذهبي ١/٤٩٢

256. हज़रत अली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुआ मोमिन का हथियार है, दीन का सतून है और ज़मीन व आसमान का नूर है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾257﴿ عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يَزَالُ يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيْعَةِ رَحِمٍ، مَا لَمْ يَسْتَعْجِلْ، قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا الْاِسْتِعْجَالُ؟ قَالَ: يَقُوْلُ: قَدْ دَعَوْتُ، وَقَدْ دَعَوْتُ، فَلَمْ أَرَ يَسْتَجِيْبُ لِيْ، فَيَسْتَحْسِرُ عِنْدَ ذٰلِكَ، وَيَدَعُ الدُّعَاءَ.

رواه مسلم، باب بيان انه يستجاب للداعي ... رقم: ٦٩٣٦

257. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब तक गुनाह और रिश्तों के काटने की दुआ न करे उसकी दुआ क़ुबूल होती रहती है, बशर्ते कि वह जल्दबाज़ी न करे। पूछा गया : या रसूलुल्लाह! जल्दबाज़ी का

क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया : बन्दा कहता है मैंने दुआ की, फिर दुआ की, लेकिन मुझे तो क़ुबूल होती नज़र नहीं आती, फिर उकता कर दुआ करना छोड़ देता है। (मुस्लिम)

﴾258﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَيَنْتَهِيَنَّ اَقْوَامٌ عَنْ رَفْعِهِمْ اَبْصَارَهُمْ، عِنْدَ الدُّعَاءِ فِی الصَّلَاةِ اِلَی السَّمَاءِ اَوْ لَتُخْطَفَنَّ اَبْصَارُهُمْ۔

رواه مسلم، باب النهى عن رفع البصر الى السماء فى الصلاة، صحيح مسلم ١/٣٢١ طبع دار احياء التراث العربى، بيروت

258. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोग नमाज़ में दुआ के वक़्त अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाने से बाज़ आ जाएं वरना उनकी बीनाई उचक ली जाएगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नमाज़ में दुआ के वक़्त आसमान की तरफ़ निगाह उठाने से ख़ास तौर पर इस वजह से मना किया गया है कि दुआ के वक़्त निगाह आसमान की तरफ़ उठ ही जाती है। (फ़त्हुलमुल्हिम)

﴾259﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اُدْعُوا اللّٰهَ وَاَنْتُمْ مُوْقِنُوْنَ بِالْاِجَابَةِ، وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَجِيْبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لَاهٍ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، كتاب الدعوات، رقم: ٣٤٧٩

259. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अल्लाह तआला से दुआ की क़ुबूलियत का यक़ीन रखते हुए दुआ मांगो और यह बात समझ लो कि अल्लाह तआला उस शख़्स की दुआ को क़ुबूल नहीं फ़रमाते, जिसका दिल (दुआ मांगते वक़्त) अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल हो, अल्लाह तआला के ग़ैर में लगा हुआ हो। (तिर्मिज़ी)

﴾260﴿ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ مَسْلَمَةَ الْفِهْرِيِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَجْتَمِعُ مَلَأٌ فَيَدْعُو بَعْضُهُمْ وَيُؤَمِّنُ الْبَعْضُ اِلَّا اَجَابَهُمُ اللّٰهُ۔ رواه الحاكم ٣/٣٤٧

260. हज़रत हबीब बिन मसलमा फ़िहरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो जमाअत एक जगह जमा हो और उनमें से एक दुआ करे और दूसरे आमीन कहें तो अल्लाह तआला उनकी दुआ ज़रूर क़ुबूल फ़रमाते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾261﴿ عَنْ زُهَيْرِ النُّمَيْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ، فَاَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ قَدْ اَلَحَّ فِي الْمَسْئَلَةِ، فَوَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَمِعُ مِنْهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَوْجَبَ اِنْ خَتَمَ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: بِاَيِّ شَيْءٍ يَخْتِمُ، فَقَالَ : بِآمِيْنَ، فَاِنَّهُ اِنْ خَتَمَ، بِآمِيْنَ فَقَدْ اَوْجَبَ، فَانْصَرَفَ الرَّجُلُ الَّذِيْ سَاَلَ النَّبِيَّ ﷺ ، فَاَتَى الرَّجُلَ فَقَالَ: اِخْتِمْ يَا فُلَانُ بِآمِيْنَ وَ اَبْشِرْ۔ رواه ابوداؤد، باب التامين وراء الامام، رقم: ٩٣٨

261. हजरत ज़ुहैर नुमैरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हम एक रात रसूलुल्लाह ﷺ के साथ निकले तो हमारा गुज़र एक शख़्स के पास से हुआ जो बहुत आजिज़ी के साथ दुआ में लगा हुआ था। नबी करीम ﷺ उसकी दुआ सुनने खड़े हो गए और फिर इर्शाद फ़रमाया : यह दुआ क़ुबूल करवा लेगा अगर उस पर मुहर लगा दे। लोगों में से एक शख़्स ने अर्ज़ किया, किस चीज़ के साथ मुहर लगाए? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आमीन के साथ। बिलाशुब्हा अगर उसने आमीन के साथ मुहर लगा दी, यानी दुआ के ख़त्म पर आमीन कह दी तो उसने दुआ को क़ुबूल करवा लिया। फिर उस शख़्स ने जिसने नबी करीम ﷺ से मुहर के बारे में दरयाफ़्त किया था, उस (दुआ मांगने वाले) शख़्स से जाकर कहा, फ़्लां! आमीन के साथ दुआ को ख़त्म करो, और दुआ की क़ुबूलियत की ख़ुशख़बरी हासिल करो। (अबूदाऊद)

﴾262﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَسْتَحِبُّ الْجَوَامِعَ مِنَ الدُّعَاءِ وَيَدَعُ مَا سِوٰى ذٰلِكَ۔ رواه ابوداؤد، باب الدعاء، رقم: ١٤٨٢

262. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जामेअ् दुआओं को पसन्द फ़रमाते थे और इसके अलावा की दुआओं को छोड़ देते थे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : जामेअ् दुआ से वह दुआ मुराद है, जिसमें अल्फ़ाज़ मुख़्तसर हों और मफ़हूम में वुस्अत हो या वह दुआ मुराद है जिसमें दुनिया व आख़िरत की भलाई को मांगा गया हो या वह दुआ मुराद है, जिसमें तमाम मोमिनीन को शामिल किया गया हो जैसे रसूलुल्लाह ﷺ से अक्सर यह जामेअ् दुआ मंक़ूल है : 'रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तों-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तौं-व क़िना अज़ा-बन्नार०'। (बज़्लुलमज्हूद)

﴾263﴿ عَنِ ابْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعَنِيْ اَبِيْ وَاَنَا اَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اَسْاَلُكَ

الْجَنَّةَ، وَنَعِيْمَهَا وَبَهْجَتَهَا، وَ كَذَا وَكَذَا، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَسَلَاسِلِهَا، وَأَغْلَالِهَا وَكَذَا وَكَذَا، فَقَالَ: يَا بُنَيَّ! إِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَيَكُوْنُ قَوْمٌ يَعْتَدُوْنَ فِي الدُّعَاءِ، فَإِيَّاكَ أَنْ تَكُوْنَ مِنْهُمْ، إِنَّكَ إِنْ أُعْطِيْتَ الْجَنَّةَ أُعْطِيْتَهَا وَمَا فِيْهَا مِنَ الْخَيْرِ، وَإِنْ أُعِذْتَ مِنَ النَّارِ أُعِذْتَ مِنْهَا وَمَا فِيْهَا مِنَ الشَّرِّ. رواه ابوداؤد،باب الدعاء، رقم: ١٤٨٠

263. हज़रत सअ्द ﷺ के बेटे फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं दुआ में यूं कह रहा था, ऐ अल्लाह! मैं आपसे जन्नत और उसकी नेमतों और उसकी बहारों और फ़्लां-फ़्लां चीज़ों का सवाल करता हूं और मैं जहन्नम से और उसकी ज़ंजीरों, हथकड़ियों और फ़्लां-फ़्लां क़िस्म के अज़ाब से पनाह मांगता हूं। मेरे वालिद सअ्द ﷺ ने यह सुना तो इर्शाद फ़रमाया : मेरे प्यारे बेटे! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अंक़रीब ऐसे लोग होंगे जो दुआ में मुबालग़े से काम लिया करेंगे। तुम उन लोगों में शामिल होने से बचो। अगर तुम्हें जन्नत मिल गई, तो जन्नत की सारी नेमतें मिल जाएंगी और अगर तुम्हें जहन्नम से निजात मिल गई तो जहन्नम की तमाम तकलीफ़ों से नजात मिल जाएगी (लिहाज़ा दुआ में इस तफ़सील की ज़रूरत नहीं, बल्कि जन्नत की तलब और दोज़ख़ से पनाह मांगना काफ़ी है)। (अबूदाऊद)

﴿264﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً، لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ خَيْرًا مِنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ، وَذَٰلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ. رواه مسلم،باب في الليل ساعة مستجاب فيها الدعاء، رقم: ١٧٧٠

264. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हर रात में एक घड़ी ऐसी होती है कि मुसलमान बन्दा उसमें दुनिया व आख़िरत की जो ख़ैर मांगता है, अल्लाह तआला उसे ज़रूर अता फ़रमाते हैं। (मुस्लिम)

﴿265﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا حِيْنَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ يَقُوْلُ: مَنْ يَدْعُوْنِي فَأَسْتَجِيْبَ لَهُ؟ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ؟ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ؟

رواه البخاري،باب الدعاء والصلاة من آخر الليل، رقم: ١١٤٥

265. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, तो हर रात हमारे रब अल्लाह तआला

की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाते हैं और इर्शाद फ़रमाते हैं : कौन है जो मुझसे दुआ करे, मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूं? कौन है जो मुझसे मांगे मैं उसको अ़ता करूं? कौन है जो मुझसे मग्फ़िरत तलब करे मैं उसकी मग्फ़िरत करूं? (बुख़ारी)

﴿266﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ اَبِىْ سُفْيَانَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ دَعَا بِهٰؤُلَآءِ الْكَلِمَاتِ الْخَمْسِ لَمْ يَسْاَلِ اللهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ.

رواه الطبراني في الكبير والاوسط واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٢٤١

266. हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स भी इन पांच कलिमात के ज़रिए कोई चीज़ अल्लाह तआ़ला से मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं। 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह०'

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿267﴾ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلِظُّوْا بِيَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٤٩٩

267. हज़रत रबीआ़ बिन आ़मिर ﷺ से रिवायत है कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : दुआ में 'या ज़लजलालि वल इक्राम' के ज़रिए इसरार करो, यानी इस लफ़्ज़ को दुआ में बार-बार कहो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿268﴾ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْاَكْوَعِ الْاَسْلَمِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ دَعَا دُعَاءً اِلَّا اسْتَفْتَحَهُ بِسُبْحَانَ رَبِّىَ الْعَلِىِّ الْاَعْلَى الْوَهَّابِ.

رواه احمد والطبراني بنحوه، وفيه: عمر بن راشد اليمامي وثقه غير واحد وبقية رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٢٤٠

268. हज़रत सलमा बिन अक्वा असलमी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को कोई ऐसी दुआ करते हुए नहीं सुना जिस दुआ के शुरू में

कलिमों से शुरू न फ़रमाते हों, यानी हर दुआ के शुरू में आप ﷺ ये कलिमे फ़रमाते 'सुब्-हा-न रब्बियल अलीयल आलल वह्हाब' 'मेरा रब सब ऐबों से पाक है, सबसे बुलन्द, सबसे ज़्यादा देने वाला है।' (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾269﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سَمِعَ رَجُلًا يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ أَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ فَقَالَ: لَقَدْ سَأَلْتَ اللهَ بِالْإِسْمِ الَّذِيْ إِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطٰى وَإِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ. رواه ابوداؤد، باب الدعاء، رقم: ١٤٩٣

269. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स को यह दुआ करते सुना तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने अल्लाह तआला से इस नाम के ज़रिए से सवाल किया है जिसके वास्ते से कुछ भी मांगा जाता है वह अता फ़रमाते हैं और जो दुआ भी की जाती है वह उसे क़ुबूल फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आप से इस बात का वास्ता देकर सवाल करता हूं कि मैं गवाही देता हूं कि बेशक आप ही अल्लाह हैं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है,आप अकेले हैं, बेनियाज़ हैं, सब आप की ज़ात के मुहताज हैं जिस ज़ात से न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उनके बराबर का है। (अबूदाऊद)

﴾270﴿ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِسْمُ اللهِ الْأَعْظَمُ فِيْ هَاتَيْنِ الْآيَتَيْنِ ﴿وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾ [البقرة: ١٦٣] وَفَاتِحَةُ آلِ عِمْرَانَ ﴿الٓمٓ اللهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ [آل عمران: ٢،١] رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب في ايجاب الدعاء بتقديم الحمد والثناء، رقم: ٣٤٧٨

270. हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्मे आज़म इन दो आयतों में है : सूरः बक़रः की आयत और सूरः आले इमरान की पहली आयत। (तिर्मिज़ी)

﴾271﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ حَلْقَةٍ وَرَجُلٌ قَائِمٌ يُصَلِّيْ فَلَمَّا رَكَعَ وَسَجَدَ تَشَهَّدَ وَدَعَا فَقَالَ فِيْ دُعَائِهِ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ بَدِيْعُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ، يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ